शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा शिक्षण प्रभावशीलता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ सहसम्बन्ध का अध्ययन

A Study of teacher's attitude towards teaching and teaching effectiveness and their correlation with student's achievement

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा
की डाक्टर आफ फिलॉस्फी
(शिक्षा) की उपाधि हेतु प्रस्तुत
शिक्षा संकाय

शोध प्रबन्ध

शोधार्थी
गरिमा गौतम

शोध पर्यवेक्षक
डॉ. श्रीकान्त भारतीय
सह-आचार्य
जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर
शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय
सकतपुरा, कोटा (राज.)

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राजस्थान)
2018

डॉ0 श्रीकान्त भारतीय,
(शोध पर्यवेक्षक)
सह–आचार्य,
जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर
शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
सकतपुरा, कोटा (राजस्थान)

प्रमाण पत्र

मुझे यह प्रमाणित करतें हुए प्रसन्नता है कि शोध प्रबन्ध ''***शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा शिक्षण प्रभावशीलता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ सहसम्बन्ध का अध्ययन***'' शोधार्थी गरिमा गौतम ने कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राजस्थान) के पीएच.डी. के नियमों के अनुसार निम्नलिखित आवश्यकताओं के साथ पूर्ण किया है–

1. शोधार्थी ने विश्वविद्यालय के नियमानुसार कोर्स वर्क किया है।
2. शोधार्थी ने विश्वविद्यालय के 200 दिन के आवासीय आवश्यकता नियम को पूरा किया है।
3. शोधार्थी ने नियमित रूप से अपना कार्य प्रगति प्रतिवेदन दिया है।
4. शोधार्थी ने विभाग एवं संस्था के समक्ष अपना शोध कार्य प्रस्तुत किया है।
5. शोधार्थी का बताई गई शोध पत्रिका में शोध पत्र का प्रकाशन हुआ है।

मै इस शोध प्रबन्ध को कोटा विश्वविद्यालय, कोटा की पीएच.डी.(शिक्षा) उपाधि हेतु मूल्यांकनार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति देता हूँ।

दिनांक

डॉ0 श्रीकान्त भारतीय,
(शोध पर्यवेक्षक)

शोध सार

''धर्मार्थकाम मोक्षाणां यस्यैकोऽपि न विद्यते।
अजागलस्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम्।।''

महाभारत

शोध सार

1.1 ***समस्या कथन*** :–

"शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा शिक्षण प्रभावशीलता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।"

1.2 ***शोध के उद्देश्य*** :–

1. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।
2. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।
3. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन ।
4. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन ।
5. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन ।
6. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।
7. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।
8. निजी विद्यालया के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।
9. राजकीय एवं निजी विद्यालया के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।
10. राजकीय एवं निजी विद्यालया को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।

11. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

12. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

13. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन।

14. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन।

15. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

16. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

17. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

18. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

19. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

20. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

21. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

22. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

23. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

24. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

25. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

26. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

27. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

28. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

29. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

30. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

1.3 *शोध परिकल्पना :–*

1. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
5. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।
6. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।
7. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।
8. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।
9. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि मे सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

10. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

11. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण क प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

12. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

13. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

14. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

15. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

16. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

17. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

18. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

19. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

20. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

1.4 *सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन :–*

शोध से सम्बंधित साहित्य अध्ययन को तीन वर्गो में विभाजित किया गया है :–

1. शैक्षिक अभिवृत्ति से सम्बन्धित साहित्य अध्ययन,
2. शिक्षण प्रभावशीलता से सम्बन्धित साहित्य अध्ययन,
3. शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित साहित्य अध्ययन।

शोध से सम्बंधित साहित्य अध्ययन–

1.5 *शोध अध्ययन हेतु चयनित उपकरण :–*

शोध अध्ययन हेतु निम्नलिखित शोध उपकरणों का उपयोग किया गया है :–

1. ***शिक्षक अभिवृत्ति परीक्षण*** :– डॉ. जयप्रकाश, डॉ. आर.पी. श्रीवास्तव, डॉ. एस.डी. कपूर।
2. ***शिक्षक प्रभावशीलता मापनी*** :– डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. डी.एन. मूथा।
3. शैक्षिक उपलब्धि हेतु कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षा की अंकतालिका के आधार पर दत्तों का संग्रह किया गया है।

1.6 *शोध परिसीमन :–*

1. शोध अध्ययन राजस्थान के कोटा जिले तक ही सीमित रखा गया है।
2. शोध अध्ययन हेतु राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम का चयन किया गया है।

3. शोध अध्ययन हेत, राजकीय विद्यालय एवं निजी विद्यालयों का चयन किया गया है।

4. शोध अध्ययन हेतु कक्षा दसवीं में अध्ययनरत विघार्थियों का चयन किया गया है।

5. शोध अध्ययन हेतु कोटा जिले के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

1.7 *शोध विधि :–*

1. ***सर्वेक्षण*** :–

सर्वेक्षण का अर्थ है 'ऊपर से देखना' अथवा निरीक्षण करना है। सर्वेक्षण विधि की सहायता से अनेक समस्याओं का अध्ययन ही नहीं किया जाता है, बल्कि समस्याओं का समाधान ढूँढने का भी प्रयास किया जाता है। इसलिए शोधार्थी ने शोध अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

2. ***जनसंख्या*** :–

शोध अध्ययन हेतु जनसंख्या में एक विशिष्ट समूह के समस्त व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है। शोध अध्ययन हेतु जनसंख्या के रूप में राजस्थान के कोटा जिले के विभिन्न राजकीय व निजी विद्यालयों क शिक्षकों व विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

3. ***न्यादर्श*** :–

न्यादर्श के बिना शोध कार्य को पूर्ण नहीं किया जा सकता है। न्यादर्श प्रविधि शोध कार्य को व्यावहारिक तथा समय, धन, शक्ति की दृष्टि से मितव्ययी बना देती है।

(i) न्यादर्श के रूप में कुल 20 राजकीय व निजी विद्यालयों का चयन किया गया है।

(ii) न्यादर्श के रूप में राजकीय व निजी विद्यालयों के 100 शिक्षकों का चयन किया गया है।

(iii) न्यादर्श हेतु राजकीय व निजी विद्यालयों के कक्षा दसवीं में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

(iv) प्रस्तुत अध्ययन के लिए शोधार्थी द्वारा यादृच्छिक विधि की लॉटरी प्रविधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया है।

4. ***विश्लेषण प्रक्रिया*** :–

शोध उपकरण से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकी का उपयोग किया गया है।

(i) मध्यमान,

(ii) मानक विचलन,

(iii) टी परीक्षण,

(iv) सह–सम्बन्ध।

1.8 *शोध अध्ययन के निष्कर्ष :–*

शिक्षक आज मात्र छात्रों के शैक्षिक विकास के लिए ही जिम्मेदार नहीं माने जाते हैं, बल्कि उन पर उनके सर्वांगीण विकास का दायित्व होता है। अधिगमकर्त्ताओं की रूचि, अभिवृत्ति, आकांक्षा, आवश्यकता, अभिक्षमता, बौद्धिक योग्यता, वैयक्तिक विभिन्नता आदि के परिपेक्ष्य में उन्हें शिक्षित करने का प्रयास करना उनका दायित्व माना जाता है ताकि अन्तर्निहित क्षमताओं का पूर्ण विकास सम्भव हो सके। इसलिए शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति होनी चाहिए।

1. राजकीय एवं निजी विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।
2. राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।
3. निजी विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।
4. राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षको को शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।
5. राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओ की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।
6. राजकीय एवं निजी विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।
7. राजकीय विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।
8. निजी विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।
9. राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।
10. राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओ की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।
11. परिकल्पना–1 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।
12. परिकल्पना–2 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।

13. परिकल्पना–3 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है।

14. परिकल्पना–4 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाआं की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है।

15. परिकल्पना–5 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

16. परिकल्पना–6 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

17. परिकल्पना–7 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

18. परिकल्पना–8 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

19. परिकल्पना–9 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

20. परिकल्पना–10 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

21. परिकल्पना–11 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

22. परिकल्पना–12 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है।

23. परिकल्पना–13 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

24. परिकल्पना–14 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

25. परिकल्पना–15 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

26. परिकल्पना–16 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

27. परिकल्पना–17 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में निम्न ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है।

28. परिकल्पना–18 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध है।

29. परिकल्पना–19 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

30. परिकल्पना–20 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है।

शिक्षक ही समाज के लिए पथ–प्रदर्शक के रूप, में आदर्श के रूप में और एक अनुकरणीय व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार किये जाते हैं। शिक्षक छात्रों के शैक्षिक विकास के लिए ही जिम्मेदार नहीं माने जाते, बल्कि उन पर उनके सर्वांगीण विकास का दायित्व होता है। अतः शिक्षकों का प्रभावशाली होना चाहिए।

घोषणा–पत्र (शोधार्थी)

मै घोषणा करती हूँ कि शोध–प्रबन्ध ***''शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा शिक्षण प्रभावशीलता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ सहसम्बन्ध का अध्ययन'*** में जो शोधकार्य मेरे द्वारा प्रस्तुत किया गया है, वह पीएच.डी. (शिक्षा) उपाधी के लिये आवश्यक है। मैने यह शोधकार्य डॉ0 श्रीकान्त भारतीय, सह–आचार्य, जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सकतपुरा, कोटा (राजस्थान) के निर्देशन में पूर्ण किया है। यह मेरा मौलिक कार्य है। मैने अपने विचारों को अपने शब्दों में प्रस्तुत किया है और जहाँ दूसरे विचारों और शब्दों का प्रयोग किया गया है, वे मेरे द्वारा विभिन्न मान्य स्त्रोतों से लिये गये हैं। अपरिहार्य स्थिति में ली गई ऐसी हर सामग्री का यथास्थान सन्दर्भ एवं आभार व्यक्त कर दिया गया है। जो कार्य इस शोध प्रबन्ध में प्रस्तुत किया गया है, वह कहीं और किसी और डिग्री के लिए किसी भी संस्था में प्रस्तुत नहीं किया गया है।

मैं यह भी घोषणा करती हूँ कि मैने विश्वविद्यालय के सभी अकादमिक नियमों का निष्ठा एवं ईमानदारी से पालन किया है तथा किसी तथ्य को गलत प्रस्तुत नहीं किया है। मैं समझती ह् कि किसी भी नियम का उल्लंधन करने पर मेरे खिलाफ प्रशासनिक कार्यवाही की जा सकती है और मेरे खिलाफ जुर्माना भी लगाया जा सकता है। यदि मैने किसी स्त्रोत से बिना, उसका नाम दर्शाये या जिस स्त्रोत से अनुमति की आवश्यकता हो, बिना अनुमति के लिया हो।

दिनांक *गरिमा गौतम*

(शोधार्थी)

प्रमाणित किया जाता है कि शोधार्थी गरिमा गौतम (No.6/Res/UOK/2015/1531-32/3-12-15) द्वारा उपर्युक्त सभी सूचनायें मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

दिनांक डॉ0 श्रीकान्त भारतीय,

(शोध पर्यवेक्षक)

पीएच.डी. उपाधि हेतु शोध प्रबन्ध का अनुमोदन

यह शोध प्रबन्ध ***''शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा शिक्षण प्रभावशीलता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ सहसम्बन्ध का अध्ययन''*** शोधार्थी गरिमा गौतम (No.6/Res/UOK/2015/1531-32/3-12-15) कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राजस्थान) द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इसे पीएच.डी. (शिक्षा) उपाधि के लिए अनुमोदित किया जाता है।

दिनांकः परीक्षक

स्थान :

शोध पर्यवेक्षक

आभार पुष्प

प्रस्तुत अध्ययन ''शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा शिक्षण प्रभावशीलता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ सहसम्बन्ध का अध्ययन'' के लेखन एवं उसे विधिवत् ढंग से सम्पन्न करने में आने वाली व्यावहारिक कठिनाइयों को दूर करने में मुझे जिनसे अपेक्षित सहायता प्राप्त हुई उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं अपना पुनीत कर्तव्य समझती हूँ। मैं माँ सरस्वती को भी धन्यवाद अर्पित करती हूँ कि उन्होंने मुझे यह कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की।

''कार्य आपके प्रेरणा दिलायें, प्रगति का मार्ग प्रशस्त करायें।
पथ–प्रदर्शक आप हमारे, आशिष आपका हमें सँवारे।।''

मैं श्रद्धेय, परम आदरणीय डॉ. श्रीकान्त भारतीय (एसोसिएट प्रोफेसर, जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सकतपुरा, कोटा) के प्रति हृदय से आभार प्रकट करती हूँ, जिनके निर्देशन में मुझे यह शोध प्रबन्ध कार्य पूर्ण करने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ है। आपका मधुर व्यवहार, अनुपम सहयोग, कुशल एवं विद्वत्तापूर्ण मार्गदर्शन व निर्देशन, सतत प्रेरणा, कठोर परिश्रम, हार्दिक स्नेह, वात्सल्य एवं अपनत्व भाव के फलस्वरूप ही यह शोध प्रबन्ध समय पर सम्पन्न हो पाया है। अतः मैं अपने परम पूज्य गुरू के प्रति नतमस्तक होकर कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। आपके द्वारा दिया गया अनुपम सहयोग, अमूल्य मार्गदर्शन एवं उच्च विचार मेरे जीवन को सदैव प्रकाश स्तम्भ की तरह आलोकित करते रहेंगे और भावी जीवन में उन्नति की ओर अग्रसर होने में प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

मैं कोटा विश्वविद्यालय, कोटा के प्रति हार्दिक आभार व धन्यवाद व्यक्त करती हूँ। मैं शोध केन्द्र जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सकतपुरा की प्राचार्या डॉ. सुषमा सिंह के प्रति भी हार्दिक आभार व धन्यवाद व्यक्त करती हूँ। मैं शोध केन्द्र की

पुस्तकालयाध्यक्ष श्रीमती मधुबाला शर्मा का भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने मुझे शोध कार्य के लिए सहयोग पदान किया।

मैं उन समस्त लेखकों, अनुसन्धानकर्ता एवं शिक्षाविदों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ जिनकी कृतियाँ एवं लेख प्रस्तुत शोध प्रबंध के आधार ग्रंथ एवं पुस्तकों के रूप में प्रयुक्त हुए हैं, जिनसे प्रस्तुत शोध प्रबंध के लेखन के समय मुझे प्रेरणा, प्रोत्साहन और अन्य प्रकार का सहयोग प्राप्त हुआ। मैं उन सभी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों, अध्यापकों एवं विद्यार्थियों को भी धन्यवाद देती हूँ जिनके पूर्ण सहयोग से मैं यह शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करने में सफल हो सकी।

मैं अपने ताऊजी श्रीयुत ब्रजमोहनजी शर्मा, पूर्व उपनिदेशक–शिक्षा तथा अपने पिता श्री कैलाश चन्द्र गौतम व माता श्रीमती दीपिका गौतम का भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके आशीर्वाद के बिना यह शोध कार्य पूर्ण होना सम्भव नहीं था। मैं अपनी भगिनी श्रीमती जिज्ञासा एवं सुश्री योग्या गौतम का भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने समय समय पर अपना सहयोग दिया। मैं अपने जीवन साथी श्री अनिल जी का भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने समय समय पर अपना सहयोग दिया।

मैं प्रस्तुत शोध अध्ययन के टंकण एवं उसे सुव्यवस्थित स्वरूप प्रदान करने में श्री मधुसूदन, श्री राकेश और श्री रविन्द्र के प्रति भो आभर व्यक्त करती हूँ, जिनके अथक परिश्रम से यह कार्य शीध्र सम्पन्न हो सका।

गरिमा गौतम

अनुक्रमणिका

''नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः''

महाभारत

अनुक्रमणिका

क्रस	विषय	पृष्ठ संख्या
i	**प्रमाण पत्र**	i
ii	**शोध सार**	ii
iii	**घोषणा पत्र (शोधार्थी)**	xvi
iv	**पीएच.डी उपाधि हेतु शोध प्रबन्ध का अनुमोदन**	xvii
v	**आभार–पुष्प**	xviii

1	**संक्षेप**	**1–2**
1.0	**अध्याय–प्रथमः शोध अध्ययन की पृष्ठभूमि**	**3–24**
1.1	प्रस्तावना	**3**
1.2	शोध अध्ययन का महत्व	**9**
1.3	समस्या कथन	12
1.4	शोध के उद्देश्य	12
1.5	शोध परिकल्पना	16
1.6	तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण	18
1.7	शोध परिसीमन	20
1.8	शोध विधि	20
1.9	शोध अध्ययन का प्रारूप	22
1.10	सार	23

2.0	**अध्याय–द्वितीयः सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन**	**25–72**
2.1	प्रस्तावना	25
2.2	सम्बन्धित साहित्य का अर्थ एवं परिभाषा	25
2.3	सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के लाभ	28
2.4	सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के उद्देश्य	30

2.5	सम्बन्धित साहित्य का अभिज्ञान	31
2.6	सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन का महत्व	32
2.7	सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन की उपादेयता	33
2.8	सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं के स्त्रोत	34
2.9	शोध से सम्बन्धित साहित्य अध्ययन	36
क्रस	**विषय**	**पृष्ठ संख्या**
2.10	शैक्षिक अभिवृत्ति से सम्बन्धित साहित्य अध्ययन	36
2.11	शिक्षण प्रभावशीलता से सम्बंधित साहित्य अध्ययन	48
2.12	शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन	61
2.13	सार	72

क्रस	**विषय**	**पृष्ठ संख्या**
3.0	**अध्याय–तृतीयः शोध अध्ययन की विधि एवं प्रक्रिया**	**73–107**
3.1	प्रस्तावना	73
3.2	शोध विधि	74
3.3	शोध विधि चयन का औचित्य	75
3.4	शोध विधि के प्रकार	76
3.5	सर्वेक्षण विधि का अर्थ	77
3.6	सर्वेक्षण विधि की विशेषताएँ	78
3.7	सर्वेक्षण विधि के उद्देश्य	79
3.8	सर्वेक्षण विधि का कार्यक्षेत्र	79
3.9	सर्वेक्षण विधि के चयन का औचित्य एवं महत्व	80
3.10	जनसंख्या एवं न्यादर्श	81
3.11	शोध अध्ययन हेतु जनसंख्या	81
3.12	न्यादर्श की अवधारणा	82
3.13	न्यादर्श चयन की आवश्यकता	83
3.14	न्यादर्श की विशेषताऐं	85
3.15	न्यादर्श के विभिन्न चरण	86

3.16	न्यादर्श की उपयोगिता	87
3.17	न्यादर्श चयन की विधियाँ	87
3.18	लाटरी विधि	89
3.19	लाटरी विधि की विशेषताऐं	89
3.20	शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श	90
3.21	शोध उपकरण का सम्प्रत्यय	93
3.22	शोध उपकरणों के प्रकार	94
3.23	अनुसंधान में उपकरण का महत्व	95
3.24	मानकीकृत उपकरण	95
3.25	शोध अध्ययन हेतु चयनित उपकरण	96
क्रस	**विषय**	**पृष्ठ संख्या**
3.26	Teaching Aptitude Test	96
3.27	Teachers Effectiveness Scale	100
3.28	सांख्यिकी	103
3.29	सार	107

क्रस	**विषय**	**पृष्ठ संख्या**
4.0	**अध्याय–चतुर्थः दत्त संकलन, विश्लेषण और व्याख्या**	**108–178**
4.1	प्रस्तावना	108
4.2	दत्त संकलन	108
4.3	न्यादर्श व शोध उपकरण	110
4.4	दत्त विश्लेषण	111
4.5	शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के दत्तों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या	114
4.6	शिक्षण प्रभावशीलता के दत्तों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या	124
4.7	चरों की तुलना एवं सहसम्बन्ध	134
4.8	सार	178

5.0	**अध्याय पंचमः शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव**	**179–197**

5.1	शोध सारांश	179
5.2	समस्या कथन	180
5.3	शोध के उद्देश्य	180
5.4	शोध परिकल्पना	183
5.5	शोध अध्ययन हेतु चयनित उपकरण	186
5.6	शोध परिसीमन	186
5.7	शोध विधि	187
5.8	शोध अध्ययन के निष्कर्ष	188
5.9	शोध के शैक्षिक निहितार्थ	194
5.10	भावी शोध हेतु सुझाव	195
5.11	सार	197

क्रस	**विषय**	**पृष्ठ संख्या**
1	शोध निष्कर्ष	198—202
2	शोध सारांश	203—218
3	संदर्भ ग्रन्थ सूची	219—227

क्रस	**विषय—परिशिष्ट**	**पृष्ठ संख्या**
1	Teaching Aptitude Test	228—241
2	Teachers Effectiveness Scale	242—248

क्रस	**विषय—प्रस्तुतीकरण**	**पृष्ठ संख्या**

1	राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों में अतिरिक्त कार्यभार का शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता व शिक्षण अभिवृत्ति पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन	249–277
2	A study of effectiveness in teaching among male and female teachers of higher secondary schools and its relation with students' achievement	278–300

क्रस	विषय–सारणी	पृष्ठ संख्या
1	राजकीय विद्यालय की सूची	91
2	निजी विद्यालय की सूची	92
3	न्यादर्श–शिक्षक	93
4	न्यादर्श–विद्यार्थी	93
5	शिक्षण अभिवृत्ति परीक्षण के मानक अंक एवं श्रेणियाँ	100
6	शिक्षण प्रभावशीलता मापनी का मध्यमान व मानक विचलन	101
7	शिक्षण प्रभावशीलता मापनी की विश्वसनीयता	102

8	शिक्षण प्रभावशीलता मापनी के मानक	102
9	राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान व मानक विचलन	114
10	राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान व मानक विचलन	116
11	निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान व मानक विचलन	118
12	राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान व मानक विचलन	120
13	राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान व मानक विचलन	122
14	राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान व मानक विचलन	124
15	राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान व मानक विचलन	126
16	निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान एवं मानक विचलन	128
17	राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान एवं मानक विचलन	130
18	राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान एवं मानक विचलन	132
19	राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन	134
20	राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन	137
क्रस	**विषय–सारणी**	**पृष्ठ संख्या**
21	राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान, मानक विचलन	140
22	राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान, मानक विचलन	143
23	राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध	146

24	राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध	148
25	निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध	150
26	निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध	152
27	राजकीय एवं निजी विद्यालयों विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध	154
28	राजकीय एवं निजी विद्यालयों विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध	156
29	राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध	158
30	राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध	160
31	राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह सम्बन्ध	162
32	राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह सम्बन्ध	164
33	निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध	166
34	निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध	168
35	राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध	170
36	राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध	172
37	राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध	174
38	राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध	176
क्रस	**विषय–आरेख**	**पृष्ठ संख्या**
1	राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन	136

2	राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन	138
3	राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान, मानक विचलन	141
4	राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान, मानक विचलन	144
5	शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं उच्च–निम्न शैक्षिक उपलब्धि मे सह–सम्बन्ध	147
6	शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं उच्च–निम्न शैक्षिक उपलब्धि मे सह–सम्बन्ध	155
7	शिक्षण प्रभावशिलता एवं उच्च–निम्न शैक्षिक उपलब्धि मे सह–सम्बन्ध	163
8	शिक्षण प्रभावशिलता एवं उच्च–निम्न शैक्षिक उपलब्धि मे सह–सम्बन्ध	171

संक्षेप

धर्मार्थ–काम–मोक्षाणां प्राणाः संस्थिति हेतव।
तन्निघ्नता किं न हतं रक्षता किं न रक्षितम्।।

महाभारत

संक्षेप

क्र.सं.	संक्षेप	पद
1	M	मध्यमान
2	N	समूह संख्या
3	AM	कल्पित माध्य
4	d	कल्पित माध्य से विचलन।
5	f	आवृत्ति
6	fd	आवृत्ति विचलन का गुणनफल।
7	i	वर्ग अन्तराल
8	SD	मानक विचलन।
9	$\sum fd^2$	आवृत्ति विचलन वर्ग का गुणनफल।
10	t	टी–टेस्ट
11	M_1	प्रथम समूह का मध्यमान।
12	M_2	द्वितीय समूह का मध्यमान।
13	SD_1^2	प्रथम समूह के मानक विचलन का वर्ग।
14	SD_2^2	द्वितीय समूह के मानक विचलन का वर्ग।
15	N_1	प्रथम समूह की संख्या।
16	N_2	द्वितीय समूह की संख्या।
17	r	सह–सम्बन्ध।
18	$\sum XY$	X और Y पदमालाओं के अलग–अलग विचलनों के गुणनफल का योग।
19	$\sum X^2$	X पदमालाओं के अलग–अलग प्राप्तांकों का मध्यमान से विचलन के वर्गो का योग।
20	$\sum Y^2$	Y पदमालाओं के अलग–अलग प्राप्तांकों का मध्यमान से विचलन के वर्गो का योग।

संक्षेप

क्र.सं.	संक्षेप	पद

21	df	स्वतंत्रता का अंश।
22	RPSC	राजस्थान लोक सेवा आयोग
23	JRN	जर्नादन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड विश्वविद्यालय
24	NCERT	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
25	NPE	राष्ट्रीय शिक्षा नीति
26	TAT	शिक्षण अभिवृति परिक्षण
27	TES	शिक्षण प्रभावशिलता परिक्षण
28	CR	क्रान्तिक अनुपात

अध्याय—प्रथम
शोध अध्ययन की पृष्ठभूमि

''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्तवकर्मणि।।
''संन्यासः, कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ।
तयोऽस्तु कर्मसन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते।।''

महाभारत

अध्याय–प्रथम
शोध अध्ययन की पृष्ठभूमि

1.1 ***प्रस्तावना*** :–

"Education means enabling the mind to find out the ultimate truth making its own and giving experession to it." – **Tagore**

जन्म के समय मानव पशु–पक्षियों से भी अधिक असहाय होता है। वह पर्याप्त अवधि तक अपने माता–पिता पर आश्रित रहता है। अतः यह कहा जा सकता है कि मानव के लिए जन्म से ही शिक्षा की आवश्यकता होती है। ***जॉन लॉक*** के शब्दों में–''पौधों का विकास कृषि द्वारा एवं मनुष्य का विकास शिक्षा द्वारा हाता है।''

मानवीय वातावरण केवल भौतिक सीमा तक ही सीमित नहीं है, अपितु उसका मानसिक, आत्मिक तथा सामाजिक वातावरण भी है। अतः वातावरण मनुष्य को और समृद्ध बना सकता है। यह शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है, क्योंकि सभी प्राणियों में मानव जाति को ही शिक्षा की अधिक आवश्यकता होती है। मानव जीवन का उद्देश्य स्वयं को समृद्ध एवं सुखी बनाते हुए समाज, राष्ट्र एवं संस्कृति को विकसित एवं अक्षुण्ण बनाना है। इस आधार पर मानव अन्य जीवधारियों से भिन्न है। मानव विवेकशील है, अतः उसके जीवन की शैली कुछ वैशिष्ट्य लिये हुए है। निम्नांकित ***श्लोक*** इसे स्पष्ट करता है–

''आहार निन्द्राभयमैथुनं च समान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषः धर्मेणहीनाः पशुभिः समानाः।''

अर्थात् आहार, नींद, काम–भावना सभी जीवधारियों में पायी जाती है, परन्तु धर्म मानव के लिये विशेष हैं। इसके बिना मानव भी पशु के समान है। धर्म के दस ***लक्षण*** हैं– धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, इन्द्रिय–निग्रह, धी, शौच, विद्या, सत्य एवं अक्रोध। ये दस लक्षण मानव के व्यवहार, आचरण, कर्त्तव्य एवं चिन्तन में क्रमशः परिवर्तन लाते हैं।

मानव–धर्म का पालन करने की क्षमता शिक्षा के माध्यम से ही उत्पन्न की जा सकती है। शिक्षा के द्वारा ही मानवीय नैसर्गिक शक्तियों का विकास होता है तथा

मानव स्व–धर्म पालन करने में समर्थ हो पाता है। ***रॉबर्ट*** के शब्दों में–''जीवित रहने की प्रवृत्ति सब प्राणियों की है। मनुष्य भी इस सम्बन्ध में उस श्रेणी से बाहर नहीं ह। मनुष्य होने के नाते उसमें और भी प्रवृत्तियाँ होती हैं, जो उसे जीवित रहने के लिए ही नहीं बल्कि दूसरों की सेवा करने के लिए भी प्रेरित करती हैं। इसलिये मनुष्य को सर्वाधिक रूप में शिक्षा की आवश्यकता होती है''।

शिक्षा सीखना नहीं है, वरन् मस्तिष्क की शक्तियों के अभ्यास और विकास का नाम ही शिक्षा है। साधारण बोलचाल में शिक्षा का अर्थ विद्यालयी शिक्षा से लिया जाता है। बालक के भावी जीवन की तैयारी तथा दायित्व निभाने की क्षमता प्रदान करना शिक्षा का उद्देश्य समझा जाता है।

स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में –''हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है, जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।''

जी.एच. थॉमसन के शब्दों में –''शिक्षा एक प्रकार का वातावरण है, जिसका प्रभाव व्यक्ति के व्यवहार की आदतों, चिन्तन और दृष्टिकोण पर स्थायी रूप में परिवर्तन करने के लिए डाला जाता हैं''।

जे.एम. मैकेन्जी के शब्दों में,''शिक्षा से तात्पर्य हमारी शक्तियों के विकास अथवा संवर्द्धन करने के लिए चेतनापूर्ण प्रयासों से है''।

समग्र दृष्टि से शिक्षा का अर्थ उन सभी अनुभवों से है, जो बालक विभिन्न परिस्थितियों से अर्जित करता है। इसके अनुसार शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। बालक को प्राकृतिक वातावरण के साथ अनुकूलन करना पड़ता है। थोड़ी आयु बढ़ने के साथ वह अनुभव अर्जित करता है। इस प्रकार अर्जित अनुभव ही शिक्षा है। सीखने और सिखाने की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। व्यापक दृष्टि में शिक्षा के अनुसार हर व्यक्ति शिक्षक और शिष्य दोनों ही है। शिक्षा के अर्थ को स्पष्ट करते हुए प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री ***टी. रेमण्ट*** के शब्दों में ''शिक्षा विकास का वह क्रम है, जो बाल्यावस्था से परिपक्वावस्था तक चलता है तथा जिसमें मनुष्य अपने आपको आवश्यकतानुसार धीरे–धीरे भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल बना लेता है।'' इस प्रकार अर्जित अनुभवों के आधार पर अपने को विभिन्न वातावरणों के साथ अनुकूल करने की क्षमता का विकास करना ही शिक्षा है।

शिक्षाशास्त्रियों के कथनों से स्पष्ट है कि शिक्षा केवल घर या विद्यालय तक ही सीमित नहीं है। शिक्षा का क्षेत्र विस्तृत है। सिखाने वाली प्रत्येक परिस्थिति या स्थान विद्यालय है तथा सिखाने वाला प्रत्येक व्यक्ति शिक्षक है, और जिनको वह सिखाता है, वे सभी शिष्य है। शिक्षण के लिए अध्यापक का होना परमावश्यक है। अध्यापक का शिक्षा के प्रशिक्षण में दक्ष होना, उसकी अनिवार्य आवश्यकता है। एक अध्यापक को शिक्षा देने के लिए शिक्षा के तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता शिक्षण कार्य को प्रभावी बना सकती है।

ब्रूबेकर के अनुसार, '' शिक्षण उन स्थितियों की व्यवस्था एवं निर्माण है, जिनमें कुछ अन्तराल तथा बाधाएं हैं, जिनका किसी व्यक्ति को सामना करना पड़ता है, उसके करने से वह कुछ सीखेगा।''

ब्रूबेकर की परिभाषा से शिक्षण का मुक्तात्मक स्वरूप स्पष्ट होता है। मुक्तात्मक शिक्षण के अन्तर्गत शिक्षक को प्रमुखता प्रदान की जाती है। आज की शैक्षिक परम्परा में यह सारी प्रक्रिया शिक्षक के द्वारा निर्वहन की जा रही है, अर्थात् शिक्षक के बिना यथोचित शिक्षा की परिकल्पना संभव प्रतीत नहीं होती है। शिक्षक का व्यक्तित्व शिक्षण को प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जैसे–विषय पर उसका अधिकार, छात्रों के लिए मृदुल व्यवहार, ऊँची आवाज, निष्पक्षता, चरित्र तथा उसकी योग्यता की छाप बालक पर पड़े बिना नहीं रहती हैं।

शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक का स्वयं का व्यक्तित्व आकर्षक हो। शिक्षार्थी का शिक्षण बिन्दु के प्रति झुकाव, उसके उद्देश्य को पूर्णतः समझना, विषय–वस्तु की उपयुक्तता एवं सरलता, पाठ–योजना का निर्माण, सहायक सामग्री का उचित प्रयोग, कक्षा वातावरण की उपयुक्तता, भौतिक सुविधाएँ, विद्यार्थी तथा अध्यापक का मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य, अभिप्रेरणा जागृत करने की पद्धति, जिससे छात्र तथा अध्यापक दोनों में आत्मविश्वास तथा आत्मानुभूति हो आदि शिक्षण के ही प्रभावकारी तत्त्व हैं। शिक्षक को सदैव उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर शिक्षण करना चाहिए।

यदि शिक्षक आधारभूत शिक्षण कला में निपुण नहीं है तो वह छात्रों का उचित मार्ग–दर्शन करने और उनमें वांछित परिवर्तन लाने में सफल नहीं हो सकता है। शिक्षक को शिक्षण कला में निपुण होने के लिये शिक्षण कार्य के समय शिक्षक

द्वारा प्रतिपादित व्यवहारों की जानकारी करके उनका अभ्यास करना नितान्त आवश्यक है। प्रभावशाली शिक्षण के विभिन्न शिक्षण कौशलों का ज्ञान तथा उसकी पहचान करना एक कुशल शिक्षक के लिए महत्वपूर्ण कार्य है। इस सम्बन्ध में अनेक विद्वानों ने शिक्षण प्रभावशीलता तथा शिक्षण के कौशलों का अध्ययन किया है।

शिक्षक ही विद्यालय तथा शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति है। अतः यह कहा जा सकता है कि मानव, समाज एवं देश की उन्नति शिक्षकों पर निर्भर करती है। अपने कार्य के प्रति समर्पण भाव ने ही शिक्षक को ईश्वर के समकक्ष बल्कि उससे भी श्रेष्ठ स्थान प्रदान किया है। गुरू की महिमा में यह कहा गया है कि :—

"गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागं् पाय ।
बलिहारी गुरू आपकी, जिन गोविन्द दियो बताय ।।"

उक्त पंक्ति के अनुसार गुरू के बिना ईश्वर का दर्शन असम्भव है, अतः गुरू ही ईश्वर (लक्ष्य) तक हमें पहुँचा सकता है और ईश्वर तक पहुँचाने वाला अथवा मार्ग दिखाने वाला गुरू ही है, इसलिये मुझे पहले गुरू को ही प्रणाम करना चाहिए। यदि गुरू की कृपा हो गई तो लक्ष्य तो सहज ही प्राप्त हो जावेगा। विद्यार्थी तो अबोध एवं मासूम होता है। इसलिये शिक्षक ही अपनी मनचाहो इबारत लिखने में पूर्ण स्वतन्त्र एवं सक्षम होता है। इसलिए यह कहा गया है कि :—

"जाका गुरू भी अंधला, चेला खरा निरंध ।
अंधै अंधा ढेलिंया, दून्यूं कूप पड़न्त ।।"

जिस विद्यार्थी का शिक्षक ही अंधा है, अज्ञानी है एवं विद्यार्थी भी पूर्णरूपेण अंधा है, मूढ़ है तो वे दोनों लक्ष्य तक नहीं पहंुच सकेंगे। अंधा अंधे को क्या ज्ञान देगा, वह तो अज्ञानता के कुमार्ग पर ही बढ़ायेगा। परिणाम यह होगा कि दोनों ही अंध कूप में गिर पड़ेंगे। अतः शिक्षक विद्यार्थी के मार्गान्तरीकरण में मुख्य भूमिका निभाता है। जिस प्रकार गंध रहित टेसू के फूल अपने रंग से चमत्कार भले ही पैदा कर दें किन्तु मनुष्य को आनन्दित नहीं कर पाते हैं। उसी प्रकार शिक्षक की शिक्षण म अभिवृत्ति व प्रभावशीलता का महत्व होता है। शिक्षकों की शिक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विद्यार्थी को उन्नत बनाती है। शिक्षक सकारात्मक अभिवृत्ति के द्वारा ही विद्यार्थी के अन्तर्मन की जिज्ञासा को शान्त कर पाता है। शिक्षकों की

शिक्षण के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति विद्यार्थियो के जीवन पर दुष्प्रभाव डालती है, और इस कारण से विद्यार्थी कुण्ठाओं से ग्रस्त हो जाता है। जब तक शिक्षक का शिक्षण एवं विषयवस्तु के सम्प्रेषण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण नहीं होता है, तब तक शिक्षण स्वाभाविक एवं प्रभावी नहीं हो पाता है। शिक्षण मात्र विषय का सम्प्रेषण ही नहीं है, अपितु वह छात्र के अन्तर्मन में उस विषयवस्तु के प्रति एक चिन्तन परम्परा को जन्म देता है, उसमें रूचि व एकाग्रता का भाव जगाता है एवं विषय वस्तु के प्रति नवीन बौद्धिक स्फूर्ति को जन्म देता है। शिक्षक को सकारात्मक शिक्षण कौशल, उसका परिमार्जित चिन्तन एवं भाषा सौष्ठव, ये सब मिलकर उसके व्यक्तित्व को प्रभावी बना देते हैं।

विद्यार्थी जब एक गरिमामय व्यवस्थित व्यक्तित्व वाले शिक्षक को सहज अपनत्व के साथ अध्यापन करते हुए देखता है, सुनता है तो उसके मन में शिक्षक के प्रति श्रद्धा का भाव जागृत होता है और य श्रद्धा ही है जो छात्र के मन–मस्तिष्क को एकाग्र कर विषय ग्रहण की क्षमता को कई गुना बढ़ा देती है। शिक्षक की सकारात्मक अभिवृत्ति, उसका प्रभावशाली व्यक्तित्व, विषयगत अध्ययन, छात्र के प्रति सद्भाव एवं अभिव्यक्ति कौशल, ये सब मिलकर शिक्षण को पंचामृत स्वाद प्रदान करते ह। शिक्षक का अप्रभावी व्यक्तित्व, उसकी उबाऊ अभिव्यक्ति शिक्षण के प्रति नकारात्मक स्थितियाँ, छात्र में सहज अधिगम उत्पन्न नहीं कर पाती हैं और छात्र को अपेक्षित उपलब्धियाँ प्राप्त नहीं होती हैं।

बालक के अन्तर्मन को समझना, उसके अनुरूप शिक्षण प्रक्रिया अपनाना, कक्षागत परिस्थितियों को अधिगम के अनुकूल बनाना एवं उनमें यथोचित परिवर्तन करना अध्ययन अधिगम को उन्नत स्तर प्रदान करता है। समस्याओं के कारण खोजना, उनका यथोचित समाधान करना एवं सकारात्मक उपलब्धि तक पहुँच पाना ही अनुसंधान है। अनुसंधान छात्रों को समझने, शिक्षण का प्रभावी बनाने एवं उपलब्धि को स्तर प्रदान करने में सहायक होता है। शिक्षक की शिक्षण अभिवृत्ति एवं शिक्षण प्रभावशीलता में निरंतर नवीनता के द्वारा ही यह संभव हो पाता है।

1.2 ***शोध अध्ययन का महत्व*** :–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य समाज में रहकर ही सीखता है तथा लक्ष्य प्राप्त करता है। लक्ष्य की प्राप्ति शिक्षा पर निर्भर करती है। शिक्षण कार्य समस्त कार्यो में पवित्रतम और परमावाश्यक माना जाता है। शिक्षण की प्रक्रिया निश्चित रूप से शिक्षक की शिक्षा पर निर्भर होती है। शिक्षक शिक्षा ही वह माध्यम है, जिसके द्वारा भावी शिक्षकगण निहित कौशल तथा तकनीकों से परिचित हो सकते हैं और उनमें दक्षतार्जन करते हुए अपेक्षित शिक्षण व्यवहारों को आत्मसात् करने में सक्षम हो पाते है।

भारत में प्राचीन काल से ही शिक्षकीय कार्य को बहुत आदर से देखा जाता रहा है। शिक्षकों का समाज मं बहुत सम्मान एवं आदर रहा है। उनका स्थान एवं पद ईश्वर के स्थान से उच्च माना गया है। इसीलिये उन्हें गुरू की संज्ञा दी गई। गुरू का अर्थ ज्ञानी अथवा ज्ञान का भण्डार रखने वाले। परन्तु समय के साथ–साथ एवं शिक्षा के क्षेत्र में हुए क्रांतिकारी परिवर्तन और विज्ञान के क्षेत्र मे अविस्मरणीय प्रगति ने शिक्षा जगत के गुरू की स्थिति में परिवर्तन ला दिया है। शिक्षकों के मूल्यों एवं भारतीय मूल्यों का स्थान भौतिकवादी मूल्य एवं परिवर्तित मूल्यों ने ले लिया। आज शिक्षण व्यवसाय, अन्य व्यवसाय के समान माना जाने लगा है। शिक्षक सेवक के समान लगने लगा है। इस कारण से शिक्षकों का समाज में वह गुरू जैसा सम्मान व स्थान नहीं रह गया है।

एक ओर आज समाज में शिक्षकों से वे हीं अपेक्षाएँ है, जो आदिकाल से चली आ रही है। उनसे वहीं प्राचीन मूल्यों की अपेक्षाएँ तथा आकांक्षाऐं आज भी अपेक्षित है। दूसरी ओर समाज, शिक्षकों के जीवन की सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं कार्य पद्धति की समस्याओं के नैदानिक पक्ष पर चिन्तन नहीं कर रहा है। इस कारण एक ओर भौतिकतावादी परिवेश एवं बदलते मूल्यों का पदार्पण तो दूसरी ओर नैतिक मूल्यों को बनाए रखने की जद्दोजिद में लगे शिक्षकों का अधिकार एवं उत्तरदायित्व असीमित हो गया है। ऐसी परिस्थिति के कारण शिक्षकों का समायाजन प्रभावित हुए बिना नहीं है। आज भी शिक्षक समाज में अपनी पहचान बनाना चाहता है। उसे इस कार्य में अच्छे वेतन की अपेक्षा है। कार्य क्षेत्र में सुरक्षा की आशा रखता है तथा कार्यालय व्यवस्था में सुदृढ़ता चाहता है, जिससे सम्यक अनुदेशन संभव हो सके परन्तु सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में असीमित परिवर्तनों ने शिक्षकों

के समक्ष समाज अथवा शाला में समायोजन स्थापित करने की समस्या को जन्म दे दिया है। वर्तमान में मानवीय मूल्यों का अवमूल्यन हो गया है, परन्तु शिक्षकों से आज भी समाज एवं अभिभावकों की अपक्षाएँ पूर्वकालीन जैसी ही है। ऐसे में शिक्षकों के लिए सामन्जस्य स्थापित करना अति कठिन हो गया है, जिसका प्रभाव उसके शिक्षण, उसके मानसिक संतुलन तथा उसके व्यक्तिव पर पड़ा है।

शिक्षक की शिक्षण प्रभावकता एवं शिक्षण अभिवृत्ति ही एक आदर्श शिक्षक की छवि होती है। लेकिन वर्तमान समय में शिक्षक की शिक्षण प्रभावकता व शिक्षण अभिवृत्ति को अनेक कारक प्रभावित कर रहे हैं। जैसे – विद्यालय प्रशासन का हस्तक्षेप, शिक्षा अधिकारियों का विद्यालय की समस्याओं की ओर ध्यान नहीं देना, विद्यालय में व्याप्त वेतन विसंगतियाँ, प्रशासन द्वारा शिक्षकों को अतिरिक्त कार्यभार दिया जाना आदि। राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों में शिक्षकों को प्रदत्त कार्यभार शिक्षक की शिक्षण प्रभावकता व शिक्षण अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाला मूल कारण है। कार्यभार में अधिकता से अभिप्राय शिक्षकों को प्रदान किये जाने वाले उन कार्यो से है जो उन्हें शिक्षण कार्य के अलावा प्रशासन की ओर से प्रदान किये जाते है जैसे–जनगणना अभियान, पल्स पोलियो अभियान, मतदाता परिचय पत्र, अपने विषय के अलावा अन्य विषयों का शिक्षण कार्य करना आदि।

Loving(1994) ने विद्यालय अध्यापकों पर शोध कार्य किया, इस शोध का शीर्षक था–

"A Study of Job Satisfaction Among School Teacher."

इन्होंने शोध निष्कर्ष में पाया कि गैर राजकीय विद्यालयों के अध्यापक स्वयं के व्यवसाय से संतुष्ट नहीं है अतः गैर राजकीय विद्यालय के अध्यापकों में सदैव कुण्ठा व चिन्ता बनी रहतो है जिसके कारण अध्यापकों की शिक्षण प्रभावकता व शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति प्रभावित होती है।

वर्तमान समय में राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों में शिक्षकों को प्रदत्त कार्यभार स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर है। कार्यभार शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता एवं शिक्षण अभिवृत्ति को प्रभावित करता है। ***रोटर(*1994) ने बताया कि एक कुसमायोजित व असंतुष्ट शिक्षक छात्रों की आकांक्षाओं को सफलता की कसोटी पूरा नहीं कर सकता। केवल समायोजित स्वतंत्र शिक्षक ही भावी पीढ़ी के विकास में सहायक है।

अतः देश के भग्य निर्माण के क्रम में यह अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है कि राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों में शिक्षकों को प्रदत्त कार्यभार का शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता व शिक्षण अभिवृत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है।

1.3 *समस्या कथन* :–

"शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा शिक्षण प्रभावशीलता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ सहसम्बन्ध का अध्ययन।"

1.4 *शोध के उद्देश्य* :–

2. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।
2. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।
3. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन ।
4. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन ।
5. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन ।
6. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।
7. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।
8. निजी विद्यालया के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।
9. राजकीय एवं निजी विद्यालया के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।
10. राजकीय एवं निजी विद्यालया को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।
11. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

12. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

13. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन।

14. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन।

15. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

16. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

17. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

18. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

19. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

20. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

21. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

22. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

23. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

24. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

25. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

26. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

27. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

28. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

29. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

30. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

1.5 *शोध परिकल्पना* :–

1. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

2. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

3. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

4. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

5. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

6. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

7. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

8. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

9. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

10. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

11. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

12. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

13. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

14. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

15. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

16. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

17. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

18. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

19. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

20. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

1.6 *तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण* :–

1. ***शिक्षण*** :–

शिक्षण एक सामाजिक प्रत्यय है जो शासन प्रणाली तथा सामाजिक दर्शन से प्रभावित होता है। शिक्षण में ऐसी क्रियायें की जाती है, जिनसे छात्रों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाया जाता है।

Brubaker, "Teaching is an arrangement and manipulation of a situation in which there are gaps and obstructions which an individual will seek to overcome and from which he will learn in the course of doing so."

2. ***अभिवृत्ति* :–**

अभिवृत्ति किसी वस्तु, व्यक्ति या विषय के सम्बन्ध में सोचने, अनुभव करने, व्यवहार करने का तरीका है।

Gupta and Kapoor (1990), "Teaching attitude" as exhibited by a teacher - (1) instructional strategies, (2) class room management, (3) personal disposition, temperament and tendencies, (4) evaluation and feed back (5) interpersonal relations, (6) initiative and enthusiasm, (7) professional values and (8) innovativeness in the everyday teaching learning situation.

3. ***प्रभावशीलता* :–**

शिक्षण एक उद्देश्यपूर्ण क्रिया है, जिसका उद्देश्य शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति करना है। शिक्षक विभिन्न क्रियायें तथा युक्तियों का प्रयोग करके अपने शिक्षण द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति का प्रयास करता है। शिक्षक द्वारा किये गये शिक्षण के द्वारा उद्देश्य की पूर्ति हो जाने पर कहा जाता है कि शिक्षक का शिक्षण प्रभावी रहा ।

Ryans (1950), "Teaching is effective to the extent that the teacher acts in ways that are favourable to the development of basic skills, understanding, work habits, desirable attitudes, value judgments and adequate personal adjustments of the pupils."

4. ***उच्च शैक्षिक उपलब्धि* :–**

उच्च शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य है कि कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों ने वार्षिक परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

5. ***निम्न शैक्षिक उपलब्धि** :–*

निम्न शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य है कि कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों ने वार्षिक परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की।

1.7 *शोध परिसीमन :–*

1. शोध अध्ययन राजस्थान के कोटा जिले तक ही सीमित रखा गया है।
2. शोध अध्ययन हेतु राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम का चयन किया गया है।
3. शोध अध्ययन हेतु राजकीय विद्यालय एवं निजी विद्यालयों का चयन किया गया है।
4. शोध अध्ययन हेतु कक्षा दसवीं में अध्ययनरत विघार्थियों का चयन किया गया है।
5. शोध अध्ययन हेतु कोटा जिले के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

1.8 *शोध विधि :–*

1. ***सर्वेक्षण** :–*

सर्वेक्षण का अर्थ है 'ऊपर से देखना' अथवा निरीक्षण करना है। सर्वेक्षण विधि की सहायता से अनेक समस्याओं का अध्ययन ही नहीं किया जाता है, बल्कि समस्याओं का समाधान ढूँढने का भी प्रयास किया जाता है। इसलिए शोधार्थी ने शोध अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

2. ***जनसंख्या** :–*

शोध अध्ययन हेतु जनसंख्या में एक विशिष्ट समूह के समस्त व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है। शोध अध्ययन हेतु जनसंख्या के रूप में राजस्थान के कोटा जिले के विभिन्न राजकीय विद्यालयों व निजी विद्यालयों के शिक्षकों व विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

3. ***न्यादर्श*** :–

न्यादर्श के बिना शोध कार्य को पूर्ण नहीं किया जा सकता है। न्यादर्श प्रविधि शोध कार्य को व्यावहारिक तथा समय, धन, शक्ति की दृष्टि से मितव्ययी बना देती है।

(i) न्यादर्श के रूप में कुल 20 राजकीय व निजी विद्यालयों का चयन किया गया है।

(ii) न्यादर्श के रूप में राजकीय व निजी विद्यालयों के 100 शिक्षकां का चयन किया गया है।

(iii) न्यादर्श हेतु राजकीय व निजी विद्यालयों के कक्षा दसवी में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

(iv) प्रस्तुत अध्ययन के लिए शोधार्थी द्वारा यादृच्छिक विधि की लॉटरी प्रविधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया है।

4. ***उपकरण*** :–

शोध अध्ययन हेतु निम्नलिखित शोध उपकरणों का उपयोग किया गया है :–

(i) ***शिक्षक अभिवृत्ति परीक्षण*** :– डॉ. जयप्रकाश, डॉ. आर.पी. श्रीवास्तव, डॉ. एस.डी. कपूर।

(ii) ***शिक्षक प्रभावशीलता मापनी*** :– डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. डी.एन. मूथा।

(iii) शैक्षिक उपलब्धि हेतु कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षा की अंकतालिका के आधार पर दत्तों का संग्रह किया गया है।

5. ***विश्लेषण प्रक्रिया*** :–

शोध उपकरण से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकी का उपयोग किया गया है।

(i) मध्यमान,

(ii) मानक विचलन,

(v) टी परीक्षण,

(iv) सह–सम्बन्ध।

1.9 ***शोध अध्ययन का प्रारूप*** :–

1. ***प्रथम अध्याय*** :–

अध्याय में शोध समस्या की पृष्ठभूमि को प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय में शोधार्थी द्वारा निम्न की व्याख्या की गई है –

प्रस्तावना, शोध कार्य का महत्व, समस्या कथन, शोध के उद्दश्य, परिकल्पना, तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण, शोध विधि, परिसीमन, अध्ययन का प्रारूप एवं सार।

2. ***द्वितीय अध्याय*** :–

अध्याय में सम्बन्धित साहित्य का विवरण निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया गया है –

प्रस्तावना, सम्बन्धित साहित्य का अर्थ एवं परिभाषा, सम्बन्धित साहित्य के स्त्रोत, सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के लाभ, प्रस्तुत शोध कार्य से सम्बन्धित पूर्व में हुए शोध अध्ययनों का उल्लेख एवं सार।

3. ***तृतीय अध्याय*** :–

अध्याय में समस्या के अध्ययन की विधि व पक्रियाओं का विवरण निम्न आधार पर प्रस्तुत किया है –

प्रस्तावना, शोध विधि, अध्ययन हेतु जनसंख्या व न्यादर्श, शोध में प्रयुक्त उपकरण, विश्लेषण की प्रक्रिया एवं सार।

4. ***चतुर्थ अध्याय*** :–

अध्याय में परीक्षणों से प्राप्त अंकों व तथ्यों का प्रस्तुतिकरण किया गया है–
प्रस्तावना, उद्देश्य, परिकल्पनाऐं, प्रदत्तों का वर्गीकरण, प्रदत्तों का सारणीयन, विश्लेषण एवं व्याख्या, निष्कर्ष एवं सार।

5. ***पंचम अध्याय*** :–

अध्याय में अनुसंधान का सारांश निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया गया हैं –
प्रस्तावना, शोध अध्ययन का सारांश, शोध के निष्कर्ष, शोध के शैक्षिक निहितार्थ, भावी शोध हेतु सुझाव एवं सार।

1.10 *सार :–*

शोध अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शिक्षक को मनुष्यों का निर्माता, राष्ट्र निर्माता, शिक्षा पद्धति की आधारशिला, समाज को गति प्रदान करने वाला माना गया ह। शिक्षक ही विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है। शिक्षक की अभिवृत्ति ही विद्यार्थी के सम्पूर्ण जीवन पर प्रभाव डालती है तथा विद्यार्थी को लक्ष्य तक पहुँचाने में सहायक होती है।

प्रथम अध्याय में शोध समस्या की पृष्ठभूमि को प्रस्तुत किया गया ह। इस अध्याय में :–

प्रस्तावना, शोध कार्य का महत्व, समस्या कथन, शोध के उद्दश्य, परिकल्पना, तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण, शोध विधि, परिसीमन, अध्ययन का प्रारूप एवं सार का उल्लेख किया गया है।

अध्याय–द्वितीय
सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

उर्ध्व बाहुर्विरोभोष, न च किन्चित् श्रणोति में।

धर्मादर्थश्चकाश्च स किमर्थ न सेव्यते।।

महाभारत

अध्याय–द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

2.1 *प्रस्तावना :–*

मनुष्य स्वंय जिज्ञासु होता है और ज्ञान प्राप्ति की जहाँ निरन्तर कोशिश करता रहता है, वहीं प्राप्त ज्ञान को संग्रहित भी करता है। मनुष्य अपने ज्ञान में वृद्धि विभिन्न व्यक्तियों के सम्पर्क और विभिन्न साहित्यों का अध्ययन करते हुए प्राप्त करता है। अतः मनुष्य साहित्यों का अध्ययन करके ज्ञान संग्रहण और ज्ञान वृद्धि का कार्य करता है। शोध विषय से सम्बन्धित साहित्य, जिसमें विषय के किसी पक्ष अथवा सम्पूर्ण विषय पर विचार व्यक्त किये गये हो, सम्बन्धित साहित्य कहलाता है। सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन शोधकार्य को नवीनतम ज्ञान के शिखरों पर ले जाता है, जहाँ अपने क्षेत्र से सम्बन्धित निष्कर्षो एवं परिणामों का मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त होता है। अनुसंधान चाहे किसी भी क्षेत्र का हो, उसका लक्ष्य सम्बन्धित क्षेत्र में अनुत्तरित प्रश्नों के उत्तर खोजना, वर्तमान समस्याओं के समाधान खोजना, विरोधी सिद्धान्तों की व्याख्या, उनकी सत्यता को परखना, नवीन प्रवृत्तियों तथा तथ्यों की खोज करना, जीवन एवं उसके परिवेश से सम्बन्धित अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना आदि होता है।

2.2 *सम्बन्धित साहित्य का अर्थ एवं परिभाषा :–*

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार के ग्रन्थों, ज्ञानकोषों, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबन्धों, शोध प्रपत्रों तथा पत्र–पत्रिकाओं आदि से है, जिसके अध्ययन से शोधकर्त्ता को अपनी समस्या के चयन, शोध उद्देश्य, अनुसंधान कार्य की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

सम्बन्धित साहित्य के विषय पर प्रकाश डालते हुए निम्न विद्वानों द्वारा परिभाषा दी गई है –

ट्वर्स, आर.एम.वी. **(1970)** के अनुसार :–

''किसी क्षेत्र की समस्याओं एवं तथ्यों से सुपरिचित होने के लिए विषय से सम्बन्धित साहित्य को पढ़ना आवश्यक होता है। सम्बन्धित क्षेत्र में समस्याओं एवं तथ्यों के ज्ञान के अभाव में समीक्षक यह नहीं जान पाता कि विषय हेतु क्या संगत, क्या असंगत है।''

मूले, जार्ज **(1970)** के अनुसार :–

''साहित्य की समीक्षा एक अत्यन्त थका देने वाला कार्य है जिसमें कि गूढ़ दृष्टि, मनन की आवश्यकता है। साहित्य की समीक्षा के माध्यम से समस्या के अवलोकन में सहायता प्राप्त होती है तथा पुनरावृत्ति के व्यर्थ कार्य से सहज ही मुक्ति मिल जाती है। प्रकाशित साहित्य औचित्यपूर्ण एवं सार्थक अभिचिन्तक के सृजन में सहायक सिद्ध होता है''।

गुड, बार, स्केट्स **(1965)** के अनुसार :–

''एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही ओषधि सम्बन्धी आधुनिकतम स्रोतां से परिचित होता रहे। उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र, शोधकर्त्ता के लिए भी अपने अध्ययन क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।''

ढोढ़ियाल एवं फाटक **(1961)** के अनुसार :–

''समस्या से सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार है तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में महत्वपूर्ण कारक है।''

बेस्ट, जे.डब्ल्यू **(1977)** के अनुसार :–

''व्यावहारिक दृष्टि से सम्पूर्ण मानव ज्ञान पुस्तकों तथा पुस्तकालयों में प्राप्त किया जाता है। अन्य जीवों के अतिरिक्ति जो प्रत्येक पीढ़ी में नये सिरे से प्रारम्भ करते हैं, ज्ञान भण्डार में मानव का निरन्तर योग सभी क्षेत्रों में उसक विकास का आधार है।''

उपरोक्त सभी विद्वान अनुसंधान कार्य की सफलता के लिए संदर्भित साहित्य के सर्वेक्षण को अति–महत्वपूर्ण मानते है। अतः प्रत्येक अनुसंधानकर्ता संदर्भित साहित्य के सर्वेक्षण को अनिवार्य आवश्यकता महसूस करता है।

2.3 *सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के लाभ* :–

1. ***तथ्यों का अध्ययन*** :–

   सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन करने के उपरान्त सर्वेक्षण से यह स्पष्ट हो जाता है कि उस साहित्य में किन तथ्यों का अध्ययन किया गया है।

2. ***पुनरावृत्ति से रक्षा*** :–

   गुड एवं बार (1954) ने इस सम्बन्ध में कहा है कि सम्बन्धित साहित्य एवं परिकल्पनाओं को समझने में मदद मिलती है व पुनरावृत्ति से रक्षा होती है।

3. ***गहनतापूर्ण अध्ययन*** :–

   सम्बन्धित साहित्य विभिन्न प्रकार की जानकारी संग्रहित करता है। सर्वेक्षण से यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य ने कौन कौन से तथ्यों का गहनतापूर्ण अध्ययन किया है और कौनसे तथ्यों के अध्ययन के सम्बन्ध में औपचारिकता मात्र अध्ययन कार्य किया है।

4. ***तुलनात्मक अध्ययन*** :–

   सभी साहित्यों की रचनाएं पृथक–पृथक होती है। सर्वेक्षण द्वारा विभिन्न साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

5. ***तथ्यों का सत्यापन*** :–

   सर्वेक्षण सम्बन्धित साहित्य की कुंजी है अर्थात् सम्बन्धित साहित्य में शामिल विभिन्न तथ्यों का सत्यापन सर्वेक्षण द्वारा हो जाता है।

6. ***वास्तविक जानकारी*** :–

   सम्बन्धित सहित्य के अध्ययन का उद्देश्य मनुष्य को प्राप्त हुआ है अथवा नहीं, इस सम्बन्ध में भी सर्वेक्षण से ही वास्तविक जानकारी मिलती है।

7. ***अन्तर्दृष्टि का विकास*** :–

साहित्य के पुनरावलोकन से सम्बन्धित शोधकर्त्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना करने के सम्बन्ध में अन्तदृष्टि प्राप्त हो सकती है। यह अर्न्तदृष्टि उपकरणों के चयन, अनुसंधान विधि के चयन, समस्या के परिसीमन, समस्या की सुस्पष्ट परिभाषा आदि के बारे में प्राप्त होती है।

8. ***सामान्य अनुसंधान सम्बन्धित निर्देश*** :–

इससे शोधकर्त्ताओं को सामान्य निर्देश प्राप्त करने में सहायता मिलती है। इन्हीं सब महत्वपूर्ण बातों के कारण किसी भी समस्या या नवीन खोज के सम्बन्ध में कार्य करने से पूर्व सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन कर लेना आवश्यक है।

9. ***अनुसंधान प्रकल्प में सहायता*** :–

साहित्य के पुनरावलोकन से शोधकर्त्ता को समस्त अनुसंधान प्रक्रिया का सम्प्रत्यय विस्तृत एवं गहन हो जाता है। इससे मानस पटल पर शोध कार्य का प्रक्रम, प्रविधि के प्रत्येक चरण का एक स्पष्ट एवं प्रभावपूर्ण चित्र उभर जाता है।

10. ***ज्ञान प्राप्ति का लक्ष्य*** :–

सम्बन्धित साहित्य का क्षेत्र विस्तृत होता है। अतः सर्वेक्षण से यह स्पष्ट हो जाता है कि अध्ययनकर्ता का किस क्षेत्र में सर्वाधिक ज्ञान प्राप्ति का लक्ष्य रहा है।

2.4 ***सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के उद्देश्य*** :–

1. सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा से शोधकर्त्ता को अपने क्षेत्र की सीमा निर्धारण करने में सहायता मिलती है। उसे समस्या के परिसीमन व परिभाषीकरण करने में भी सहायता मिलती है।

2. सम्बन्धित साहित्य के ज्ञान से शोधकर्त्ता का अन्य व्यक्तियों द्वारा किए गए कार्य से पूर्ण परिचय हो जाता है और वह अपने उद्‌देश्यों का स्पष्ट व संक्षिप्त रूप से वर्णन कर सकता है।

3. सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से शोधकर्त्ता अनुपयोगी समस्याओं का चयन करने से बच सकता है। वह ऐसे क्षेत्र चुन सकता है, जिनमें लाभदायक खोज हो सके और ज्ञान के क्षेत्र में सार्थक वृद्धि हो सके।

4. सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा से शोध अध्ययन की पुनरावृत्ति नहीं होती।

5. सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा से शोधकर्त्ता अनुसंधान प्रक्रिया का ज्ञान प्राप्त करता है। उसे पूर्व अध्ययनों में प्रयुक्त उपकरणों की जानकारी हो जाती है। उसे उन सांख्यिकी विधियों की अतंदृष्टि भी मिल जाती है, जिनके द्वारा परिणामों की वैधता सिद्ध की जाती है।

6. सम्बन्धित साहित्य अनुसंधान के लिए सिद्धान्त, विचार, व्याख्याऐं तथा परिकल्पनायें प्रदान करता है जो नई समस्या के चयन में उपयोगी हो सकते है।

7. सम्बन्धित साहित्य अनुसंधान के लिए किये गये क्षेत्र में कितना और किस प्रकार का कार्य हो चुका है, इसकी जानकारी देता है।

8. सम्बन्धित साहित्य परिकल्पना के लिए साधन प्रदान करता है। शोधकर्ता प्राप्त अध्ययनों के आधार पर शोध परिकल्पनायें बना सकता है।

9. चयनित समस्या के लिए किस विधि तथा प्रक्रिया का प्रयोग उपयुक्त होगा? कौन से उपकरण प्रयोग में लाना उचित होगा तथा कौन सी सांख्यिकी का प्रयोग करना होगा ? इस सबकी जानकारी प्राप्त होती है।

10. सम्बन्धित साहित्य अध्ययन परिणामों के विश्लेषण करने में सहायता देता है। उपयोगी निष्कर्षो तथा चरों में तुलनात्मकता निर्धारित करता है।

2.5 *सम्बन्धित साहित्य का अभिज्ञान* :–

सम्बन्धित सहित्य में पहला कार्य यह पहचान करने का है कि किस सामग्री को पढा व मूल्याकंन किया जाए। पुस्तकालय में उपलब्ध मुख्य व गौण स्त्रोतों

के प्रयोग से यह अभिज्ञान किया जा सकता है। सूचना के मुख्य स्रोतों में, लेखक अपने कार्य को सीधे ही अनुसंधान लेखा पुस्तकों एवं विषयों लेखों, अनुसंधान विवेचना या शोध लेख के माध्यम से प्रतिवेदित करता है। मुख्य स्रोतों से शोधकर्त्ता को अध्ययन के बारे में अपने निर्णय का आधार मिलता है। उसके द्वारा अपनाई गई अनुसंधान विधियों के विषय में अच्छी सूचना मिल जाती है। गौण स्रोतों में शोधकर्त्ता अन्य व्यक्तियों द्वारा किये गये अध्ययन से प्राप्त परिणामों को संक्षिप्त रूप में बनाकर उनकी व्याख्या करता है।

2.6 *सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन का महत्व* :–

वस्तुतः सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना शोधकर्त्ता का कार्य अन्धे के तीर के समान होता है। इसके अभाव में उचित दिशा में वह एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता। जब तक उसे ज्ञान न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया है, तथा उसके निष्कर्ष क्या आये हैं। तब तक वह न समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही उसकी रूपरेखा तैयार कर कार्य को सम्पन्न कर सकता है। इसके महत्व को स्पष्ट करते हुए ***बोर्ग*** (1978) ने लिखा है – ''किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है, जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा हम इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते ता हमारे कार्य के प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की संभावना है अथवा इसकी पुनरावृत्ति भी हो सकती है।''

गुड (1965) के अनुसार ''मुद्रित साहित्य के अपार भण्डार की कुंजी अर्थपूर्ण समस्या और विश्लेषणीय परिकल्पना के स्रोत के द्वार खोल देती है तथा समस्या के परिभाषीकरण, अध्ययन विधि के चुनाव तथा प्राप्त सामग्री के तुलनात्मक विश्लेषण में सहायता करती है।'' वास्तव में रचनात्मकता, मौलिकता तथा चिन्तन के विकास हेतु विस्तृत एवं गम्भीर अध्ययन आवश्यक है।

यदि उपर्युक्त तथ्यों पर गहनतापूर्वक विचार करें तो यह स्पष्ट होता है कि सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण शोध प्रबन्ध का एक अध्याय जाड़ने तथा ग्रन्थ सूची

तैयार करने के लिए ही आवश्यक नहीं है अपितु अनुसंधान के सभी स्तरों पर यह सहायक होता है तथा समस्या का चुनाव, समस्या का परिभाषीकरण तथा विश्लेषण एवं कथन, परिकल्पनाओं का निर्माण, अध्ययन की सीमा के निर्धारण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने, न्यादर्श के चुनाव, आंकड़ों के संग्रहण, आंकड़ों के सारणीयन, व्यवस्थापन तथा विश्लेषण, सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग तथा निष्कर्ष निकालने – सभी में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

किस क्षेत्र में कितना कार्य, किस रूप में हो चुका ह? अनुसंधानकर्ता ने क्या परिकल्पनाएं बनाइ थी? किस विधि से न्यादर्श तथा आंकड़ा का संग्रह, सारणीयन एवं विश्लेषण किया तथा क्या निष्कर्ष निकाले, पहले निकाले गए निष्कर्ष, वर्तमान निष्कर्ष से कितने सम्मत अथवा असम्मत है, आदि का निर्णय करने में सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन महत्वपूण सहायता करता है।

2.7 *सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन की उपादेयता* :–

1. ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए आवश्यक है कि शोधकर्त्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहाँ पर है? वर्तमान ज्ञान की जानकारी सम्बन्धित साहित्य के गहन अध्ययन से ही हो सकती है।
2. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन अब तक उस क्षेत्र में हो चुके कार्य की सूचना देता है।
3. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन नहीं करने से यह सम्भावना रहती है कि जो अनुसन्धान कार्य पहले अन्य शोधकर्त्ताओं द्वारा किया जा चुका है, वह पुनः किया जा सकता है। अनेक बार एक ही क्षेत्र में कई अनुसन्धान कार्य होते है जो समय, श्रम और धन के अपव्यय मात्र हैं। सम्बद्ध साहित्य के अध्ययन से अनावश्यक पुनरावृत्ति की भूल से बचा जा सकता है।
4. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन समस्या के चयन, विश्लेषण एवं कथन में सहायक होता है।
5. शोधकर्त्ता के समय की बचत करता है।
6. सम्बन्धित साहित्य समस्या के सीमाकंन में सहायक होता है।

7. अध्ययन के क्षेत्र को सीमित करने एवं उसमें लगने वाले श्रम की बचत करता है।

8. पूर्व के शोधकर्त्ताओं ने जिस विधि का उपयोग किया है और जो परिणाम प्राप्त किये हैं, उनकी परस्पर तुलना कर नई विधि के उपयोग की सूझ उत्पन्न होती है।

9. कुछ ऐसे अनुसन्धान कार्य जो पूर्व में किये गये हैं, में प्राप्त निष्कर्षों से प्रस्तावित शोध में प्राप्त निष्कर्ष का सत्यापन हो सकता है।

10. पूर्व में किये गये अनुसन्धानों के अध्ययन से अन्य सम्बन्धित नवीन समस्याओं का पता लगता है और शोधकर्त्ता अपने अनुसन्धान के प्रतिवेदन के अन्त में सुझाव के रूप में नवीन समस्याओं को प्रस्तुत कर सकता है।

2.8 *सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं के स्त्रोत* :–

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने के लिए उसके स्त्रोत तथा साधनों से परिचित होना आवश्यक है। सूचनाओं के स्त्रोतों को दो ***भागों*** में विभक्त किया जा सकता है :–

(1) प्रत्यक्ष स्त्रोत,

(2) अप्रत्यक्ष स्त्रोत।

पी.वी. यंग (1965) ने भी इन्हीं स्त्रोतों को दो भागों में बाँटते हुए लिखा है –"सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने के लिए स्त्रोतों को दो भागों में बाँटा जा सकता है लिखित और संकलित।"

1. ***लिखित स्त्रोत*** :–

इन स्त्रोतों में पूर्व संकलित सामग्री होती है जो प्रकाशित और अप्रकाशित रूप में मिलती है, वे निम्न है :–

(i) पुस्तकें,

(ii) विश्वविद्यालय प्रकाशन,

(iii) अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन,

(iv) शिक्षा तथा मनोविज्ञान सम्बन्धी लेख सार,

(vi) शिक्षा से सम्बन्धित मासिक एवं पाक्षिक शिक्षा पत्र, लेख प्रतिवेदन।

2. ***संकलित स्त्रोत*** :–

संकलित स्त्रोतों में शोधकर्त्ता स्वंय प्रत्यक्ष रूप से समस्या से सम्बन्धित सामग्री का चयन करता है तथा दूसरों का सहयोग भी इस विषय में प्राप्त करता है।

वर्तमान में सूचना प्राप्त करने के अनेक स्त्रोत है, जिसमें से प्रमुख स्त्रोतों का विवरण निम्नलिखित है :–

(i) सामयिक प्रकाशन,

(ii) सामान्य सन्दर्भ,

(iii) विश्वकोष,

(iv) शिक्षा सूची,

(v) शब्दकोष,

(vi) शैक्षिक वार्षिकी,

(vii) अनुसंधान सर्वेक्षण,

(viii) लेख सार,

(ix) ग्रंथ सूची तथा निर्देशिकाएं,

(x) जर्नल,

(xi) अनुसंधान में सहायक पुस्तकें,

(xii) भारतीय जर्नल।

2.9 ***शोध से सम्बन्धित साहित्य अध्ययन*** :–

शोध से सम्बंधित साहित्य अध्ययन को तीन वर्गो में विभाजित किया गया है :–

4. शैक्षिक अभिवृत्ति से सम्बन्धित साहित्य अध्ययन,

5. शिक्षण प्रभावशीलता से सम्बन्धित साहित्य अध्ययन,

6. शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित साहित्य अध्ययन।

2.10 ***शैक्षिक अभिवृत्ति से सम्बन्धित साहित्य अध्ययन –***

भंडारकर, बी.जी. (1980) –

''ए स्टडी ऑफ पॉलीटेक्निक टीचर्स एटीट्यूड टूवर्ड्स टीचिंग प्रोफेशन एण्ड इट्स कोरिलेट्स''।

इनके अध्ययन का उद्देश्य शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा इसका उम्र, योग्यता व व्यक्तिगत समस्याओं के साथ सम्बन्ध का अध्ययन करना था।

श्रीवास्तव, रमाकुमारी (1980) –

''उदयपुर विश्वविद्यालय में शिक्षण–प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति'' (अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध, उदयपुर विश्वविद्यालय)।

इनके शोध का उद्देश्य उच्च जाति व निम्न जाति तथा छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं में अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना था। शोध के निष्कर्ष के अनुसार जाति व लिंग के आधार पर शैक्षिक अभिवृत्ति में अतंर नहीं होता है।

जैन, बी (1982) –

शिक्षकों के कक्षागत व्यवहार तथा उनकी व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया।

शोध का प्रमुख उद्देश्य शिक्षकों के कक्षागत व्यवहार का व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का पता लगाना था। शोध निष्कर्ष के अनुसार सकारात्मक अभिवृत्ति वाले शिक्षकों की कक्षा में अन्तःक्रिया अधिक पाई गई।

खण्डेलवाल, मन्जू (1988) -

''अध्यापन व्यवसाय के प्रति पूर्व सेवारत तथा सेवारत प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन''।

शोध का उद्देश्य अध्यापन व्यवसाय, कक्षा–कक्ष अध्यापन तथा शिक्षक छात्र सम्बन्धों के प्रति पूर्व सेवारत तथा सेवारत प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना था। शोध निष्कर्ष के अनुसार सेवारत प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति अध्यापन व्यवसाय, कक्षा–कक्ष अध्यापन के प्रति तथा शिक्षक छात्र सम्बन्धों के प्रति पूर्व सेवारत प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा अधिक है।

रॉय, एस. (1990) -

''शिक्षकों की अपने छात्रों तथा उनकी कार्य संतुष्टि के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन''।

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों की छात्रों के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सम्बन्धों का पता लगाना था। इसके लिये कटक शहर के 5 विद्यालयों के 100 शिक्षकों का अध्ययन किया गया। दत्त संकलन के लिये मानसिक स्वास्थ्य प्रमापनी, कार्य संतुष्टि प्रमापनी व छात्रों के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति प्रमापनी का उपयोग किया गया। शोध निष्कर्ष में पाया कि मानसिक स्वास्थ्य का कार्य संतुष्टि व छात्रों के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का सकारात्मक व अर्थपूर्ण सम्बन्ध होता है।

रामचन्द्रन, जी. (1991) –

''शिक्षक व छात्रों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन''। शोध का उद्देश्य यह पता लगाना था कि क्या शिक्षण के प्रति शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्तियों, माता–पिता के व्यवसाय, लिंग, शिक्षा के स्तर, पाठ्यक्रम की प्रकृति में कोई सम्बन्ध है या नहीं। इसके लिये लक्ष्मी महाविद्यालय, गांधीधाम के 100 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों तथा दूरस्थ शिक्षा विश्वविद्यालय के 100 प्रशिक्षणार्थियों का चयन क्रिया गया। शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति मापने के लिये एक अभिवृत्ति प्रमापनी का निर्माण किया गया तथा टी–मान द्वारा तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

रॉय, शिप्रा (1992) –

''छात्रों के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति व उनकी कार्य संतुष्टि के मध्य तुलनात्मक अध्ययन''।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य महिला व पुरूष शिक्षकों की उनके छात्रों के प्रति अभिवृत्ति उनके मानसिक स्वास्थ्य व व्यावसायिक सम्बन्धों के मध्य तुलना करना था। इस अध्ययन हेतु मानसिक स्वास्थ्य प्रमापनी, कार्य संतुष्टि प्रमापनी व शिक्षक की

छात्रों के प्रति अभिवृत्ति प्रमापनी का निर्माण किया गया। प्रदत्तों का आंकलन प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन, सह–सम्बन्ध, काई–स्क्वायर, टी–मान के माध्यम से किया गया। शोध निष्कर्ष के अनुसार शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य, उनकी कार्य संतुष्टि व विद्यार्थियों के प्रति अभिवृत्ति के प्रति सकारात्मक व अर्थपूर्ण सम्बन्ध पाया गया तथा व्यावसायिक तौर पर संतुष्ट शिक्षक की अपने छात्रों के प्रति अभिवृत्ति प्रबल होती है।

भटनागर, वीनू (1996) –

"जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान एवं सरकारी शिक्षक प्रशिक्षण के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं स्वधारणा का तुलनात्मक अध्ययन"।

शोध का उद्देश्य जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान तथा सरकारी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन तथा महिला प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना था। उपकरण के रूप में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया।

निष्कर्ष यह ज्ञात हुआ कि कक्षाध्यापन के प्रति सरकारी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति से अपेक्षाकृत अधिक है।

सिन्हा, नीला (1996) -

"Study of Teacher Attitude Towards School Environment."

इन्होने निष्कर्ष प्राप्त किया कि अधिकांश शिक्षक विद्यालय की समस्याओं की ओर ध्यान नहीं देते। जिससे शिक्षण अभिवृत्ति पर प्रभाव पड़ता है।

बाला, पी. (1997) –

"ए स्टडी ऑफ जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ नवोदय स्कूल टीचर्स इन एटीट्यूड टूवर्ड्स टीचिंग प्रोफशन"।

इनके अध्ययन का उद्देश्य नवोदय विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति से सम्बन्ध ज्ञात करना था तथा इन्होंने पाया कि शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति से धनात्मक सहसंबंध होता है।

नेस्ट (2002)-

"Effect of Education Environment on Teaching Attitude."

नेस्टे ने निष्कर्ष प्राप्त किये कि शिक्षण अभिवृत्ति पर शैक्षिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है अतः शैक्षिक वातावरण में सुधार अपेक्षित है।

पुष्पम, ए.एम.एल. (2003) –

''एटीट्यूड टूवर्ड्स टीचिंग प्रोफशन एण्ड जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ वूमेन टीचर्स इन कोयम्बटूर''।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य महिला शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति ज्ञान करना तथा इसका द्वितीय चर (आय, उम्र, व्यावसायिक योग्यता आदि) के साथ संबंध ज्ञात करना था। प्रदत्तों के संकलन के लिये वी.वी.काटी व सी.एस.बेनूर का एटीट्यूड टूवर्ड्स टीचिंग प्रोफेशन स्केल का प्रयोग किया गया। शोध के निष्कर्ष के अनुसार महिला शिक्षकों की आय, उम्र, व्यावसायिक योग्यता आदि का उनकी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

धार, जे.एन. (2004)-

"Professional Status of Teacher."

इन्होने निष्कर्ष प्राप्त किया कि वर्तमान समय में अध्यापन कार्य पूर्ण रूप से एक व्यावसायिक रूप ले चुका है जिसमें शिक्षण अभिवृत्ति पर न्यून स्थान है।

काविया, शक्तिबाला (2005) –

''पूर्व प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन''। अप्रकाशित लघुशोध प्रबंध, **2005**, ज.रा.ना. राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड विश्वविद्यालय, उदयपुर।

शोध का उद्देश्य पूर्व प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक व अध्यापिकाओं की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति ज्ञात कर उसका तुलनात्मक अध्ययन करना था। स्वनिर्मित अभिवृत्ति प्रमापनी का प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि अध्यापिकाओं में शिक्षक की अपेक्षा कक्षा–कक्ष अध्यापन के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखती है।

गिल, टी.के. एवं सेनी, एस.के. (2005) –

''इफेक्ट ऑफ टीचर एज्यूकेशन ऑन एटीट्यूड ऑफ स्टूडेन्ट टीचर्स टूवर्डस द टीचिंग प्रोफशन''।

इनके अध्ययन का उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की प्रशिक्षण के प्रारंभ में तथा शिक्षण समाप्ति पर शिक्षण अभिवृत्ति में तुलना करना था। दत्त संकलन के लिये इन्होनें जे.सी. गोयल द्वारा निर्मित टीचर एटीट्यूड स्केल का प्रयोग किया तथा पाया कि शिक्षक प्रशिक्षण द्वारा प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण के प्रति लगाव को बढ़ाया जा सकता है तथा शिक्षक की योग्यता व वैवाहिक स्तर का शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

ओसुन्डे (2006), ***नाईजिरिया*** –

ओसुन्डे ने 40 प्राथमिक विद्यालय के 400 शिक्षकों पर अभिवृत्ति मापनी का परीक्षण किया तो पाया कि शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति न्यून पायी गयी जिसका कारण शिक्षकों को वेतन एवं अन्य परिलाभ कम मिलना पाया गया।

बरण्डा, रणजीत कुमार (2006) –

''आर.पी.एस.सी. से चयनित तृतीय श्रेणी के शिक्षकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन''।

अध्ययन का उद्देश्य आर.पी.एस.सी. से चयनित प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक व अध्यापिकाओं की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का पता लगाना था। प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक व अध्यापिकाओं तथा उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक व अध्यापिकाओं का एवं सामान्य व अनुसूचित वर्ग के शिक्षकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना था। निष्कर्ष के अनुसार प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिकाएँ, शिक्षकों की अपेक्षा अध्यापन के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखती है। उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक, अध्यापिकाओं की अपेक्षा अध्यापन के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते है। सामान्य वर्ग के शिक्षक अनुसूचित वर्ग के शिक्षकों की अपेक्षा सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

मुवीन, मो. (2006) –

''प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का लिंग, योग्यता व परिवेश के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन''।

अध्ययन का उद्देश्य प्राथमिक स्तर पर शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना था। न्यादर्श के रूप में अजमेर जिले के 120 बेसिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया। इन्होने अहलूवालिया की शिक्षण अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया तथा पाया कि महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति पुरूष शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति की अपेक्षा अधिक है। शहरी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक थी। इन्टरमीडिएट योग्यताधारी शिक्षकों की अभिवृत्ति स्नातक शिक्षकों से कम पायी गयी।

दकशिनामुर्ति, के (2007) –

''एन इन्टरेक्शन इफेक्ट ऑफ टीचर्स टीचिंग इफेक्टिवनेस, टीचर्स पर्सनेलिटी एण्ड टीचर्स एटीट्यूड ऑफ एकेडमिक एचीवमेन्ट इन सोशल साइन्स अमंग स्टूडेन्ट्स स्टडिंग इन सैकण्डरी स्कूल''।

अध्ययन का उद्देश्य सामाजिक विज्ञान शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति, व्यक्तित्व तथा शिक्षण प्रभावशीलता का सामाजिक विज्ञान के छात्रों की उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना था। पाया गया कि जिन सामाजिक विज्ञान शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति अधिक थी उनके छात्रों की उपलब्धि भी उन सामाजिक विज्ञान शिक्षको की अपेक्षा जिनकी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति कम थी, अधिक थी।

सिंह, गुरमीत (2007) –

''जॉब सेटिस्फेक्शन ऑफ टीचर्स एज्यूकेटर इन रिलेशन टू देयर एटीट्यूड टूवर्ड्स टीचिंग''।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य महिला व पुरूष प्रशिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति व उनकी व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य संबंध ज्ञात करना था। प्रदत्तों के संकलन के लिये जॉब सेटिस्फेक्शन स्केल– ***अमर सिंह एवं टी.आर. शर्मा*** **(1999)** द्वारा निर्मित तथा ***एस.पी. आहलूवालिया*** **(1998)** का टीचर्स एटीट्यूड इनवेन्टरी का प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्ष के अनुसार पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों तथा महिला

शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि, शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति से धनात्मक परन्तु सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

बारपण्डा,एन. (2007)-

"शिक्षकों के पारिवारिक स्तर का विद्यालय में शिक्षण अभिवृत्ति पर प्रभाव – एक अध्ययन."

इन्होने निष्कर्ष प्राप्त किया कि पारिवारिक असामंजस्य होने की स्थिति में शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति पर प्रतिकूल प्रभाव होता है तथा पारिवारिक असांमजस्य की स्थिती में शिक्षण अभिवृत्ति पर अनुकूल प्रभाव दिखाई देता है।

सिलेन्स एवं रेमर्स (2008) –

सिलेन्स एवं रेमर्स ने थर्स्टन पद्धति के आधार पर किसी भी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का मापन करने के लिए एक अभिवृत्ति मापनी का निर्माण किया और कई हजार शिक्षकों पर प्रशासित करने के बाद निष्कर्ष निकाला कि यदि किसी भी विषय के शिक्षक की रूचियों के अनुकूल वातावरण उपलब्ध है तो उसकी अभिवृत्ति सकारात्मक रूख लेने लगती है।

सुमंगल, वी. एवं उषादेवी, वी.के. (2008) –

''वूमन टीचर्स एटीट्यूड टूवर्ड्स टीचिंग प्रोफेशन एण्ड सक्सेस इन टीचिगं''।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के स्कूल में कार्यरत महिला शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा उसका शिक्षण क्षेत्र में सफलता के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना था।

प्रदत्तों के लिये Scale of Attitude Towards Teaching Profession (Poochikath 1989) तथा Teaching Success Rating Scale (Mathai 1991) का प्रयोग किया गया।

शोध निष्कर्ष आया कि शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति शिक्षण की सफलता को प्रभावित करती है तथा दोनों में सार्थक सम्बन्ध है। सफलता प्राप्त महिलाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा कम सफलता प्राप्त महिलाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान स्कोर में सार्थक अंतर है।

कुमार, डी. (2009) –

''बेसिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता अभिवृत्तियों तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता एवं समर्पण स्तर का अध्ययन''।

इन्होंने बेसिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्तियों का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि पुरूष एवं महिला वर्ग के बेसिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्तियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शहरी एवं ग्रामीण, सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति के लिये बेसिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्तियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

जैन, शीतल (2009) –

''सरकारी व निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन''।

अध्ययन का उद्देश्य सरकारी व निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना था। दत्त संकलन के लिये स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया तथा पाया कि सरकारी विद्यालयों के शिक्षक व निजी विद्यालयों के शिक्षकों में शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर होता है। अध्यापिकाओं में 3 क्षेत्रों में सार्थक अंतर नही पाया किन्तु सहायक सामग्री व नवाचार और छात्रों के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर पाया गया।

लेसिंग, कॉर्ली जे. (2009) -

''टीचर्स एटीट्यूड टूवर्ड्स द गिफ्टिड चिल्ड्रन, द इम्पोरटेन्स ऑफ प्रोफेशनल डेवलपमेन्ट एण्ड स्कूल''।

इस अध्ययन में आस्ट्रेलिया के प्राईमरी शिक्षकों में से 126 शिक्षकों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया। इनका चयन 8 विद्यालयों से किया गया तथा इन्होनें पाया कि जिन शिक्षकों को ट्रेनिंग के समय गिफ्टेड बच्चों से सम्बन्धित शिक्षा दी गई, उनकी अभिवृत्ति छात्रों के प्रति दूसरे शिक्षकों की अपेक्षा सकारात्मक रही।

चौधरी, के.के. एवं कुमार, अरविन्द (2011) –

''अशासकीय एवं विद्याभारती संचालित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन''।

शोध का उद्देश्य अशासकीय एवं विद्याभारती द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकां पुरूष व महिला शिक्षकों तथा शहरी व ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना। इसके लिये उत्तरप्रदेश राज्य के रूहेलखण्ड क्षेत्र के अशासकीय एवं विद्याभारती संचालित माध्यमिक विद्यालय के 428 शिक्षकों का चयन किया गया। शोध निष्कर्ष के अनुसार दोनों प्रकार के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है। अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की तुलना में विद्या भारती द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों में शिक्षण अभिवृत्ति सार्थक रूप से अधिक पाई गई। दोनों प्रकार के विद्यालयों में कार्यरत शहरी/ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में निवास स्थान के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

Mucella Ulug, Melis Seray Ozden and Ahu Eryilmaz (2011) -

“The effects of teachers’ attitudes on students’ personality and performance.”

The emphasize of student centered educational topics is usually on the effect of teachers’ attitudes on students’ academic success with a lack of lifespan developmental perspective. A teacher with his teaching methods and furthermore with his attitudes and behaviours, provides his students to gain a mentally, healthy personality. This is a prepatory study to uncover how attitudes of teachers affect the personalities and performances of students. Sample group of research consist of 353 students from different departments of Istanbul Kultur University and Maltepe University, Istanbul. By giving a questionnaire the students were asked to give response of their primary school, secondary school, high school and university teachers’ positive and negative attitudes and behaviours as well as to tell how it effects their personality development and performances. The most important findings of the research evidenced that teachers’ positive attitude have positive influence on students’ personality as well as their performances.

सिद्धार्थ गतविसदया (2012)-

“Co-relation Between Teacher Effectiveness and Teaching Aptitude.”

इन्होने निष्कर्ष प्राप्त किया कि शिक्षण– प्रभवशीलता व शिक्षण अभिवृत्ति में सह–सम्बन्ध है तथा यदि किसी कारण से शिक्षक की शिक्षण अभिवृत्ति प्रभावित होती है तो उसका प्रभाव शिक्षण प्रभावशीलता पर भी पड़ता है।

डी. सतारामन एवं एस. राजशेखर (2013):

“Teaching Effectiveness of B.Ed Student Teacher as Related to Their Teaching Aptitude and Academic Performance (Department of Education: Annamalai University).”

इन्होने निष्कर्ष प्राप्त किया कि शिक्षण– प्रभवशीलता व शिक्षण अभिवृत्ति में सह–सम्बन्ध है तथा यदि किसी कारण से शिक्षक की शिक्षण अभिवृत्ति प्रभावित होती है तो उसका प्रभाव शिक्षण प्रभावशीलता पर भी पड़ता है।

2.11 ***शिक्षण प्रभावशीलता से सम्बंधित साहित्य अध्ययन*** :–

चेस्टर, (1967) –

किसी राष्ट्र का स्तर उसकी जनता से आंका जाता है। जनता का स्तर वहाँ की शिक्षा प्रणाली से आंका जाता है तथा शिक्षा प्रणाली का स्तर उसके शिक्षकों के स्तर से आंका जाता है। शिक्षा की कोई भी प्रणाली उसके शिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकती। किसी शाला का विकास अथवा उसकी सफलता प्रायः शिक्षकों के ज्ञान, व्यक्तित्व, शिक्षण कौशल पर आधारित होती है। ऐसा माना गया है कि शाला में जैसे शिक्षक होते हैं वैसी ही उनको छाया विद्यार्थियों पर पड़ती है। एक अच्छा शिक्षक कक्षा में प्रभावशाली वातावरण बनाने में सफल होता है तो दूसरी ओर शाला परिवेश के बाहर भी इसका प्रभाव प्रतिबिंबित होता है।

बर्टन (1970) के अनुसार–

शिक्षण उद्दीपन, निर्देशन, दिशा और अधिगम को प्रोत्साहित करने को कहते हैं। जो शिक्षक विद्यार्थियों को उद्दोपित एवं प्रेरित करता है और उनकी योग्यताओं, कौशलों, अभिवृत्तियों एवं ज्ञान के विकास के लिए मार्गदर्शन देता है, वह सबसे प्रभावशाली शिक्षक होता है।

एक अच्छे एवं प्रभावशाली शिक्षक में निम्न ***विशेषताएँ*** आपेक्षित हैं :–

(i) विषय वस्तु को प्रस्तुत करने की योग्यता,

(ii) उच्च चरित्र,

(iii) उच्च निर्णायक क्षमता,

(iv) विद्यार्थियों से प्रेम,

(v) व्यक्तिगत आकर्षण,

(vi) अच्छी अभिवृत्ति,

(vii) सामाजिकता,

(viii) अभिभावक की तरह प्रेम प्रदर्शित करने की योग्यता,

(ix) प्रोत्साहित करने की क्षमता।

यद्यपि चार प्रकार के ***शिक्षक की श्रेणी*** पायी जाती है :–

(i) जो मात्र बताता है वह निम्न स्तरीय शैक्षणिक प्रभावशीलता वाला शिक्षक होगा।

(ii) जो मात्र समझाता है वह एक सामान्य स्तरीय शैक्षिक प्रभावशीलता वाला शिक्षक होगा।

(iii) जो प्रदर्शन द्वारा शिक्षण करता है वह अच्छी शैक्षिक प्रभावशीलता वाला शिक्षक होगा।

(iv) उच्च शैक्षिक प्रभावशीलता वाला वह शिक्षक होगा जो शिक्षण के साथ विद्यार्थियों को प्रेरित भी करता हो।

(v) परन्तु शैक्षिक प्रभावशीलता को सबसे ज्यादा प्रभावित करने वाला कारण सामाजिक परिवेश में विद्यमान राजनैतिक हस्तक्षेप हो गया है। एक ओर जहाँ देश के विकास में शिक्षा को अधिक महत्व प्रदान करने की बात सोची व कही जाती है तो दूसरी और राजनैतिक हस्तक्षेप में इसे निम्नतम स्थान प्रदान किया गया है। ऐसी दशा में शिक्षकों का समाज में जहाँ एक और स्थान गिरा है, वहीं सामाजिक परिवेश में उनका सम्मान भी गिरता जा रहा है। आज शिक्षकीय कार्य में ऐसे व्यक्तियों का पदार्पण हो रहा है, जो सभी क्षेत्रों में असफल होते हुए भी सफलता पाने तक इस कार्य में अंशकाल के

लिए कार्यरत हो जाते है, जिनका इस कार्य से कोई मानसिक जुड़ाव नहीं होता है। दूसरी ओर राज्य शासन द्वारा वेतन प्रणाली की विसंगतियाँ शैक्षिक वातावरण को दूषित करने में अहम् भूमिका निभा रही ह ं। य विसंगतियाँ नियुक्ति की नियमावली, नियुक्ति की विधि, पदोन्नति, दूरस्थ ग्रामीण शाला आदि के कारण उत्पन्न हुई हैं। इतना ही नहीं विभिन्न शालाओं में इच्छानुसार पदस्थापना हेतु स्थानान्तरण में प्रचलित भ्रष्टाचार शिक्षकों के शैक्षिक प्रभावशीलता को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर रहे है। इस प्रभावित शैक्षिक प्रभावशीलता के कारण छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित हुए बिना नहीं रहती।

चितकारा (1971) –

शिक्षण की प्रभावशीलता की कार्य प्रणाली का गणित विषय की उपलब्धि पर एक अध्ययन। इसमें पाया कि उच्च शिक्षण प्रभावशीलता गणित की उपलब्धि को बढ़ाती है।

शिक्षकों की शैक्षिक प्रभावशीलता उनके शिक्षण कौशल, शिक्षण विधियाँ, ज्ञान, उनकी मनःस्थिति, उनकी समयोजन क्षमता से सम्बंधित होता है। ***मार्श एवं विल्डर*** (1954), ***केस्टेयर*** (1954), ***रेयान्स*** (1950), ***टॉमिल्सन*** (1955) के अध्ययनो ने उपर्युक्त अनुमानों को प्रतिस्थापित कर परिणाम प्राप्त किया है। ***मिट्जेल एवं ग्रास*** (1956) एवं ***चेस्तर*** (1967) ने शिक्षकों की प्रभावशीलता एवं विद्यार्थियों के विकास का समीक्षात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन में भी यह निष्कर्ष निकला कि विद्यार्थी के व्यवहार में परिवर्तन का आधार शिक्षकों की शैक्षणिक प्रभावशीलता है।

देवनाथ (1971) –

ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि आयु, अनुभव, शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण का शिक्षण प्रभावशीलता से सार्थक सम्बन्ध है, जबकि उच्च शिक्षण प्रभावशीता का अनुकूल अभिवृत्ति एवं उच्च समायोजन से सम्बन्ध पाया गया।

शर्मा (1971) –

अपने अध्ययन में शिक्षण प्रभावशीता का शिक्षण अभिरूचि, शैक्षिक ग्रेड, सामाजिक आर्थिक स्तर, शैक्षिक अनुभव एवं आयु के सन्दर्भ पर एक अध्ययन किया एवं पाया कि ये चर शिक्षक प्रभावशीलता को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं।

धर एवं जैन (1976) –

अध्ययन में यह ज्ञात हुआ कि शिक्षकों की कार्य में लगन एवं कार्य संतुष्टि में उच्च धनात्मक सह सम्बन्ध होता है।

गुप्ता (1976) –

शोध अध्ययन में पाया गया कि उच्च प्रभावी शिक्षक, अधिक बुद्धिमान, अधिक अहम्शील, अधिक स्वस्थायीभाव, हीन भावना से ग्रसित होते हैं। ऐसे शिक्षकों में बुद्धि एवं ज्ञान चरम सीमा पर पाए गए।

ग्रेवाल (1976) –

शिक्षकों की शैक्षणिक प्रभावशीलता का अन्य शैक्षिक अंशों के सम्बन्ध पर अध्ययन किया तथा पाया कि शैक्षिक अंशों के साथ उच्च सह सम्बन्ध था। शिक्षक प्रभावशीलता के मुख्य तत्व घर, स्वास्थ्य, सामाजिक संवेगात्मक एवं कुल समायोजन, डामिनेन्स, सबमिशन और शाब्दिक बुद्धि तथा अशाब्दिक बुद्धि है।

सिंह (1976) ***एवं पद्म्नाभैया*** (1986) –

शिक्षण प्रभावशीलता पर अध्ययन किया। निष्कर्ष यह रहा कि उच्च प्रवत्ति के शिक्षण प्रभावशीलता वाले शिक्षकों में शैक्षिक उपलब्धि, अधिक पायो जातो है। ऐसे शिक्षकों में संगठनात्मक प्रवृत्ति, तार्किक एवं आपस में व्यवस्थित पायी गयी जबकि सामाजिक व्यवहार एवं समायोजन उच्च स्तरीय ज्ञात हुआ है।

भगोलीवाल (1982) –

अध्ययन के परिणाम स्वरूप अधिक प्रभावशाली शिक्षक में उच्च स्तरीय विभेदीकरण और ज्ञानात्मक एवं प्रत्यक्षीकरण प्रणाली में एकता प्राप्त हुई। इनमें उच्च स्तर की मूल चिंतन एवं कल्पना होती है। संवेगात्मक परिस्थिति में अधिक प्रभावशाली शिक्षक अनावश्यक रूप से व्यवधान उत्पन्न नहीं करते।

गुप्ता (1982) –

लिंग एवं आर्थिक स्तर के आधार पर जिज्ञासा और उपलब्धि के साथ सम्बन्ध का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि –

(i) लड़के, लड़कियों की तुलना में अधिक उपलब्धि प्रेरित होते हैं।

(ii) लड़कों के प्रकरण में जिज्ञासा और उपलब्धि प्रेरणा के मध्य नकारात्मक सह–सम्बन्ध होता है।

(iii) विद्यार्थी के उच्च शैक्षणिक उपलब्धि जिज्ञासा के निम्न स्तर को दर्शाता है।

(iv) निम्न आर्थिक स्तर वाले समूह में जिज्ञासा और उपलब्धि प्रेरणा के साथ धनात्मक सह सम्बन्ध पाया गया।

वाल्टर (1985) –

शिक्षकों के निर्णय लेने की क्षमता में शिक्षकों के ज्ञान के सम्बन्ध पर एक अध्ययन किया। इस अध्ययन में शिक्षकों के प्रत्यय और प्रभावशाली शिक्षण से सम्बन्धित व्यवहार के सम्बन्ध पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि शिक्षकों का ज्ञान शिक्षकों के प्रत्यय को बढ़ाता है जिससे उनकी शिक्षण क्षमता विकसित होती है तथा निर्णय लेने में अग्रसर रहती है।

वाली **(**1985) –

शिक्षण प्रभावशीलता के शैक्षिक सम्बन्ध के कारणों का अध्ययन किया है एवं शिक्षण प्रभावशीलता का यह अध्ययन सामाजिक सह–सम्बन्ध और विभिन्न सामाजिक स्थिति, शिक्षक की शैक्षिक पृष्ठभूमि, अनुभव, योजना, कारण, भूल प्रेरक प्रवृत्ति, मूल्य आवश्यकताओं, कार्य संतुष्टि और शैक्षिक प्रभावशीलता के साथ किया गया। इस अध्ययन में निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये गये–

1. शिक्षण प्रभावशीलता में शैक्षिक योग्यता के लिए वेतन, अनुभव, पारिवारिक शिक्षा और आय के स्रोत के साथ सार्थक सम्बन्ध होता है।

2. शैक्षिक विधियों की अभिवृत्ति, प्रजातांत्रिक मूल्य तथा पारिवारिक मूल्य के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है।

3. इस अध्ययन में **6** ***कारक*** पाये गये हैं :–

(i) व्यावसायिक प्रतिष्ठा,

(ii) परोपकारी स्वभाव,

(iii) व्यावसायिक सम्बन्ध,

(iv) प्रजातांत्रिक स्वभाव,

(v) पारिवारिक पृष्ठभूमि,

(vi) विनम्रता।

हुसैन **(**1986**)** –

हाई स्कूल शिक्षक की असंतुलन भूमिका, उनके शिक्षण प्रभावशीलता एवं शैक्षिक विरक्तता के सम्बन्ध मे अध्ययन किया। अध्ययन के ***निष्कर्ष*** में पाया गया कि :–

(i) शिक्षकों द्वारा शिक्षक की आवश्यक भूमिका निभायी नहीं जाती हैं।

(ii) उनकी वास्तविक भूमिका एवं वैचारिक भूमिका में भिन्नता सभी शिक्षकों में सार्थक रूप से नहीं पाई जाती है।

(iii) उच्च असंगत समूह शिक्षक की नैतिकता को पभावित नहीं करते हैं परन्तु निम्न असंगत समूह नैतिकता को प्रभावित करते हैं।

(iv) शिक्षक परिपक्वता पर निम्न असंगत समूह एवं उच्च असंगत समूह में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

(v) यहाँ पर निजी एवं शासकीय शालाओं के शिक्षकों के शैक्षिक गुणों पर विचार करने पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

विल्सन (1986) –

महाविद्यालयी शिक्षकों के अत्यन्त प्रभावशाली शिक्षण का मापन स्टूडेंट डिस्क्रप्शन ऑफ टीचिंग प्रश्नावली के द्वारा किया। इस अध्ययन से जाना कि अत्यधिक प्रभावशाली शिक्षकों का सम्प्रेषण उच्च कोटि का पाया गया और इन दोनों में सार्थक सम्बन्ध प्राप्त हुए।

प्रकाशम (1986) –

शिक्षक प्रभावशीलता का शाला संगठन के कार्यो एवं शिक्षण सामर्थ्य के रूप में अध्ययन किया एवं ***निष्कर्ष*** निकाला कि :–

(i) शिक्षक की शिक्षण सामर्थ्य एवं शिक्षण प्रभावशीलता खुले वातावरण में शाला स्वायत्तता, पारिवारिक एवं नियंत्रित पारिवारिक बंद वातावरण की तुलना में अधिक अच्छी होती है।

(ii) शहरी क्षेत्र में कार्य कर रहे शिक्षक की शिक्षण दक्षता और शिक्षण प्रभावशीलता अन्य क्षेत्रों में कार्य कर रहे शिक्षक से बेहतर होती है।

(iii) जो शिक्षक शासकीय और अशासकीय विद्यालय में कार्य करते हैं, उनकी शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

(iv) विभिन्न संगठन के वातावरण में शिक्षक की शिक्षण प्रभावशीलता एवं शिक्षण सामर्थ्य में धनात्मक सम्बन्ध होता है।

(v) विभिन्न राष्ट्र एवं स्कूल संगठन के वातावरण में शिक्षण सामर्थ्य का प्रभाव पाया जाता है।

ओकेच (1988) –

विद्यार्थियों के लिए शिक्षकों की अभिवृत्ति का प्रमुख तत्व प्रभावशाली शिक्षण पर एक अध्ययन किया। विद्यार्थियों द्वारा शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और शिक्षकों की अभिवृत्ति के सन्दर्भ में दत्तों का संकलन किया गया।

इस अध्ययन में पाया गया कि विद्यार्थियों की प्रेरणा को व्यवस्थित निर्देश और आवश्यक बिन्दुओं की चर्चा करने सें बढ़ाया जा सकता है। यह दोनों चर प्रभावशाली शिक्षण से सार्थक सम्बन्ध रखते हैं।

मेरेडिथ (1988) –

अनुदेशन, प्रभावशीलता और सुधार की आवश्यकता के सन्दर्भ में विद्यार्थियों से रेटिंग कराई गयी। इस अध्ययन में प्रभावशीलता का पूर्व अनुमान मालूम करना अधिक उपयोगी पाया गया। परन्तु सुधार के लिए पूर्व अनुमान अधिक उपयोगी नहीं माना गया। विश्लेषण में सुधार के लिए रूचि, अवधान, मूल्य और विवरण की स्पष्टता को प्रमुख बिन्दु माना गया।

सिंह (1988) –

शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता और उनकी कार्य सन्तुष्टि पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में पाया कि शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का उनकी कार्य

सन्तुष्टि से धनात्मक सह–सम्बन्ध होता है। कार्य सन्तुष्टि का शिक्षकों की सामाजिक आर्थिक स्तर से भी धनात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया।

डेलगेडो (1988) –

अध्ययन द्वारा पाया कि सामाजिक सांस्कृतिक समायोजन शाला की शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

जार्ज (1988) –

इन्होने केरल राज्य में 10 वर्ष एवं 11 वर्ष के लड़के लड़कियों पर उपलब्धि एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि पिता के शैक्षिक स्तर एवं उन्नति का प्रभाव उनके लड़के लड़कियों पर पड़ता है।

अग्रवाल (1988) –

''अधिक प्रभावशाली और कम प्रभावशाली शिक्षकों के सम्बन्धित कारक और समायोजन समस्या का अध्ययन''।

यह कार्य प्राथमिक स्तर की महिला शिक्षिकाओं पर किया गया है।

इस अध्ययन में पाया गया :–

(i) अधिक प्रभावशाली शिक्षकों में समायोजन समस्या अधिक पाई गई। यह सामाजिक तत्वों के हस्तक्षेप के कारण अधिक पाई गई।

(ii) कम प्रभावशाली शिक्षकों में संवेगात्मक समस्यायें अधिक पाई गई।

मोरे (1988) –

शिक्षण प्रभावशीलता, शिक्षण अभिवृत्ति और व्यक्तित्व के गुणों के बीच सम्बन्धों का परीक्षण किया। अनुसंधान के द्वारा यह प्रकाशित किया कि व्यक्तित्व के 16 कारक (आर.बी.कैटल) है, जिसमें से केवल 6 कारक शिक्षण प्रभावशीलता के साथ धनात्मक सह सम्बन्ध है, इनमें बुद्धि सबसे महत्वपूर्ण कारक है।

शिक्षण प्रभावशीलता और शिक्षण योग्यता में धनात्मक सह सम्बन्ध है। शिक्षक के व्यक्तित्व का प्रभाव प्रभावशाली शिक्षण और शैक्षणिक कार्य पर पड़ता है।

अतरिया (1989) –

ने शिक्षकों के मूल्य, कार्य संतुष्टि का उनकी शैक्षणिक प्रभावशीलता से सम्बंधों को महाविद्यालय स्तर पर अध्ययन किया है।

व्यास (1991) –

शिक्षकों की प्रभावशीलता एवं ओरियेन्टेशन प्रोग्राम के सम्बन्ध पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में पाया गया कि जो शिक्षक ओरियेन्टेशन कार्यक्रम ग्रहण करते हैं उनकी प्रभावशीलता में वृद्धि होती है, जबकि इसके विपरीत जिन्होने ओरियेन्टेशन कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी नहीं निभाई, उनकी शैक्षणिक प्रभावशीलता कम पाई गई।

नोटियाल (1992) –

शिक्षक के निष्पादन की दक्षता को उनके मूल्यों, प्रभावशीलता, नैतिक गुणों के सापेक्ष एवं शिक्षक के गुणों का विद्यार्थियों द्वारा आंकलन किया है।

केरोला व भारद्वाज (1993)-

"Classroom Situation of Primary School to Improve Teacher Effectiveness."

कारेला व भारद्वाज ने निष्कर्ष प्राप्त किया कि प्राथमिक कक्षाओं की अव्यवस्थाऐं शिक्षक प्रभावकता पर प्रभाव डालती है।

अब्राहम (1994) –

कॉलेज के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षक प्रभावशीलता पर एक शोध अध्ययन किया। इस अध्ययन में आगरा के 45 महाविद्यालय शिक्षकों का चयन किया गया तथा इन पर ***गुडमिल, मुहार*** एवं ***भाटिया*** का कार्य संतुष्टि मापनी तथा ***कुमार*** एवं ***मुथा*** द्वारा निर्मित शिक्षक प्रभावशीलता मापनी का उपयोग क्रमशः कार्य संतुष्टि तथा शिक्षक प्रभावशीलता के मापन हेतु किया गया। इस अध्ययन से निम्न ***निष्कर्ष*** प्राप्त हुए :–

1. कम एवं अधिक कार्य संतुष्टि वाले शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता में सार्थक अंतर पाया गया।
2. सामान्य एवं उच्च कार्य संतुष्टि प्राप्त शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता भी अधिक पाई गई।

3. इससे यह भी ज्ञात किया गया कि अधिक संतोषी शिक्षक की उत्पादकता भी अधिक होती है जो छात्रों की उपलब्धि से संबंधित है।

विक्टोन एवं कोक (1998)-

"Study of Teacher Effectiveness."

विक्टोन व कोक ने शिकागो के अध्यापकों पर अनुसंधान किया, जिसके आधार पर अध्यापकों में शिक्षण प्रभावशीलता की कमी का कारण शारीरिक, व्यावसायिक तथा व्यक्तिगत असुरक्षा की भावना पाई गई।

माहेश्वरी, पुष्पा (2006)-

"A Case Study of Trible Area of Sambalpur District in Teacher Employment and Teaching Effectiveness at Primary Stage."

इन्होने निष्कर्ष प्राप्त किया कि आदिवासी क्षेत्रों का सामाजिक व आर्थिक वातावरण शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता को प्रभावित करता है।

शर्मा, पी.एस. (2007)-

"The Effect of Teacher Effectiveness on Student Achievements."

इन्होने निष्कर्ष प्राप्त किया कि अध्यापक प्रभावशीलता विद्यार्थियों की उपलब्धियों का सहज मार्ग होती है।

Gaurav Singh and Girijesh Kumar (2009) -

Does IQ Matters to be An Effective Teacher - A Study of Secondary School Teachers –

Objectives -

To compare the teacher effectiveness of secondary school teachers in relation to their sex, medium of instruction and experience.

The research study on secondary school teachers at 10+2 level in Bareilly city. Overall 140 teachers were taken in sample.

Result -

From the interpretation of data and hypotheses testing concluded that teaching effectiveness of secondary school teachers is not affected by sex difference i.e.

Male and Female, medium of instruction i.e. Hindi Medium and English medium and teaching experience of teachers' i.e. experience less than 5 years and experience of 5 years and more.

Ghatvisdava (2012)-

"Co-relation Between Teacher Effectiveness and Teaching Aptitude."

इन्होने निष्कर्ष प्राप्त किया कि शिक्षण– प्रभवशीलता व शिक्षण अभिवृत्ति में सह–सम्बन्ध है तथा यदि किसी कारण से शिक्षक की शिक्षण अभिवृत्ति प्रभावित होती है तो उसका प्रभाव शिक्षण प्रभावशीलता पर भी पड़ता है।

पंकज शर्मा (2012) –

शिक्षण प्रभावशीलता के तथ्य – शिक्षक का व्यक्तित्व शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक है। शिक्षक को स्वस्थ प्रसन्नचित, मृदुभाषी तथा स्पष्टवादी होना चाहिए। कक्षा में उसका व्यवहार मित्रवत हो, पिता के समान सभी छात्रों पर समान भाव रखने वाला हो, उनका सच्चा शुभचिन्तक हो, उनकी समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुने और समुचित समाधान करे और सम्बन्धी रचनात्मक कार्यो में सक्रिय रूप से भाग ले। समय समय पर खेलकूद में भी बच्चों का मार्गदर्शन करना चाहिए। उनके साथ अन्ताक्षरी, गीत, कविता, कहानी आदि में सहयोगी की भूमिका अदा करनी चाहिए। छात्रों में ऐसे शिक्षक लोकप्रिय हो जाते हैं, बालक के व्यक्तित्व पर शिक्षक का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। अतः एक शिक्षक को बहुआयामी व्यक्तित्व का धनी होना चाहिए यह उसके प्रभावी शिक्षण का एक अनिवार्य पहल् है।

2.12 ***शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन*** :–

रॉयजीवाला (1976) –

शिक्षकों की ***फ्लेंडर्स*** अन्तः क्रिया श्रेणी प्रणाली में अप्रत्यक्ष व्यवहार छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को धनात्मक रूप से बढ़ाता है।

तारीम (1980) –

शिक्षक प्रशिक्षण, शिक्षक व्यवहार अथवा शिक्षक अभिक्षमता एवं छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सह सम्बन्ध पाया जाता है।

रेड्डी (1978) –

उच्चतर माध्यमिक शाला के विद्याथियों की शैक्षणिक उपलब्धि एवं शैक्षणिक समायोजन के सम्बन्धों का लम्बवत अध्ययन। कक्षा आठवीं के 250 विद्यार्थियों के प्रतिदर्श को याद्र विधि द्वारा ग्रामीण, अर्ध शहरी एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों को, कक्षा दसवीं पहुंचने तक, चयनित किया गया। राव की शैक्षिक उपलब्धि, मापनी, वाक्य पूर्ति यंत्र एवं स्व सीखने की उपलब्धि, बालक, शिक्षक आदि के अभिज्ञात प्रयोग किए गए। रावेन का मानक प्रोग्रेसिव मेट्रीक्स एवं राव के सामाजिक आर्थिक स्तर मापक और व्यक्तिगत डाटा शीट का प्रयोग किया गया एवं ***पाया*** गया कि :–

(i) शैक्षिक समायोजन एवं शैक्षिक निष्पादन के मध्य सार्थक सम्बन्ध था।

(ii) मानसिक योग्यता और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

(iii) शैक्षिक समायोजन स्तर को बढ़ाने के साथ कम से कम स्तर पर योग्यता एवं मानसिक योग्यता में वृद्धि का सीधा सम्बन्ध पाया गया।

(iv) शैक्षिक समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य विद्यार्थियों के स्वसीखना, उपलब्धि, बालक, शिक्षक और उनके शैक्षणिक निष्पादन के साथ इनका धनात्मक सह–सम्बन्ध होता है।

(v) कक्षा नवमीं एवं आठवीं के विद्यार्थियों एवं बालकों के सामाजिक आर्थिक स्तर का उनके शैक्षिक निष्पादन के साथ सार्थक सम्बन्ध नहीं होता है, लेकिन वहीं, कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों का उच्च सामाजिक, आर्थिक स्तर अच्छा निष्पादन करता है।

बिष्ट (1980) –

शाला वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि (आयु समुह 13–17) व तनाव पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य ***उद्देश्य*** था:–

(i) विद्यार्थियों के तनाव के तीन प्रमुख प्रभावी चरों को प्रदर्शित करना है, जैसे शैक्षिक उपलब्धि की आवश्यकता, शालेय वातावरण, विभिन्न लिंग भेद में अंतर।

(ii) शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक तनाव का आयु के आधार पर भी इन चरों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

(iii) छात्राओं के प्रतिचयन में शालेय वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि में ऋणात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया।

(iv) शालेय वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि के मध्य आंशिक सम्बन्ध पाया गया।

खन्ना (1980) –

जूनियर शालाओं के सामाजिक–आर्थिक परिवेश और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन किया एवं ***पाया*** :–

(i) सामाजिक–आर्थिक परिवेश का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ धनात्मक सम्बन्ध होता है।

(ii) विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक–आर्थिक परिवेश के साथ सम्बंधित है, जो ग्रामीण की तुलना में शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए यह सह–सम्बन्ध अधिक संगत है।

(iii) ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर का धनात्मक सम्बन्ध पाया गया।

(iv) विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर पर अलग–अलग परिवार के विद्यार्थियों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक सम्बन्ध होता है।

(v) अशिक्षित पालकों के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ सामाजिक आर्थिक स्तर पर सार्थक धनात्मक सम्बन्ध पाया गया।

(vi) जूनियर शाला के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके सामाजिक आर्थिक स्तर के साथ गहरा सम्बन्ध पाया गया।

गांगुली (1981) –

तनाव, जिज्ञासा और शैक्षिक उपलब्धि का सम्बन्ध होता है। निम्न जिज्ञासा वाले विद्यार्थी का निष्पादन क्षमता के साथ सार्थक अंतर पाया जाता है।

गाखर (1986) –

विभिन्न पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके व्यक्तित्व और बुद्धिमता के सह सम्बन्ध पर एक अध्ययन किया गया।

पाया कि व्यक्तित्व की तुलना में सभी पाठयक्रम– विज्ञान, कला, वाणिज्य और गृह विज्ञान समूह में बुद्धिमानी का शैक्षिक उपलब्धि के साथ अधिक सह सम्बन्ध है। शेष 3 समूह के विद्यार्थियों की तुलना में वाणिज्य संकाय के विद्यार्थी अधिक बुद्धिमान होते है एवं उपलब्धि में भी उच्च हैं। गृह विज्ञान संकाय के विद्यार्थी कला संकाय के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च बुद्धि एवं अधिक उपलब्धि वाले होते हैं।

जगमोहन (1985) –

शोध अध्ययन में सामाजिक आर्थिक स्तर और छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध पर एक अध्ययन किया। इस अध्ययन में छात्रों क सामाजिक आर्थिक स्तर और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सह सम्बन्ध पाया गया, जिससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि जिन परिवारों की उच्च आय है उनके बालक अधिक एवं अच्छी सुविधा के रहते उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करते है।

संधू (1986) –

शोध अध्ययन में अनुसूचित जाति, पिछड़ा वर्ग एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की बुद्धि एवं शैक्षिक निष्पादन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

राव (1986)–

हाई स्कूल के विद्यार्थी जो कि अनुसूचित जाति एवं जो अनुसूचित जाति के नहीं है, उनकी ग्रहण क्षमता, परीक्षण उत्सुकता, बुद्धिमानी और उपलब्धि का एक तुलनात्मक अध्ययन किया गया। भारतीय समूह के निम्न मध्य वर्ग और निम्न स्तर के पुरूष एवं महिला अनुसूचित जाति एवं गैर–अनुसूचित जाति वाले विद्यार्थियों के आयु स्तर, बालकों की शिक्षा, बालकों का व्यवसाय के संदर्भ पर शोधकार्य किया। इस अध्ययन में ***शर्मा*** (1976) के स्वधारणा अनुसूची को प्रशासित किया एवं ***सी.डी. स्पील बर्गर*** (1980) के द्वारा परीक्षण जिज्ञासा मापनी का हिन्दी रूपान्तरण और ***रावेन*** का पोग्रेसिव मेट्रीसेस को प्रशासित किया।

अध्ययन का मुख्य विषय यह रहा– अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों में, जो अनुसूचित जाति के नहीं है, उनकी तुलना में अधिक स्व ग्रहण करने वाले उपलब्धि भिन्नता के सार्थक परिणाम प्रदर्शित करते हैं।

कारपेंटर एवं हैडन (1987) –

आस्ट्रेलिया में लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन किया। इसमें यह पाया गया कि एकलिंगी शाला शिक्षा एवं सह–शिक्षा वाली शाला की तुलना में अंतर पाया गया।

कुरडेक एवं सिन्क्लेयर (1988)–

इन्होने आठवीं स्तर के विद्यार्थियों की पारिवारिक संरचना, लिंग का उनके शालेय परिवेश का शैक्षिक निष्पादन सम्बन्ध पर अध्ययन किया। इसमें ***पाया*** गया किः–

(i) लड़कियों की तुलना में लड़के अधिक तनाव रहित होते हैं। पारिवारिक संरचना की दृष्टि से केवल 17% विद्यार्थियों में शैक्षिक निष्पादन में विभिन्नता पाई गई। इसका प्रभाव शालेय वातावरण के कारण हुआ।

(ii) पारिवारिक संरचना में संयुक्त रूप से पारिवाारिक वातावरण और लिंग का प्रभाव 17% विद्यार्थियों में शैक्षिक निष्पादन में विभिन्नता लाता है।

हैनरी पाल (1989) एवं ***जे.होलेन्डस*** (1985) –

परिकल्पना का परीक्षण किया कि शैक्षिक उपलब्धि का व्यक्तिगत वातावरण के साथ धनात्मक सह–सम्बन्ध होता है। विषय को सामंजस्य एवं असामंजस्य के रूप में वर्गीकृत किया और सहसम्बंधित ग्रेड बिंदु औसत विज्ञान का एवं प्रत्येक विषय के लिए सहसम्बन्धित ग्रेड बिंदु को अंकित किया गया।

यह पाया कि सामंजस्य विषय उच्च सामूहिक आलेख एवं विज्ञान व्यवहार के साथ सम्बन्धित ग्रेड बिंदु उच्च आलेख के साथ होता है।

अलसकर **(1989)** –

विद्यार्थियों के मध्य ग्लोबल स्व–मूल्यांकन शैक्षिक सामर्थ्य और उपलब्धि की महत्ता का मापन किया। यह पाया कि स्वतंत्र विधि का उपयोग उपलब्धि मापने के लिए किया गया।

राय **(1990) –**

शिक्षक के वाचिक व्यवहार में परिवर्तन और उसका विद्यार्थियों की उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया।

मधुबाला **(1990) –**

विभिन्न बुद्धि स्तर के 10+2 के विद्यार्थियों का कक्षा में सीखने वाले व्यवहार का और उनके अर्थशास्त्र विषय में उपलब्धि के सापेक्ष उनकी समस्याओं के अध्ययन पर शोध कार्य किया।

बाजवा एवं सेठिया **(1994) –**

शैक्षिक निष्पादन का बुद्धि, स्वधारणा और उपलब्धि पर एक अध्ययन किया गया। इस अध्ययन से यह ***निष्कर्ष*** निकाला गया कि –

(i) विद्यार्थी की बुद्धि और स्वधारणा के साथ धनात्मक सम्बन्ध होता है।

(ii) विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन का उनकी उपलब्धि के साथ धनात्मक और सार्थक सम्बन्ध होता है।

(iii) विद्यार्थियों क शैक्षिक निष्पादन का बुद्धि के साथ सम्बन्ध पाया गया।

देशपाण्डे **(1996) –**

विद्यार्थियों के विभिन्न चर जैसे बुद्धि, उपलब्धि की आवश्यकता, अध्ययन आदत, विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति, शैक्षिक सहायता जो शाला द्वारा मुहैया की जाती है। इसका प्रभाव विद्यार्थियों की उपलब्धि पर निर्भर करता है।

पटेल एवं पटेल **(1996) –**

विद्यार्थियों की अध्ययन आदत की खोज की। इस अध्ययन का स्तर, अध्ययन आदत का प्रभाव निम्न शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। खोज द्वारा ***पाया*** गया कि –

(i) विद्यार्थियों की अध्ययन आदत उच्च एवं निम्न सामान्य योग्यता वाले विद्यार्थियों में सार्थक अंतर नहीं दिखाइ देता।

(ii) मध्यमान उपलब्धि अंक का उनके विद्यार्थियों के उच्च एवं निम्न सामान्य योग्यता का उनके मध्यमान उपलब्धि अंक में सार्थक अंतर नहीं होता है।

(iii) लड़के एवं लड़कियों के मध्यमान उपलब्धि स्कोर के मध्य सार्थक अंतर नहीं दिखायी देता है।

(iv) अच्छे एवं बुरे आदत वाले विद्यार्थी के मध्यमान उपलब्धि अंक में कोई अंतर नहीं होता है।

ज्ञानानी एवं अग्रवाल (1998) –

कक्षा–कक्ष वातावरण, शिक्षिकों के नेतृत्व व्यवहार का प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर ज्ञात किया। इस अध्ययन हेतु दो प्रकार के न्यादर्श संकलित किये गए–

(1) प्रशिक्षणार्थी एवं

(2) शिक्षक।

(i) इस अध्ययन में ***जोगी*** एवं अन्य द्वारा निर्मित कक्षा कक्ष वातावरण के संदर्भ में विद्यार्थियों का प्रत्यक्षीकरण के परीक्षण का उपयोग किया गया।

(ii) नेतृत्व व्यवहार के मापन हेतु ***सिंग एवं सिंग*** द्वारा निर्मित नेतृत्व व्यवहार विवरण प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

(iii) शिक्षकों की अपेक्षाओं के संदर्भ में ***ज्ञानानी एवं अग्रवाल*** द्वारा निर्मित शिक्षक अपेक्षा मापनी का उपयोग किया गया।

(iv) शैक्षिक उपलब्धि के मापन के लिए सभी सेमेस्टर के अंकों का संकलन उस शाला के कार्यालय द्वारा प्राप्त किया गया तथा प्रत्येक न्यादर्श के प्राप्त अंकों का मध्यमान निकाल कर एक मूल अंक इस न्यादर्श हेतु प्रस्तुत किया गया।

निष्कर्ष में यह पाया गया कि कक्षा कक्ष वातावरण, नेतृत्व व्यवहार, शिक्षकों की अपेक्षा का सीधा सम्बन्ध शैक्षिक उपलब्धि से है।

ताज (1999) –

किशारों की उपलब्धि पर सामाजिक कक्षा, पाल्य अभिभावक अन्तःक्रिया, आश्रित व्यवहार और शाला प्रबंधन के प्रभाव पर अध्ययन किया, जिसमें 98 छात्र–छात्राओं का विभिन्न प्रकार के प्रबंधन वाले शालाओं से चयन किया। प्राप्त आंकड़ों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन निकाल कर टी मूल्य ज्ञात किया गया।

इस अध्ययन में पाया कि स्वतंत्र चर (सामाजिक कक्ष, पाल्य अभिभावक अन्तः क्रिया, आश्रित व्यवहार, शाला प्रबंधन) का सार्थक प्रभाव किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है, जबकि लिंग भिन्नता कोई सार्थक अन्तर प्रदर्शित नहीं कर पाई।

सुनीता एवं मयूर (1999) –

शालेय स्तर पर विद्यार्थियों के पारिवारिक तत्वों का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन में 10 शाला से 120 छात्रों का, जो नवीं तथा दसवीं कक्षा में अध्यनरत थे, चयन किया।

प्राप्त आंकड़ों से सांख्यिकीय विश्लेषण उपरान्त निष्कर्ष प्राप्त किया गया। इस अध्ययन में पाया कि पिता तथा माता का व्यवसाय तथा उनकी शैक्षणिक योग्यता छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि से उच्च सार्थक सम्बन्ध रखती है।

सेल्वास एवं साउंड्रावल्ली (2001) –

उच्चतर माध्यमिक स्तर की समस्याएँ एवं उनकी उपलब्धि पर अध्ययन किया। बादामी द्वारा निर्मित विद्यार्थी समस्या मापनी का उपयोग समस्याओं के मापन हेतु प्रशासित किया गया। इस अध्ययन में विद्यार्थियों की अर्द्धवार्षिक परीक्षा के अंकों को उनकी शैक्षिक उपलब्धि के परिणाम मान कर सांख्यिकीय उपचार किया गया। इस अध्ययन से प्राप्त ***निष्कर्ष*** इस प्रकार है :–

(i) उच्चतर माध्यमिक शाला के छात्रों एव छात्राओं के मध्य आर्थिक, शैक्षिक एवं व्यावसायिक समस्याओं में सार्थक अंतर परिलक्षित हुआ।

(ii) छात्रों एवं छात्राओं के मध्य धार्मिक समस्या पर साथक अंतर नहीं पाया गया।

(iii) उच्चतर माध्यमिक शाला की विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनके आर्थिक, शैक्षिक एवं व्यावसायिक समस्या के प्राप्तांकों के मध्य सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

(iv) जबकि उच्च माध्यमिक शाला के विद्यार्थियों की शक्षिक उपलब्धि एवं धार्मिक समस्या के प्राप्तांकों के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया।

गेरा एवं आहुजा (2001) –

नवीं कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और कक्षा कक्ष वातावरण और विद्यार्थियों की शैक्षिक तनाव के सम्बन्ध पर एक अध्ययन किया। इस अध्ययन में यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया कि नवीं कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर कक्षा कक्ष वातावरण एवं शैक्षिक तनाव का क्या प्रभाव पड़ता है।

इस अध्ययन में विद्यार्थियों के गणित विज्ञान और आंग्ल भाषा के अंकों का विश्लेषण हेतु संकलन किया गया। इस अध्ययन में 3+3 प्रसरण विश्लेषण ज्ञात किया।

इस अध्ययन के मुख्य ***निष्कर्ष*** इस प्रकार है:–

(i) सामान्य कक्षा–कक्ष वातावरण एवं निम्न तनाव स्तर उच्च शैक्षिक उपलब्धि दिलाने में बाधक नहीं है।

(ii) सामान्य कक्षा–कक्ष वातावरण एवं निम्न तनाव स्तर के विद्यार्थियों को आंग्ल भाषा, गणित एवं विज्ञान में उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त हुई।

शर्मा (2007)-

"The Effect of Teacher Effectiveness on Student Achievements."

इन्होने निष्कर्ष प्राप्त किया कि अध्यापक प्रभावशीलता विद्यार्थयों की उपलब्धियों का सहज मार्ग होती है।

***सुनीता भार्गव एवं संगीता शर्मा* (2012) –**

उद्देश्य –

(i) छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धियों को ज्ञात करना।

(ii) छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

(iii) छात्रों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि में सह–सम्बन्ध ज्ञात करना।

(iv) छात्राओं की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि में सह–सम्बन्ध ज्ञात करना।

निष्कर्ष –

(i) आर्मी स्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों और सरकारी व गैर सरकारी स्कूल के विद्याथियों को शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है परन्तु

आर्मी स्कूल व कॉन्वेंट स्कूलों में सार्थक अन्तर नहीं है। शून्य उपकल्पनाऐं इसी परिमार्जित आधार पर स्वीकृत एवं अस्वीकृत होती है।

(ii) कॉन्वेंट स्कूल की तुलना में सरकारी और गैर सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को शैक्षिक उपलब्धियों से ज्ञात करने पर पता चलता है कि दोनों में सार्थक अन्तर है। अर्थात् कॉवेन्ट स्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियाँ सरकारी व गैर सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों की तुलना में कही श्रेष्ठ है। शून्य परिकल्पना पूर्णरूपेण अस्वीकृत होती है।

(iii) सरकारी व गैर सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों की तुलना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इस संदर्भ में शून्य परिकल्पना स्वीकृत हुई है।

विवेचना –

विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धियों में सहसबन्ध ज्ञात किया गया। इस आधार पर प्राप्त आँकड़ों से ये निष्कर्ष निकाला गया कि अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि में बहुत ही निम्न स्तर का धनात्मक सह सम्बन्ध है। किसी–किसी में ऋणात्मक सह सम्बन्ध पाया गया है।

इससे यह सिद्ध होता है कि अध्ययन आदत ही शैक्षिक उपलब्धि के लिए कोई महत्वपूर्ण कारण नहीं है, जबकि शिक्षाविदों ने इस बात पर जोर दिया है कि विद्यार्थियों को अच्छी उपलब्धि प्राप्त करने के लिए अच्छी आदतों को अपनाना चाहिए।

आँकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अध्ययन आदतों के अलावा अन्य कारक शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव डालते है।

2.13 **सार** :–

शोध में सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन महत्वपूर्ण आधार है। इसमें सम्बन्धित साहित्य का अर्थ, परिभाषा, अध्ययन के लाभ, उद्देश्य, महत्व, साहित्य का अभिज्ञान, अध्ययन की उपादेयता सूचनाओं के स्त्रोत का अध्ययन किया गया है तथा शैक्षिक अभिवृत्ति, शिक्षण प्रभावशीलता व शैक्षिक उपलब्धि में भारत व विदेशों में किए गए सम्बन्धित साहित्य का संकलन किया गया है।

अध्याय–तृतीय
शोध अध्ययन की विधि एवं प्रक्रिया

धर्मएव हतो हन्ति, धर्मा वक्षति रक्षितम्।

तस्या द्धर्मो न हन्तव्यो मानो धर्मो बधरवषीत्।।

महाभारत

अध्याय – तृतीय
शोध अध्ययन की विधि एवं प्रक्रिया

3.1 *प्रस्तावना* :–

अनुसंधान की सफलता उसकी योजना पर निर्भर करती है, यह योजना जितनी समुचित वस्तुपरक होती है, शोध के परिणाम उसी अनुपात में यथार्थ परक होते है। पूर्व में भी शोध अभिकल्प तैयार कर लेना एक अनिवार्य आवश्यकता मानी जाती है।

अनुसंधान के लिए विधि, उपकरण तथा न्यादर्श का चयन एक महत्वपूर्ण चरण है। शोध कार्य के लिए यदि उपयुक्त विधि का चयन नहीं किया जाता है तो सम्पूर्ण शक्ति, समय एवं साधनों का उपयोग एक निष्फल प्रयास बन कर रह जाता है।

शोधकार्य को प्रभावशाली, वस्तुनिष्ठ और उद्देश्य परक बनाने के लिए शोध विधि, शोध उपकरण, न्यादर्श तथा न्यादर्श चयन प्रक्रिया का स्पष्ट होना आवश्यक है। शोध की विधि और उपकरणों में जितना घनिष्ठ सम्बन्ध होता है, समस्या के विश्लेषण से उतने ही अधिक विश्वसनीय एवं वैध निष्कष प्राप्त होते हैं।

शोधार्थी शोध विषय की योजना का प्रारूप तैयार करके शोध कार्य हेतु दत्त संकलन के लिये उपकरण निर्माण कर पूर्व में ही यह निश्चित कर लेता है कि वह शोध कार्य में कितने शोध उपकरणों का प्रयोग करेगा तथा किस विधि एवं प्रविधि का उपयोग करके दत्त संकलन, विश्लेषण एवं मूल्याकंन कार्य करेगा। इससे यह लाभ होता है कि शोधार्थी को अपने कार्य की क्रमबद्धता एवं वैज्ञानिकता का ज्ञान होता है और अनुसंधान में वैज्ञानिक विधियों का ही प्रयोग होता है। वैज्ञानिक विधि सदैव क्रमबद्ध, सोद्देश्य एवं सुनियोजित होती है।

3.2 ***शोध विधि*** :–

वेब्सटर डिक्शनरी ने प्रविधि की ***परिभाषा*** निम्न प्रकार दी है ::–

"वैज्ञानिक विधि को प्रविधि विज्ञान कहते है।"

यह परिभाषा अधिक व्यापक नहीं है। विधि का अर्थ होता है क्रमबद्धता एवं नियमितता से क्रियाओं को व्यवस्थित करना।

किसी विधि की विभिन्न क्रियाओं के माध्यम से किसी अनुसंधानिक कार्य को प्राप्त किया जाता है। विभिन्न विद्वानों ने इस विषय पर अपने विचार व्यक्त किये है जो कि निम्नलिखित है :–

एम. वर्मा* (1965) *के अनुसार :–

"विधि केवल अप्रत्यय प्रत्यय है जैसे तार्किक चिन्तन में हम विषय तथा विधि को पृथक कर सकते है। वास्तव में ये एक क्रामिक अवशेष है, जिसमें विशेष विधि को उसी प्रकार निर्धारित करता है जैसे उद्दश्य, साधन और अन्तवस्तु को निर्धारित करता है तथा शुद्ध साहित्य में लेखन शैली एवं व्यवहार को निर्धारित करता है।"

एच.एस. ब्राउडो* (1973) *के अनुसार :–

"विधि कार्यो के अनुतक्रम की नियमित संख्या को निर्देशित करता है जो साधारणतः दिशा के द्वारा निर्दिष्ट होता है। शब्द विधि के अन्तर्गत शिक्षण की योजनाएं तथा युक्तियाँ दोनों ही आते हैं, जैसेः– क्या पढ़ाया जाना चाहिये ? इस चुनाव को संयुक्त करता है और वह क्रम जिसमें यह पढ़ाया जाना है।"

***पी.वी. यंग* (1968)** ने भी उल्लेख किया है–

"सर्वोत्तम, अर्थपूर्ण एवं व्यक्त करने की योग्य अध्ययन विधि वही है, जो किसी निश्चित बिन्दु पर दृष्टिगत हो। इसलिए शोधकर्ता अपने लक्ष्य और उद्देश्य प्राप्त करने हेतु योजना एवं प्रक्रिया के निरूपण में प्रविधि, तकनीक एवं उपकरणों को आवश्यक रूप से शामिल करता है।"

***गुड एवं हैट* (1954) *के अनुसार* :–**

''बढई की सन्दूक में प्रत्येक औजार का अपना महत्व होता है। उसी प्रकार से ''शोध प्रविधि'' शोध कार्य को सही मार्ग प्रस्तुत करके शोध की पूर्णता की ओर अग्रसर करती है अर्थात् तथ्य एकत्रित या संकलित सामग्री अध्ययन की सुनिश्चित सामग्री प्रदान करती है।''

3.3 *शोध विधि चयन का औचित्य* :–

वास्तव में किसी समस्या के समाधान में आगे बढ़ने से पूर्व व्यक्ति को उस वस्तु से परिचित होना आवश्यक है, जिसके क्षेत्र में वह कार्य कर रहा है। अतः शिक्षा अनुसंधान में भी प्रारम्भ में किसी घटना, विवरण अथवा विषय के सम्बन्ध को स्पष्ट करना आवश्यक है।

किसी विषय से सम्बन्धी समस्या के समाधान के पूर्व यह प्रश्न उठता है कि उस विषय की वर्तमान स्थिति क्या है? वर्तमान क्रियाओं, दशाओं, अभिवृत्तियों तथा स्थिति के विषय में ज्ञान प्राप्त करना अनुसंधान का मूल उद्देश्य होता है।

वर्णनात्मक शोध का सम्बन्ध तथ्यों को एकत्र करने के साथ–साथ विभिन्न चरों के सम्बन्ध को ढूंढना एवं भविष्यवाणी करना होता है।

***जार्ज जे. मूले* (1970) *के अनुसार* :–**

''अनुसंधान विधियों को तीन मौलिक रूपों में विभाजित किया गया है– सर्वेक्षण, एतिहासिक तथा प्रायोगिक विधियाँ। ऐतिहासिक विधि में अतीत के अवशेषों तथा ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर वर्तमान को समझने का प्रयास किया जाता है।

प्रयोगात्मक विधि घटनाओं के मूलभूत सम्बन्धों की खोज के आधार पर भविष्यवाणी करने और उनके उद्गम के नियंत्रण में प्रयोग की जाती है।

सर्वेक्षण विधि भी वर्तमान से सम्बन्धित है तथा उन प्रयत्नों का विश्लेषण करती है जो अनुसंधान के अन्तर्गत घटना एवं लक्ष्य की स्थिति को निर्धारित करते है।

वर्तमान समस्या के अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है, चूँकि यह विषय (समस्या) विवरणात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत है, अतः सर्वेक्षण विधि इसके लिए उपयुक्त, तर्कसंगत एवं विश्वसनीय विधि है। यहाँ सर्वेक्षण शब्द का तात्पर्य वर्तमान दशा में प्रमाणों के एकत्रीकरण से है। वहीं इसका तात्पर्य संकलन, व्याख्या, तुलना, माप, वर्गीकरण, मूल्याकंन तथा सामान्यीकरण से भी है।

3.4 ***शोध विधि के प्रकार*** :–

शिक्षा विदो ने शोध विधि का वर्गीकरण कई दृष्टिकोणों से किया है। जैसेः– उद्दश्यों के आधार पर, शोध–सामग्री संग्रह की तकनीकों के दृष्टिकोण से, सामग्री के विश्लेषण के आधार पर, चरों के नियंत्रण की मात्रा के दृष्टिकोण से, सामग्री के स्त्रोत एवं अन्य बहुत से आधारों पर, शिक्षाविद् शोध की विधियों के वर्गीकरण के सम्बन्ध में एक मत नहीं है। हांलाकि यह न आवश्यक है और न ही सम्भव, क्योंकि वर्गीकरण का कोई एक आधार नहीं हो सकता। शोध विधियों के निम्न वर्गीकरण को अपनाया गया है :–

1. मूलभूत एवं व्यावहारिक शोध,
2. वर्णनात्मक शोध,
3. ऐतिहासिक शोध,
4. प्रयोगात्मक शोध।

3.5 ***सर्वेक्षण विधि का अर्थ*** :–

''सर्वेक्षण का अर्थ एक आलोचनात्मक कार्य होता है, जिसका उद्देश्य एक क्षेत्र की किसी एक स्थिति अथवा उसके प्रचलन के सम्बन्ध में यथाथ सूचना प्रदान करना होता ह। जैसे– स्कूलों का सर्वेक्षण।''

डिक्शनरी ऑफ सोशियोलॉजी के अनुसार :–

''एक समुदाय के सम्पूर्ण जीवन का उसके किसी पहलू के सम्बन्ध में व्यवस्थित और सम्पूर्ण तथ्य संकलन और तथ्य विश्लेषण का नाम सर्वेक्षण है।''

सर्वेक्षण अनुसंधान के अन्तर्गत प्रायः दो या दो से अधिक चरों से सम्बन्धित घटनाओं के आँकड़ों का संकलन व वर्गीकरण इस उद्देश्य से किया जाता है, ताकि उनके सहचर्यात्मक सम्बन्ध को समझ सकें। इस प्रकार के अनुसंधान का स्वरूप अन्वेषणात्मक रहता है तथा इनके द्वारा व्यापक जनसंख्या का अध्ययन सरलतापूर्वक किया जा सकता है और कम खर्च मं सापेक्षिकतः अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

सर्वेक्षण शोध में सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक चरों के बीच घटनाक्रम, वितरण तथा पारस्परिक अन्तः सम्बन्ध की खोज की जाती है। सर्वेक्षण, शोध की प्रविधियों का व्यवहार परिभाषित वस्तुओं की किसी भी श्रृंखला पर किया जा सकता है। सर्वेक्षण शोधार्थी विशेष रूप से मनुष्य के विश्वासों, मनोवृत्तियों, प्रेरणाओं तथा व्यवहारों पर बल देता है। सामाजिक तथ्य व्यक्तियों के वे गुण हैं, जो उनके किसी सामाजिक समूह के सदस्य होने के कारण उनमें आ जाते है। जैसे– लिंग, आयु, रहने का समय, स्थान, व्यवसाय, प्रजाति आदि।

व्यापक तथा कम आकार वाली जनसंख्याओं का अध्ययन उनमें से चयन किये गये न्यादर्शों के आधार पर इस आशय से किया जाता है ताकि उनमें व्याप्त सामाजिक, मनोवैज्ञानिक चरों के घटनाक्रमों, वितरणों तथा पारस्परिक अन्तर सम्बन्धों का ज्ञान उपलब्ध हो सके।

3.6 *सर्वेक्षण विधि की विशेषताऐं* :–

1. सर्वेक्षण विधि अन्य विधियों से सरल है।
2. इस विधि के द्वारा व्यक्ति या वस्तु का सर्वेक्षण स्वतंत्र होकर किया जाता है।
3. यह किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र या स्थान के अध्ययन से सम्बन्धित है।
4. इससे किसी भी समुदाय के मूर्त जीवन का अध्ययन किया जाता है।
5. यह विधि व्यक्ति के बाह्य एवं आन्तरिक जोवन का अध्ययन करने में सक्षम है।

6. यह विधि अध्ययनकर्ता को अध्ययन के लिये स्वच्छंद वातावरण प्रस्तुत करने के लिये प्रोत्साहन देती है।

7. इस विधि के द्वारा प्रत्यक्ष ज्ञान सम्भव है। प्रत्यक्ष ज्ञान से जो निष्कष निकलते है। वे सत्य के निकट होते है।

8. इसके अन्तर्गत अधिक संख्या में आँकड़ें एकत्र किए जा सकते है।

9. यह विधि अधिकतर वर्तमान स्थिति का वर्णन करती है।

10. यह विधि व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित न होकर एक जनसमूह से सम्बन्धित होती है।

3.7 *सर्वेक्षण विधि के उद्देश्य* :–

1. वर्तमान परिस्थिति को पहचानना एवं वर्तमान परिस्थितियों को केन्द्रित करना।

2. तथ्यों को प्राप्त करना।

3. गुण तथा विशेषताओं के सम्बन्ध का निरीक्षण करना।

4. मानव व्यवहार के विभिन्न पक्षों की जानकारी प्राप्त करना।

5. विषय या घटना की स्थिति का शीघ्र अध्ययन करना।

3.8 *सर्वेक्षण विधि का कार्यक्षेत्र* :–

इस विधि का कार्यक्षेत्र तथ्यों के संग्रहण एवं सारणीयन करने के अतिरिक्त व्याख्या, तुलना, मापन, वर्गीकरण तथा सामान्यीकरण करना भी है। इस विधि का उपयोग सामान्यतया ऐसे अनुसंधान के लिए किया जाता है, जिसका उद्देश्य यह ज्ञात करना होता है कि वर्तमान में अनुसंधानित प्रतिनिधि स्थिति का व्यवहार क्या है? उसका सम्बन्ध वर्तमान वर्णात्मक, स्थितियों, सम्बन्ध, प्रचलित व्यवहार, विश्वास दृष्टिकोण, अभिवृत्तियाँ जो स्थापित है तथा नव विकसित प्रवृत्तियाँ से किस प्रकार है?

3.9 सर्वेक्षण विधि के चयन का औचित्य एवं महत्व :–

1. वर्तमान समस्या में शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा शिक्षण प्रभावशीलता के अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि उपयुक्त एवं सरल विधि है जो स्पष्ट एवं वैध परिणाम प्रदान करती है।
2. इस अध्ययन में 100 शिक्षक व कक्षा दसवीं में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में सम्मलित किया गया है अतः सर्वेक्षण विधि इस न्यादर्श के लिए उपयुक्त विधि है क्योंकि इस विधि में दीर्घ आकार के न्यादर्श के मापन एवं प्रतिचयन के दोष कम होते है।
3. वर्तमान अध्ययन में कोटा जिले के कुल 20 राजकीय व निजी विद्यालयों को लिया गया है। अतः सर्वेक्षण विधि उपयुक्त है क्योंकि यह समस्या के समाधान के लिए उपयुक्त सूचना प्रदान करती है।

   इस प्रकार प्रस्तुत शोध विषय की प्रकृति सर्वेक्षण अनुसंधान से सम्बन्धित होने के कारण शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग शोध कार्य में किया गया है।

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि द्वारा निम्न जानकारी प्राप्त की गई है :–

1. कोटा जिले के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति कैसी है ?
2. विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता कैसी है ?
3. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की स्थिति क्या है ?

3.10 जनसंख्या एवं न्यादर्श :–

न्यादर्श सम्पूर्ण जनसंख्या का वह अंश होता है, जिसमें अपनी समष्टि की समस्त विशेषताओं का प्रतिबिम्ब रहता है। न्यादर्श का तात्पर्य सम्पूर्ण से अध्ययन के लिए ऐसी इकाई को पृथक करना है जो सम्पूर्ण का प्रतिनिधित्व करती है तथा सम्पूर्ण की अपेक्षा छोटी है। न्यादर्श प्रविधि शोध कार्य को व्यावहारिक तथा समय, धन शक्ति की दृष्टि से मितव्ययी बना देती है।

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या सम्बन्धी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। एक शुद्ध रूप में प्रतिनिधित्व करने वाले न्यादर्श से शोध के सामान्यीकरण के बारें में अधिक से अधिक सूचनायें प्राप्त की जा सकती है।

न्यादर्श का आकार जितना अधिक होगा, उससे प्राप्त निष्कर्ष उतने ही विश्वसनीय व वैध होगें। व्यावहारिक तथा समाजिक विषयों के शोध कार्यो में न्यादर्श का विशेष महत्व होता है। इसके बिना शोध कार्य को पूरा नहीं किया जा सकता है।

3.11 *शोध अध्ययन हेतु जनसंख्या :–*

व्यावहारिक तथा सामाजिक विषयों के शोध कायां में न्यादर्श का विशेष महत्व होता है। इसके बिना शोधकार्य को पूरा नहीं किया जा सकता है। यद्यपि विज्ञान के विषयों में भी न्यादर्श का प्रयोग होता है। परंतु न्यादर्श के चयन की समस्या नहीं होती है। जनसंख्या का जो भी अंश उपलब्ध होता है वही जनसंख्या का शुद्ध रूप में प्रतिनिधित्व करता है, परन्तु सामाजिक विषयों में न्यादर्श के चयन में प्रमुख समस्या होती है किस प्रकार न्यादर्श की ईकाईयों का जनसंख्या में से चयन किया जाए जो उसका प्रतिनिधित्व कर सकें। संपूर्ण जनसंख्या का अध्ययन करना उचित होता है तथा कभी–कभी असंभव भी होता है।

न्यादर्श प्रविधि शोध कार्य को व्यावहारिक तथा समय, धन शक्ति की दृष्टि से मितव्ययी बना देती है। न्यादर्श के प्रयोग से शोध परिणामों को अधिक शुद्ध व मितव्ययी बनाया जाता है।

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधरित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उस जनसंख्या सम्बन्धी सम्पूर्ण सूचनाओं को दिया जाता है।

शोध के निष्कर्ष का सामान्यीकरण वास्तव में न्यादर्श का आकार तथा उसकी प्रविधि पर निर्भर होता है। एक शुद्ध रूप में प्रतिनिधित्व करने व शाध के सामान्यीकरण के बारें में न्यादर्श अधिक से अधिक सूचनाऐं प्रस्तुत करता है।

वर्तमान शोध अध्ययन हेतु कोटा जिले के राजकीय व निजी विद्यालयों के शिक्षकों व विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

3.12 *न्यादर्श की अवधारणा* :–

बोगार्डस ने लिखा है :–

''प्रतिदर्श एक पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार इकाईयों के एक समूह में से निश्चित प्रतिशत में इकाईयों का चयन हैं''।

''प्रतिदर्श एक पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार इकाईयों के एक समूह में से निश्चित प्रतिशत में इकाईयों का चयन हैं''।

डब्ल्यू. जी. कोकरन* (1963) *के अनुसार :–

''प्रत्येक विज्ञान की शाखा में हमारे साधन सीमित है। इसलिए सम्पूर्ण तथ्य के एक अंश से अधिक का अध्ययन नहीं कर पाते तथा उसके विषय में ज्ञान प्रस्तुत किया जाता है।''

चैपलिन ने प्रतिदर्श को पूर्ण का प्रतिनिधित्व बताते हुए कहा है :–

''न्यादर्श वह चुना हुआ अंश है जो पूर्ण का प्रतिनिधित्व होता है।'' ''प्रतिदर्श किसी जनसंख्या का वह भाग है, जिसका चयन कुछ इस तरह से किया जाता है कि उसे उस जनसंख्या का सामूहिक रूप से प्रतिनित्व समझा जा सके।''

सिम्पसन एवं कोफका के अनुसार :–

''एक न्यादर्श समग्र का वह अंश है, जिसका चयन अनुसंधान के उद्देश्य के लिए किया जाता है।''

3.13 *न्यादर्श चयन की आवश्यकता* :–

1. ***खर्च में कमी*** :–

न्यादर्श का उपयोग सर्वेक्षणों में अधिक होता है, जहाँ सीमित धन, समय, व्यक्तियों एवं साधनों से एक जनसंख्या के विषय में किसी चर का मान प्रस्तुत करना पड़ता है। यदि सभी इकाइयों का सर्वेक्षण किया गया तो सीमित साधनों से सीमित समय में काम सम्पन्न नहीं होगा।

2. ***परिणाम की शुद्धता*** :–

परिणाम प्राप्त करने में लगी हुई जनशक्ति की कुशलता पर निर्भर है। सभी इकाइयों का अध्ययन करने के लिए अधिक व्यक्तियों की आवश्यकता होगी, जिन्हें सीमित साधनों से प्राप्त नहीं किया जा सकता है। यदि सर्वेक्षण दोषपूर्ण हुआ तो अधिक इकाईयों के अध्ययन से त्रुटि में विस्तार ही होगा।

3. ***समय की बचत*** :–

उस सम्पूर्ण जनसंख्या से आदर्श प्रतिदर्श ले लें तो बहुत ही कम समय में हम उस परिणाम को पूरा कर सकते है।

4. ***प्रशासकीय सुविधा*** :–

यदि हम सम्पूर्ण जनसंख्या पर परीक्षण करना चाहते है तो हमें उस परीक्षण को प्रशासित करने में अनेकों असुविधाओं का सामना करना पड़ेगा और परीक्षण को भलीभाँति प्रशासित नहीं कर पायेंगे किन्तु जनसंख्या के प्रतिनिधित्व पर परीक्षण करने में उसे प्रशासित करना सुविधाजनक रहेगा क्योंकि प्रतिदर्श छोटा होता है, अतः परीक्षण को सरलतापूर्वक कर लेते है।

5. ***विस्तृत जानकारी*** :–

सम्पूर्ण जनसंख्या की अपेक्षा प्रतिदर्श द्वारा किसी विषय की जानकारी अधिक विस्तृत एवं ठोस रूप में कर सकते हैं।

6. ***सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन असम्भव*** :–

किसी सम्पूर्ण जाति, समाज या जनसंख्या का अध्ययन करना अत्यन्त कठिन ही नहीं वरन् असम्भव है क्योंकि समाज के प्रत्येक व्यक्ति से सम्पर्क करना

और उनका अध्ययन करना असम्भव है। अतः न्यादर्श से यह कठिनाई दूर हो जाती है।

7. ***विश्वसनीयता*** :—

सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन करने पर प्राप्त परिणामों में विश्वसनीयता का पाया जाना कठिन है किन्तु प्रतिदर्श द्वारा अध्ययन करने पर प्राप्त परिणामों में विश्वसनीयता की सम्भावना अधिक रहती है।

3.14 ***न्यादर्श की विशेषताऐं*** :—

1. ***जनसंख्या का प्रतिनिधि*** :—

वैज्ञानिक न्यादर्श के लिए आवश्यक है कि वह अपनी जनसंख्या का प्रतिनिधि हो। प्रतिनिधि होने का अर्थ यह है कि न्यादर्श में वे सभी विशेषताऐं या गुण उपस्थित हो जो जनसंख्या में उपस्थित है।

2. ***सम्भाव्यता सिद्धान्त पर आधारित*** :—

न्यादर्श सम्भाव्यता सिद्धान्त पर आधारित होता है। सम्भाव्यता सिद्धान्त गणित की एक समानता तथा पर्याप्त निरीक्षणों के पूरक अशुद्धियों के रद्द करने से सम्बन्धित अवधारणाओं पर आधारित है।

3. ***जनसंख्या की समजातीयता*** :—

न्यादर्श वह न्यादर्श है जो किसी समजातीयता जनसंख्या या समष्टि से लिया गया हो। समजातीयता जनसंख्या उसे कहते है जिसकी प्रत्येक संरचनात्मक इकाई में किसी गुण या विशेषता का समान वितरण होता है। अतः जनसंख्या में जिस हद तक समजातीयता होती है,उस पर आधारित न्यादर्श उसी हद तक वैज्ञानिक या अच्छा होता है।

4. ***न्यादर्श का पर्याप्त आकार*** :—

एक वैज्ञानिक न्यादर्श या उत्तम न्यादर्श के लिए यह भी आवश्यक है कि उसका आकार पर्याप्त हो। न्यादर्श में इकाईयों की संख्या पर्याप्त होती है तो वह अपनी जनसंख्या की सभी विशेषताओं या गुणों को समाहित करने में सफल होता है। इसलिए छोटे न्यादर्श की अपेक्षा बड़ा न्यादर्श अपनी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व अधिक करता है। अतः वैज्ञानिक प्रतिदर्श का

आकार अपेक्षाकृत बड़ा होता है। लेकिन, अधिक बड़े न्यादर्श के होने पर परिणाम तथा मापन में असुविधा होती है।

5. ***समय, श्रम तथा धन की मितव्ययिता*** :–

एक अच्छे न्यादर्श के लिए समय, श्रम तथा मुद्रा के दृष्टिकोण से कम खर्चीला होना भी आवश्यक है। यह तभी संभव है जब न्यादर्श को छोटा रखा जाए।

6. ***यादृच्छिकरण का गुण*** :–

एक वैज्ञानिक प्रतिदर्श अथवा उत्तम न्यादर्श में यादृच्छिकरण का गुण पाया जाता है। यादृच्छिकरण का अर्थ यह है कि जनसंख्या की प्रत्येक इकाई को न्यादर्श में शामिल होने की समान सम्भावना रहती है। इसलिए यादृच्छिकृत न्यादर्श वास्तव में अपनी जनसंख्या का प्रतिनिधि होता है।

7. ***पक्षपात से मुक्त*** :–

एक उत्तम या वैज्ञानिक न्यादर्श की विशेषता यह है कि वह पक्षपात रहित होता है।

8. ***प्रतिचयन अशुद्धियों से मुक्त*** :–

वैज्ञानिक न्यादर्श वस्तुतः न्यादर्श अशुद्धियों से मुक्त होता है। इस अशुद्धि को दूर करने या कम करने के लिए आवश्यक है कि न्यादर्श का आकार बड़ा हो और वह अपनी जनसंख्या का अधिक से अधिक प्रतिनिधित्व कर सके।

3.15 ***न्यादर्श के विभिन्न चरण*** :–

1. अध्ययन के उद्देश्य को स्पष्ट करना।
2. जनसंख्या को स्पष्ट करना।
3. सार्थक एवं आवश्यक आँकड़ों का ही संकलन करना।
4. मापन विधि की व्याख्या करना।
5. निवेश सूची की रचना करना।
6. प्रतिचयन विधि का चयन।

7. पूर्ण परीक्षण करना।

8. अध्ययन क्षेत्र का सकल रूप से संगठन करना।

9. आँकड़ों का सारांश व विश्लेषण करना।

3.16 *न्यादर्श की उपयोगिता :–*

1. इसकी गति तीव्र होती है। जब किसी विषय में परिणाम की शीध्रता हो तो विधि पूरी तरह सहायता करती है।

2. न्यादर्श किसी अज्ञात समष्टि के विषय में केवल अनुमानों का आश्रय नहीं देते बल्कि मान भी प्रस्तुत करते है तथा विश्वास सिद्ध होते है।

3. जनसंख्या का क्षेत्र विस्तृत दिखाई पड़ता है व मानव की पहुँच से बाहर हो जाता है, तब न्यादर्श सहायक सिद्ध होता है।

3.17 *न्यादर्श चयन की विधियाँ* :–

न्यादर्श से अभिप्राय उस क्रमबद्ध चयन पद्धति से है जिसकी सहायता से एक समष्टि से अनुसंधानकर्त्ता के लिए कम से कम इकाईयों के प्रयोग की आवश्यकता पड़ती है।

एफ.एन.करलिंगर* (1964) *के अनुसार:–

''किसी जनसंख्या या समष्टि से उसके प्रतिनिधि स्वरूप के एक अंश को चुन लेने को न्यादर्श कहते है।''

न्यादर्श प्रायः एक जटिल प्रक्रिया है। न्यादर्श की प्रक्रिया सम्बन्धित समष्टि की जटिलता मात्रा के साथः–साथ घटती बढ़ती रहती है। न्यादर्श की मुख्यतः दो ***विधिया*** है :–

1. सम्भाव्यता न्यादर्श

2. असम्भाव्यता न्यादर्श।

सम्भाव्यता न्यादर्श :–

सम्भाव्यता न्यादर्श के दो ***आधार*** है :–

1. सांख्यकीय निरंतरता का नियम तथा

2. सामान्य वितरण के सिद्धान्त।

सम्भाव्यता न्यादर्श संयोग चयन पर आधारित होता है, इस कारण से इसे सांयोगिक न्यादर्श भी कहते है। इस पद्धति की मुख्य विशेषता यह है कि इसके अन्तर्गत चयन की जाने वाली इकाईयों में चयन का आधार केवल संयोग ही रहता है तथा प्रत्येक इकाई अन्य चयन की गई इकाई से स्वतन्त्र रहती है अथवा इस इकाई का चयन दूसरी इकाई के चयन को न तो प्रभावित करता है और न ही उससे प्रभावित होता है, इस कारण इस पद्धति में पक्षपात के आने की सम्भावना न्यूनतम रहती है।

सम्भाव्यता न्यादर्श की प्रायः तीन ***विधियाँ*** होती है :–

1. लाटरी विधि,

2. ड्रम चक्र विधि,

3. टिपेट की संयोगिक संख्याएँ।

न्यादर्श की उपर्युक्त विधियों में से शोधार्थी अपने शोध को ध्यान में रखते हुए किसी एक विधि से न्यादर्श का चयन करता है, जिसके आधार पर प्राप्त परिणामों को वह सम्पूर्ण जनसंख्या पर लागू करने की स्थिति में हो या सम्पूर्ण जनसंख्या पर उनका सामान्यीकरण किया जा सके। शिक्षा एवं मनोविज्ञान में प्रायः शोधार्थी अपने अध्ययन के लिए जनसंख्या या समष्टि के स्थान पर न्यादर्श के आधार पर ही अपना शोधकार्य सम्पन्न करता है। इसलिए उसे न्यादर्श का चयन करते समय सावधान रहना चाहिये तभी वह अच्छे परिणाम दे सकता है।

3.18 ***लाटरी विधि*** :–

यह एक सरल विधि है, जिसमें इकाईयों का चयन करने से पूर्व छोटे–छोटे एक समान कागज के टुकड़ों पर सभी इकाईयों के नाम या क्रमांक लिख लिये जाते हैं। फिर इन टुकड़ों की गोलियाँ बनाकर एक डिब्बे में भरकर हिलाते हैं। इसके बाद किसी निष्पक्ष व्यक्ति की आंखों पर पट्टी बाँधकर उससे आवश्कतानुसार गोलियाँ

निकलवायी जाती हैं। इन गोलियों पर लिखे नाम ही प्रतिदर्श की इकाई होते है। यह दैव संयोग के आधार पर चयनित प्रतिदर्श होता है।

3.19 *लाटरी विधि की विशेषताऐं* :–

1. लाटरी विधि वैज्ञानिक विधि है। इसमें सुनिश्चित सीमाओं के अन्तर्गत आने वाले निदर्श परिणामों को यथार्थ माना जाता है और परिणामों में शुद्धता रखी जाती है।
2. इसमें धन, समय एवं श्रम की बचत होती है।
3. लाटरी विधि से निदर्शन छाँटने में व्यक्तिगत पूर्व धारणाओं अथवा पक्षपात का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है क्योंकि इकाईयाँ संयोग के आधार पर चयनित की जाती है।
4. लाटरी विधि का प्रयोग सभी क्षेत्रों में किया जा सकता है क्योंकि यह सरल विधि होती है।
5. इस विधि से निर्मित प्रतिदर्श समग्र का सही प्रतिनिधित्व करता है।

3.20 *शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श* :–

वर्तमान शोध राजस्थान के कोटा जिले के अन्तर्गत आने वाले 20 राजकीय व निजी विद्यालयों के 100 शिक्षकों व कक्षा दसवीं में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों पर आधारित है। इसलिए शोधकर्ता ने समय, श्रम, धन एवं शोध की जनसंख्या के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए अपने शोध न्यादर्श का चयन करने के लिए सम्भाव्यता न्यादर्श की लाटरी प्रविधि का उपयोग किया है। कोटा जिले के चयनित 20 विद्यालय निम्नानुसार है।

सारणी 3.1

राजकीय विद्यालय की सूची

क्र.स.	*विद्यालय*
1	आदर्श राजकीय सीनियर सैकण्डरी स्कूल, वसंत विहार
2	आदर्श राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, दादाबाड़ी
3	आदर्श राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सकतपुरा
4	आदर्श राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, सकतपुरा
5	आदर्श राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, दादाबाड़ी
6	आदर्श राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, संतोषीनगर
7	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, शिवपुरा
8	आदर्श राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बालाकुण्ड
9	आदर्श राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, विज्ञान नगर
10	आदर्श राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, महावीर नगर

सारणी 3.2

निजी विद्यालय की सूची

क्र. स.	विद्यालय
1	जी.पी.एस. उच्च माध्यमिक विद्यालय, बसंत बिहार
2	हाड़ौती उच्च माध्यमिक विद्यालय, महावीर नगर विस्तार योजना
3	तिलक कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, महावीर नगर विस्तार योजना
4	तिलक उच्च माध्यमिक विद्यालय, महावीर नगर विस्तार योजना
5	स्वामी विवेकानन्द कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, महावीर नगर तृतीय
6	स्वामी विवेकानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय, महावीर नगर तृतीय
7	न्यू पब्लिक उच्च माध्यमिक विद्यालय, विज्ञान नगर
8	प्रगति पब्लिक सीनियर सैकण्डरी स्कूल, बजरंगनगर
9	न्यू पब्लिक स्कूल, जवाहर नगर
10	कौशल शिक्षा निकेतन सीनियर सैकण्डरी स्कूल, बजरंगनगर

सारणी 3.3

न्यादर्श–शिक्षक

विद्यालय	***राजकीय***	***निजी***
कुल शिक्षक	50	50
पुरूष	25	25
महिला	25	25

सारणी 3.4

न्यादर्श–विद्यार्थी

विद्यालय	***राजकीय***	***निजी***
कुल विद्यार्थी	100	100
उच्च उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थी	50	50
निम्न उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थी	50	50

3.21 ***शोध उपकरण का सम्प्रत्यय*** :–

एफ.एस.फ्रीमेन (1962) के शब्दों में :–

"मनोवैज्ञानिक परीक्षण वह मानकीकृत यंत्र है जो समस्त व्यक्तियों के एक पक्ष या अधिक पहलुओं का मापन शाब्दिक या अशाब्दिक अनुक्रियाओं या अन्य किसी प्रकार के व्यवहार के माध्यम से करता है।

शिक्षा अनुसंधान के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की मापन प्रविधियों को प्रयुक्त किया जाता है। प्रत्येक मापन प्रविधि एक विशेष प्रकार के संकलन का स्त्रोत होती है। मापन विधियों के द्वारा दोनों प्रकार के गुणात्मक तथा परिणामात्मक प्रदत्त प्राप्त किये जाते है। इन विधियों के आधार पर गुणों का संख्यात्मक वर्णन किया जाता है।

अधिकांश मापन प्रविधियों की रचना इसलिए की जाती है, कि उससे परिणामात्मक प्रदत्त प्राप्त कियें जा सके। मापन प्रविधियों द्वारा प्रदत्तों का संकलन शोध प्रक्रिया का महत्वपपूर्ण सोपान है। इन प्रदत्तों के आधार पर ही किसी शोध कार्य के निष्कर्ष निकाले जाते है। मापन प्रविधियाँ शोध को वैज्ञानिक आधार प्रदान करती हैं। मापन के द्वारा प्रदत्त तीन स्तरों पर प्राप्त किये जाते है– सांकेतिक (आवृत्ति के रूप में) अनुपस्थितियों के रूप में तथा प्राप्तांक के रूप में। उपर्युक्त साधनों एवं उपकरणों का चयन एक अनुसंधान की सफलता के लिए महत्वपूण होता है। इसका चयन समस्या के उद्देश्यों एवं प्रकृति को ध्यान में रखकर किया जाता है।

3.22 ***शोध उपकरणों के प्रकार*** :–

शोधार्थी अपने शोध विषय की आवश्यकतानुसार शोध उपकरणों के माध्यम से आँकड़ें एकत्र कर अपना अध्ययन पूर्ण करता है। सामान्यतः शैक्षिक शोध में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया जाता है :–

1. अवलोकन,
2. परीक्षण,
3. साक्षात्कार,
4. अनुसूची,
5. प्रश्नावली,
6. निर्धारण मापनी,
7. अभिवृत्ति मापनी,
8. समाजमिति विधि,
9. संचयी अभिलेख,
10. ऐनकडोटल अभिलेख।

3.23 *अनुसंधान में उपकरण का महत्व* :–

प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान कार्य में दत्तों के संकलन करने के लिए कुछ साधनों की आवश्यकता होती है, इन्ही साधनों को उपकरण कहा जाता है।

शोध कार्य के लिए समस्या के निश्चित एवं परिकल्पना निर्माण के आधार पर शोधकर्त्ता के सामने यह समस्या आती है कि वह अपनी परिकल्पना के परीक्षण के लिए तथ्यों का संग्रह किस उपकरण के द्वारा करें।

इस कार्य के लिए वर्तमान में उपलब्ध उपकरणों का विश्लेषण करने के पश्चात् यह जानने का प्रयास करना है कि कौन से उपकरण के द्वारा हमारे अनुसंधान के उद्देश्य प्राप्त होंगे।

3.24 *मानकीकृत उपकरण* :–

शोध अध्ययन के लिए शोधार्थी ने मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया है।

मानकीकृत उपकरण वे मनौवैज्ञानिक उपकरण है जिनका निर्माण मानवीय व्यवहारों के कतिपय पक्षों अथवा आन्तरिक गुणों का मापन करने के लिए किया जाता है। ये पूर्व निर्मित होते हैं तथा विश्वसनीय एवं वैध होते हैं।

3.25 *शोध अध्ययन हेतु चयनित उपकरण* :–

वर्तमान अध्ययन में शोधार्थी ने निम्नलिखित मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया है:–

1. शिक्षक अभिवृत्ति परीक्षण – डॉ. जयप्रकाश, डॉ. आर.पी. श्रीवास्तव, डॉ. एस. डी. कपूर
2. शिक्षक प्रभावशीलता मापनी– डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. डी. एन. मूथा
3. शैक्षिक उपलब्धि हेतु कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षा की अंकतालिका के आधार पर दत्तों का संग्रह किया गया है।

3.28 TEACHING APTITUDE TEST :-

Developed by Dr. Jai Prakash, Dr. R.P. Srivastava,
Dr. S. D. Kapoor.

Teaching Aptitude :-

Any one who is to become a teacher needs an intellect capable of grasping not only the subject matter and its place in the curriculum but also the aims and processes of education and he can also teach others.

Test Measures :-

This test measures the aptitude towards teaching profession. The scale has 10 sub-test and a total of 150 items. Each sub-test contains 15 items. There is no time limit for the test. The test has the following **areas** :-

1. **Cooperative Attitude** :–

   This trait has been used for measuring the cooperative attitudes of the teachers towards their taught, society and the nation. This trait is an essential link for the relationship between the teacher and the taught, the school and the community, and the society and the nation.

2. **Kindliness** :–

   The items under this area have been used with regard to the general and particular attention of the teacher which is to be devoted for full growth and development of the personality of the pupil and to remove the hurdles and handicaps in the way of growth and development of pupil.

3. **Patience** :-

The patience is an important attribute of teacher's personality, as he very often meets such a critical situation which needs patience and tolerance on his part.

4. **Wide Interest** :–

The teacher is not supposed to stick to his work of teaching the subject only but he is also an active participants in co-curricular activities outside the institution. He wants to see his taught growing physically, mentally, culturally, socially and in other aspects alike.

5. **Fairness** :-

This element has been taken in the test to measure the fairness and impartiality of the teacher.

6. **Moral Character** :-

Moral status in the opinion of adults, specially concerning their adherence to the adult's standard, have been tried to see through the items constituting this area.

7. **Discipline** :-

Discipline and problems of conduct in the classroom and elsewhere and the methods employed in dealing with the problems are contained in this area.

8. **Optimism** :-

This trait is more essential in the teacher's personality as he supposed to be always optimistic.

9. **Scholarly Taste** :-

A teacher is always a student in the acquisition of knowledge. He is always thirsty for knowledge.

10. **Enthusiasm** :-

Enthusiasm is an important element for the personality of a good teacher.

Validity :-

The validity of the test was secured by computing a coefficient of correlation between scores on the test and the assessment marks obtained in the final examination. The coefficient of correlation between the total marks, practice teaching and craft, and the test score on 200 pupil teachers, was 0.5. The obtained validity coefficient is quite satisfactory.

Reliability :-

The reliability of the test was calculated by Split-Half Method using Guttman and Spearman-Brown Prophecy formulas which yielded the coefficient of correlation as 0.89 and 0.91, respectively, on a sample of 100 cases. The Retest Method yielded a correlation of 0.94. All these coefficients are high and therefore the test has a good reliability.

Scoring the test :-

The Teacher Aptitude Test is set up to permit the hand scoring of separate answer-sheet. Separate transparent Keys are available for scoring each page of the answer-sheet and for right as well as wrong answers. In all, there are **four keys** :-

(i) Right Answers on page 1,

(ii) Right Answers on page 2,

(iii) Wrong Answers on page 1,

(iv) Wrong Answers on page 2.

Each of the 150 statements of the test has five alternative responses – HA, A, I, D and HD.

The test has two sets of **scoring keys** :-

One, for the Right (R) and the other, for Wrong (W) Score. Accordingly, the weights of +3, +2 and +1 are given to the right responses of HA, A and I or HD, D and I, respectively, whichever is correct as is visible through the blank circles of the Right Keys. Similarly, the weights of -3, -2 and -1 are assigned to the wrong answers of HA, A and I or HD,D and I, whichever is visible through the blank

circles of Wrong Keys. Thus, the scoring keys give two sets of scores separately, i.e. Right and Wrong Scores. The correct score is obtained by subtraction of the Wrong Scores from the Right Scores (R-W) and the remainder is an individual's raw scores.

Table 3.5

Raw score Range, Standard Scores and Grades

S.No	Raw score	Standard score	Grade	Inference
1	41-81	22-28	G	Defective
2	82-121	29-35	F	Border Line
3	122-166	36-42	E	Dull Normal
4	167-263	43-57	D	Average
5	264-300	58-64	C	Bright Normal
6	301-347	65-71	B	Superior
7	347-402	72-81	A	Very Superior

3.29 TEACHER EFFECTIVENESS SCALE :-

Developed by Dr. Pramod Kumar and Dr. D.N. Mutha.

An **Effective Teacher** is one who helps in development of basic skills, understanding, proper work habits, desirable attitudes, value judgement and adequate personal adjustment of the students (**Ryan**, 1969).

The present Likert type scale has been developed for identifying effective/ineffective teachers.

The Scale :-

The Teacher Effectiveness Scale in the final form consists of 69 items.

Administration :-

The purpose of the scale was explained to the subjects. It was assured that their replies would be kept confidential. The subjects were requested to read the instruction carefully and ask if there was any difficulty. It was emphasized that no item should be omitted.

Scoring :-

All the 69 items of the scale are positively worded. Items are given a score of '5', '4', '3', '2' and '1' for 'strongly agree', 'agree', 'undecided', 'disagree' and 'strongly disagree' respectively. The sum of these values gives the teacher-effectiveness score for the subject. The total score varies from 69 to 345, showing least teacher-effectiveness to highest teacher-effectiveness.

Validity :-

Only highly discriminating items are included in the scale. The upper 27% and lower 27% served as criterion groups (Garrett, 1961). Discriminating values of each item has been determined by calculating 'Critical Ratio' on the basis of the responses of upper and lower groups.The validity of the scale is fairly high.

Table 3.6

Standard values of Mean and Standard Deviation (N-300)

Statistics	Mean	Standard Deviation
Standard Value	292.73	28.57

Table 3.7

Reliability

Mode	Sample	Reliability
Split-half	100	0.82
Test Retest	60	0.86

Table 3.8

Standard Norms

S.No.	Raw Score	Inference
1	313.21-329.91	Most Effective
2	307.71-312.91	More Effective
3	285.72-302.72	Average Effective
4	271.80-278.92	Low Effective
5	250.00-269.32	Least Effective

3.30 ***सांख्यिकी :–***

किसी भी शोध कार्य में किए गए कार्य व एकीकृत आँकड़ों को निष्कर्ष तक लाने के कार्य को सांख्यिकी द्वारा किया जाता है।

शैक्षिक अनुसंधानों में सांख्यिकी अनुमानों का मुख्य उद्देश्य एक न्यादर्श से बड़ी जनसंख्या के विषय में सामान्यीकरण का ज्ञान करना है।

जार्ज ए. फरग्यूसन (1971) के अनुसार –

''सांख्यिकी वैज्ञानिक विधियों की एक शाखा है। इसका उद्देश्य प्रयोगो, परीक्षण तथा सर्वेक्षण के माध्यम से प्रदत्तों का संकलन, वर्गीकरण, विश्लेषण तथा

अधीपत करना है। प्रदत्तों का संकलन किसी न्यादर्श पर किया जाता है, परन्तु उनके आधार पर जनसंख्या के सम्बन्ध में अनुमान लगाया जाता है जिसे सांख्यिकी में सामान्यीकरण कहते है।''

जी.सिम्पसन एवं एफ. कोफ्का (1969) के अनुसार –

''सांख्यिकी का संख्यात्मक सूचना से अथवा उस विधि से है जो परिणात्मक या संख्यात्मक सूचना से सम्बन्धित है। इसमें संख्यात्मक प्रदत्तों का संकलन प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण तथा अर्धपन किया जाता है।''

अतः उच्च स्तरीय अनुसंधान कार्य में व्याख्या तथा विवेचन के लिए प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी प्रविधियाँ निम्न है :–

1. ***मध्यमान*** :–

''मध्यमान वह प्राप्तांक है, जिसके दोनों और प्रदत्तों का विचलन समान होता है'', जब किसी एक समूह के आँकड़ों अथवा प्राप्त अंको को जोड़कर समूह की संख्या (N) से विभाजित किया जाता है और जो राशि या अंक प्राप्त होत है, उस राशि को उस समूह के आकड़ों का मध्यमान निम्न सूत्र द्वारा ज्ञात किया:–

$$\mathbf{M = AM + \frac{\sum fd}{N} \times i}$$

यहा :–

M	=	मध्यमान
N	=	समूह संख्या
AM	=	कल्पित माध्य
d	=	कल्पित माध्य से विचलन।
f	=	आवृत्ति
fd	=	आवृत्ति विचलन का गुणनफल।
i	=	वर्ग अन्तराल

2. ***मानक विचलन*** :–

मानक विचलन एक अंक वितरण के विस्तार अथवा विचलनशीलता के मापन की स्थाई इकाई है। यह एक ऐसा सूचनांक है, जिसके आधार पर प्रायः

एक अंक वितरण के समस्त विस्तार की व्याख्या सरलतापूर्वक की जा सकती है तथा उसके आधार पर समस्त जनसंख्या के विषय में पूर्व अनुमान लगाया जा सकता है।

मानक विचलन से अंक विस्तार को शुद्ध व वस्तुनिष्ट आधार पर मापा जा सकता है। मानक विचलन एक ऐसा यंत्र है जिसका प्रयोग केवल एक विशेष अंक–वितरण के विस्तार के मापन के लिए ही किया जा सकता है। मानक विचलन को ***गेरेट*** न प्रामाणिक विचलन भी कहा है। प्रामाणिक विचलन विचरणशीलता का सबसे अधिक सूचकांक है। जिसका सूत्र निम्नानुसार है :–

$$SD = i\sqrt{\frac{\sum fd^2}{N} - \left(\frac{\sum fd}{N}\right)^2}$$

यहा :–

SD	=	मानक विचलन।
$\sum fd^2$	=	आवृत्ति विचलन वर्ग का गुणनफल।
N	=	समूह को संख्या।
f	=	आवृत्ति
$\sum fd$	=	आवृत्ति विचलन का गुणनफल।
i	=	वर्ग अन्तराल

3. ***टी–परीक्षण :–***

छोटे प्रतिदर्श के मध्य अन्तर की सार्थकता के लिए टी–परीक्षण का प्रयोग किया जाता है। टी–परीक्षण के विकास का श्रेय ***विलियम सीली गोस्से*** को है जिन्होंने 1908 में इसका प्रतिपादन किया था। एक समूह का बढ़ना या घटना, दूसरे समूह के बढ़ने या घटने पर प्रभाव डालता है। टी–परीक्षण का सूत्र है:–

$$t = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{SD_1^2}{N_1} + \frac{SD_2^2}{N_2}}}$$

यहां :–

t	=	टी–टेस्ट
M_1	=	प्रथम समूह का मध्यमान।
M_2	=	द्वितीय समूह का मध्यमान।
SD_1^2	=	प्रथम समूह क मानक विचलन का वर्ग।
SD_2^2	=	द्वितीय समूह क मानक विचलन का वर्ग।
N_1	=	प्रथम समूह की संख्या।
N_2	=	द्वितीय समूह की संख्या।

4. ***सह–सम्बन्ध :–***

जब दो या दो से अधिक चरों तथा घटनाओं में सहचर्यात्मक सम्बन्ध पाया जाता है, तब ऐसे पारस्परिक सम्बन्ध को सह–सम्बन्ध कहते हैं। दो चर राशिंयों में से एक चर राशि के बढ़ने से दूसरे में वृद्धि या कमी हो तो उन चर राशियों में सह–सम्बन्ध पाया जाता है अर्थात् दो या दो से अधिक चर राशि के आपस के सम्बन्ध को सह–सम्बन्ध कहते हैं।

लैथराप के अनुसार :– ''सह–सम्बन्ध से दो चरों में पाये जाने वाले संयुक्त सम्बन्ध का पता लगता है''। पीयर्सन विधि से सह–सम्बन्ध ज्ञात करने के लिए निम्नांकित सूत्र का प्रयोग किया जाता है :–

$$\boldsymbol{r = \frac{N\sum XY - \sum X \sum Y}{\sqrt{[N\sum X^2 - (\sum X)^2][N\sum Y^2 - (\sum Y)^2]}}}$$

यहां :–

r	=	सह–सम्बन्ध।
$\sum XY$	=	X और Y पदमालाओं के अलग–अलग विचलनों के गुणनफल का योग।
$\sum X^2$	=	X पदमालाओं के अलग–अलग प्राप्तांकों का मध्यमान से विचलन के वर्गो का योग।
$\sum Y^2$	=	Y पदमालाओं के अलग–अलग प्राप्तांकों का मध्यमान से विचलन के वर्गो का योग।

5. ***सार्थकता स्तर ज्ञात करना :–***

सार्थकता स्तर ज्ञात करने के लिए सर्वप्रथम स्वतन्त्रता का अंश ज्ञात किया जाता है। इसके लिए सुत्र निम्न है–

$$\boldsymbol{df = N_1 + N_2 - 2}$$

यहां

df	=	स्वतंत्रता का अंश।
N_1	=	प्रथम समूह की संख्या।
N_2	=	द्वितीय समूह की संख्या।

3.31 ***सार :–***

इस प्रकार शोधकर्त्ता ने अपने शोध हेतु विधि, प्रविधि व उपकरण का चयन किया। शोध प्रबन्ध में अनुसंधान की विधि, प्रविधि और उपकरण का चयन, निर्माण और संशोधन परिमार्जन एवं परिवर्तन करना अनुसंधान का महत्वपूर्ण चरण है। इसी के द्वारा दत्त संकलन का सही सीमा तक उपयोग होगा, क्योंकि विधि, प्रविधि व उपकरण जितने अधिक उद्देश्यों से सम्बन्धित होंगे, प्राप्तांक समंकों का संकलन उसी सीमा तक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होगा।

अध्याय–चतुर्थ

दत्त संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या

''आहार निन्द्राभयमैथुनं च समान्यमेतत् पषुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विषेश : धर्मेणहीनाः पषुभिः समानाः।''

महाभारत

अध्याय–चतुर्थ

दत्त संकलन, विश्लेषण और व्याख्या

4.1 *प्रस्तावना* :–

प्रत्येक शोध कार्य में समस्या के अनुकूल शोध विधि और उपकरण निश्चित होने के बाद चयनित न्यादर्श पर उपकरण प्रशासित कर शोध हेतु दत्तों का संकलन किया जाता है।

शोधार्थी ने इस अध्याय में 'दत्त' का अर्थ व परिभाषा स्पष्ट करने के पश्चात् शोध अध्ययन के आवश्यक दत्तों का स्वरूप स्पष्ट किया है। साथ ही दत्त संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरणों के प्रशासन की प्रक्रिया का भी उल्लेख किया है। तदुपरान्त संकलित दत्तों का विश्लेषण तीन स्तरों में सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से किया गया है तथा शोध निष्कर्ष प्राप्त किये गये हैं।

शोधार्थी का यह प्रयास रहा है कि दत्तों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों का सामान्यीकरण वैज्ञानिक ढंग से संभव हो सके।

4.2 *दत्त संकलन* :–

अनुसंधानकर्ता शोध समस्या से सम्बन्धित गुणात्मक तथ्यों को मात्रात्मक रूप में परिवर्तित करने के लिए दत्तों का संग्रह करता है क्योंकि गुणात्मक सामग्री का विश्लेषण सुगमता से संभव नहीं होती हैं। इसमें वस्तु निष्ठता का अभाव होता है, इसके लिए आवश्यक है कि गुणात्मक सामग्री को मात्रात्मक रूप में परिवर्तित करें और जब शोध सामग्री मात्रात्मक रूप से संगठित, सारणीबद्ध हो जाती है तब इस व्यवस्थित सामग्री को अनुसंधान में दत्त के नाम से परिभाषित किया जाता है। दत्तों की सबसे बड़ी विशेषता, उनका वस्तुनिष्ठ होना है।

हिलड्रैप **(1961)** ने लिखा है–

''आंकड़ों का संकलन एक महत्वपूर्ण साक्ष्य कार्य है जो शोध कार्य का अच्छी तरह से विश्लेषण एवं सही परिणाम जानने हेतु मुख्य प्रक्रिया है।''

यंग **(1968)** के अनुसार –

''वैज्ञानिक विश्लेषण यह मानता है कि तथ्यों के संकलन के पीछे स्वयं तथ्यों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण रहस्योद्‌घाटन और भी कुछ होता है। यदि इन सुव्यवस्थित तथ्यों को सम्पूर्ण अध्ययन से सम्बन्धित किया जाये तो उनका एक महत्वपूर्ण अर्थ प्रकट हो सकता है जिसके आधार पर घटना की सप्रमाण व्याख्या की जा सकती है।''

सरसनाथ राय **(1988)** ने अपनी पुस्तक ***'अनुसंधान परिचय'*** में दत्त की निम्न ***विशेषतायें*** बतायी है :–

1. संकलित दत्त अनुसंधान की समस्या के अध्ययन के लिए, उपयुक्त तथा साथ ही विश्वसनीय होने चाहिएं।
2. संकलित दत्त विशेष समस्या के लिए तथा उसके परिणाम निकालने के लिए होने चाहिएं।
3. संकलित दत्त सुव्यवस्थित व संगठित होने चाहिएं।
4. दत्तों का विश्लेषण उचित सांख्यिकीय विधियों से होना चाहिएं।

4.3 ***न्यादर्श व शोध उपकरण*** :–

1. ***न्यादर्श*** :–

शोध अध्ययन हेतु निम्न न्यादर्श का चयन किया गया है।

(i) न्यादर्श के रूप में कुल 20 राजकीय व निजी विद्यालयों का चयन किया गया है।

(ii) न्यादर्श के रूप में राजकीय व निजी विद्यालयों के 100 शिक्षकों का चयन किया गया है।

(iii) न्यादर्श हेतु राजकीय व निजी विद्यालयों के कक्षा दसवीं में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

(iv) प्रस्तुत अध्ययन के लिए शोधार्थी द्वारा यादृच्छिक विधि की लॉटरी प्रविधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया है।

2. ***उपकरण*** :–

शोध अध्ययन हेतु निम्नलिखित शोध उपकरणों का उपयोग किया गया है :–

(i) ***शिक्षक अभिवृत्ति परीक्षण*** :– डॉ. जयप्रकाश, डॉ. आर.पी. श्रीवास्तव, डॉ. एस.डी. कपूर।

(ii) ***शिक्षक प्रभावशीलता मापनी*** :– डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. डी.एन. मूथा।

(iii) शैक्षिक उपलब्धि हेतु कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षा की अंकतालिका के आधार पर दत्तों का संग्रह किया गया है।

4.4 ***दत्त विश्लेषण*** :–

किसी शोध कार्य में दत्त संकलन के उपरान्त उनके विश्लेषण की क्रिया होती है क्योंकि विश्लेषण द्वारा ही शोधार्थी अपने शोध के केन्द्र तक पहुँचने में सफल होता है।

शोध कार्य हेतु शोध की प्रकृति के अनुसार कई तरह से दत्तों का विश्लेषण ओर व्याख्या की जाती है। आंकड़ों का विश्लेषण एक मूलभूत आवश्यकता है जिसके बिना शोधकार्य पूर्ण नहीं माना जा सकता है।

डब्लू जे. रिचमैन के अनुसार–

"विश्लेषण, विश्लेषणकर्ता पर उतना ही निर्भर करता है जितना विश्लेषित दत्तों पर तथा उसे सदैव अवास्तविक पूर्वाग्रह तथा तर्क असंगतता के विरूद्ध अवश्य जागरूक रहना चाहिए"।

क्राक्सल और क्राउडेन के अनुसार–

"स्वयं अपने प्रयोग के लिए या अन्य व्यक्तियों द्वारा किये जाने के उद्देश्य से समकों को किसी उपयुक्त रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। सामान्यतः समक या तो सारणियों में क्रमबद्ध किये जाते है या आरेखीय युक्तियों द्वारा उनका चित्रण किया जाता है।"

सिम्पसन् तथा कॉफका के अनुसार शोध अध्ययन विश्लेषण के चार ***सिद्धान्त*** होते हैं :—

1. विश्लेषण के लिए यह आवश्यक है कि विश्लेषणकर्ता यह देखने का इच्छुक हो कि दत्तों में क्या है ?
2. दत्तों के विश्लेषण के लिए यह आवश्यक है कि विश्लेषणकर्ता यह जानने का प्रयास करें कि दत्तों की पृष्ठभूमि में क्या है ?
3. दत्तों के विश्लेषण के लिए तर्कपूर्ण चिन्तन का नियम अनिवार्य है।
4. ठोस विश्लेषण के लिए स्पष्ट तथा निश्चित आंकड़े उसका अंग होते हैं।

अनुसंधान का प्रयोजन अध्ययन में उठाए गए प्रश्नों का उत्तर खोजना है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु तथ्य एकत्रित करने के सम्बन्ध में योजना बनाने एवं विश्वसनीय वैध तथा पक्षपात रहित तथ्यों का एकत्रीकरण आवश्यक है। दत्तों के एकत्रीकरण के उपरान्त अनुसंधान के उद्देश्यों की शर्त हेतु उनको इस प्रकार व्यवस्थित करना आवश्यक है जिससे अनुसंधान समस्या तथा परिकल्पनाओं के सम्बन्ध में स्पष्ट उत्तर दिया जा सके। जिस प्रक्रिया के द्वारा यह कार्य सम्पादित होता है उस विश्लेषण एवं विवेचन की संज्ञा दी जाती है। विश्लेषण का उद्देश्य एकत्रित तथ्यों को इस प्रकार संक्षिप्त रूप से व्यवस्थित करना है, जिससे कि अनुसंधान के प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हो सके। विवेचन का उद्देश्य इन प्रश्नों को अन्य उपलब्ध ज्ञान के साथ इस प्रकार जोड़ना है कि जिससे उनके दृढ़ अर्थों को खोजा जा सके। ये दोनों उद्देश्य अनुसंधान की समस्त प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं।

अनुसंधान प्रक्रिया के समस्त पूर्वगामी चरण इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु ही संपादित किये जाते है। विश्लेषण तथा विवेचन की प्रक्रिया आपस में इस प्रकार घुली मिली ह कि उन्हें पृथक्—पृथक् न समझकर एक समन्वित प्रक्रिया के रूप में ही समझना उपयुक्त है।

प्रस्तुत शोध कार्य के सम्बन्ध में इस अध्याय के अन्तर्गत ''शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा शिक्षण प्रभावशीलता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन'' के उत्तरदायी कारकों को निश्चित करने के लिए परिकल्पनाओं का विभिन्न सांख्यिकीय विधियों द्वारा परीक्षण तथा प्रत्येक कारक की प्रभावशीलता की जाँच की गई है कि इन कारकों का शिक्षण पर क्या प्रभाव है? प्रस्तुत अध्याय में शोधार्थी ने एकत्रित आंकडों का संख्यिकी विश्लेषण कर उनका प्रस्तुतीकरण उद्देश्य एवं परिकल्पनानुसार किया है।

शोधार्थी ने शोध से सम्बन्धित प्रदतो का संकलन विश्लेषण एवं व्याख्या चरो के अनुसार निम्नलिखित रूप मे कि गयी है–

1. शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति,
2. शिक्षण प्रभावशोलता,
3. चरों की तुलना एवं सहसम्बन्ध।

4.5 *शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के दत्तों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या* :–

4.5.1 *उद्देश्य*–1

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन ।

***सारणी* 4.1**

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान व मानक विचलन

क्षेत्र	*समूह*	*न्यादर्श* N	*मध्यमान* M	*मानक विचलन* SD	*मानक अंक*	*श्रेणी*
शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति	शिक्षक	100	171.60	39.01	167-263	D साधारण तथा औसत

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी संख्या 4.1 में राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के समूह, न्यादर्श, मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रदर्शित किया गया है।

   शिक्षक अभिवृत्ति का मध्यमान 171.60 तथा मानक विचलन 39.01 प्राप्त हुआ है।

2. शिक्षक अभिवृत्ति मापनी के मानकों के अनुसार प्राप्त मध्यमान 171.60 तथा मानक विचलन 39.01 मानक अंक श्रृंखला के 167–263 अन्तर्गत है। इन मानको के अनुसार D ग्रेड है। इसका अभिप्राय है कि राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण एवं औसत स्तर की है।

3. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षको का सहयोगी दृष्टिकोण, सज्जनता, धैर्य, नैतिक आचरण, अनुशासन औसत एवं साधारण स्तर का हैं।

4. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षको की रूचि एवं विद्यानुराग प्रवृत्ति को विकसित करने पर ही शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में अधिक विकास होगा।

5. शिक्षक आज मात्र छात्रों के शैक्षिक विकास के लिए ही जिम्मेदार नहीं माने जाते हैं, बल्कि उन पर उनके सर्वांगीण विकास का दायित्व होता है। अधिगमकर्त्ताओं की रूचि, अभिवृत्ति, आकांक्षा, आवश्यकता, अभिक्षमता, बौद्धिक योग्यता, वैयक्तिक विभिन्नता आदि के परिपेक्ष्य में उन्हें शिक्षित करने का प्रयास करना उनका दायित्व माना जाता है ताकि अन्तर्निहित क्षमताओं का पूर्ण विकास सम्भव हो सके। इसलिए शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का विकास करना होगा।

निष्कर्ष :–

अतः राजकीय एवं निजी विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।

4.5.2 *उद्देश्य*–2

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन ।

सारणी 4.2

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति
का मध्यमान व मानक विचलन

क्षेत्र	***समूह***	***न्यादर्श*** **N**	***मध्यमान*** **M**	***मानक विचलन*** **SD**	***मानक अंक***	***श्रेणी***
शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति	शिक्षक	50	171.01	33.10	167-263	D साधारण तथा औसत

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी संख्या 4.2 में राजकीय विद्यालयों के शिक्षको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के समूह, न्यादर्श, मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रदर्शित किया गया है।

   शिक्षक अभिवृत्ति का मध्यमान 171.01 तथा मानक विचलन 33.10 प्राप्त हुआ है।

2. शिक्षक अभिवृत्ति मापनी के मानकों के अनुसार प्राप्त मध्यमान 171.01 तथा मानक विचलन 33.10 मानक अंक श्रृंखला के 167–263 अन्तर्गत है। इन मानकों के अनुसार D ग्रेड है। इसका अभिप्राय है कि राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण एवं औसत स्तर की है।

3. राजकीय विद्यालयों के शिक्षको का सहयोगी दृष्टिकोण, सज्जनता, धैर्य, नैतिक आचरण, अनुशासन औसत एवं साधारण स्तर का हैं।

4. राजकीय विद्यालयों के शिक्षको की रूचि एवं विद्यानुराग प्रवृत्ति को विकसित करने पर ही शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में अधिक विकास होगा।

5. शिक्षक आज छात्रों सर्वांगीण विकास का दायित्व होता है। अधिगमकर्त्ताओं की रूचि, अभिवृत्ति, आकांक्षा, आवश्यकता, अभिक्षमता, बौद्धिक योग्यता, वैयक्तिक विभिन्नता आदि के परिपेक्ष्य में उन्हें शिक्षित करने का प्रयास करना उनका दायित्व माना जाता है ताकि अन्तर्निहित क्षमताओं का पूर्ण विकास सम्भव हो सके। इसलिए शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति होनी चाहिए।

निष्कर्ष :–

अतः राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।

4.5.3 *उद्देश्यः—3*

निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।

***सारणी* 4.3**

निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति
का मध्यमान व मानक विचलन

क्षेत्र	***समूह***	***न्यादर्श* N**	***मध्यमान* M**	***मानक विचलन* SD**	***मानक अंक***	***श्रेणी***
शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति	शिक्षक	50	173.40	37.70	167-263	D साधारण तथा औसत

व्याख्या एवं विश्लेषण :—

1. सारणी संख्या 4.3 में निजी विद्यालयों के शिक्षको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के समूह, न्यादर्श, मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रदर्शित किया गया है। शिक्षक अभिवृत्ति का मध्यमान 173.40 तथा मानक विचलन 37.70 प्राप्त हुआ है।
2. शिक्षक अभिवृत्ति मापनी के मानकों के अनुसार प्राप्त मध्यमान 173.40 तथा मानक विचलन 37.70 मानक अंक श्रृंखला के 167—263 अन्तर्गत है। इन मानको के अनुसार D ग्रेड है। इसका अभिप्राय है कि निजी विद्यालयों के शिक्षको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण एवं औसत स्तर को है।
3. निजी विद्यालयों के शिक्षको का सहयोगी दृष्टिकोण, सज्जनता, धैर्य, नैतिक आचरण, अनुशासन औसत एवं साधारण स्तर का हैं।
4. निजी विद्यालयों के शिक्षको के रूचि एवं विद्यानुराग प्रवृत्ति को विकसित करने पर ही शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में अधिक विकास होगा।

5. शिक्षक आज मात्र छात्रों के शैक्षिक विकास के लिए ही जिम्मेदार नहीं माने जाते हैं, बल्कि अधिगमकर्त्ताओं की रूचि, अभिवृत्ति, आकांक्षा, आवश्यकता, अभिक्षमता, बौद्धिक योग्यता, वैयक्तिक विभिन्नता आदि के परिपेक्ष्य में उन्हें शिक्षित करने का प्रयास करना उनका दायित्व माना जाता है ताकि अन्तर्निहित क्षमताओं का पूर्ण विकास सम्भव हो सके। इसलिए शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का विकास करना होगा।

निष्कर्ष :—

अतः निजी विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।

4.5.4 *उद्देश्यः–4*

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।

***सारणी* 4.4**

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान व मानक विचलन

क्षेत्र	***समूह***	***न्यादर्श* N**	***मध्यमान* M**	***मानक विचलन* SD**	***मानक अंक***	***श्रेणी***
शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति	पुरूष शिक्षक	50	174.20	40.70	167-263	D साधारण तथा औसत

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी संख्या 4.4 में राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के समूह, न्यादर्श, मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रदर्शित किया गया है।
   शिक्षक अभिवृत्ति का मध्यमान 174.20 तथा मानक विचलन 40.70 प्राप्त हुआ है।
2. शिक्षक अभिवृत्ति मापनी के मानकों के अनुसार प्राप्त मध्यमान 174.20 तथा मानक विचलन 40.70 मानक अंक श्रृंखला के 167–263 अन्तर्गत है। इन मानको के अनुसार D ग्रेड है। इसका अभिप्राय है कि राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण एवं औसत स्तर की है।
3. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षको का सहयोगी दृष्टिकोण, सज्जनता, धैर्य, नैतिक आचरण, अनुशासन औसत एवं साधारण स्तर का हैं।

4. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षको के रूचि एवं विद्यानुराग प्रवृत्ति को विकसित करने पर ही शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में अधिक विकास होगा।

5. अधिगमकर्त्ताओं की रूचि, अभिवृत्ति, आकांक्षा, आवश्यकता, अभिक्षमता, बौद्धिक योग्यता, वैयक्तिक विभिन्नता आदि के परिपेक्ष्य में उन्हें शिक्षित करने का प्रयास करना उनका दायित्व माना जाता है ताकि अन्तर्निहित क्षमताओं का पूर्ण विकास सम्भव हो सके। इसलिए शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का विकास करना होगा।

निष्कर्ष :–

अतः राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षका की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।

4.5.5 ***उद्देश्य:—5***

राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।

सारणी 4.5

राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान व मानक विचलन

क्षेत्र	***समूह***	***न्यादर्श*** **N**	***मध्यमान*** **M**	***मानक विचलन*** **SD**	***मानक अंक***	***श्रेणी***
शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति	महिला शिक्षिकाऐ	50	169.40	39.01	167-263	D साधारण तथा औसत

व्याख्या एवं विश्लेषण :—

1. सारणी संख्या 4.5 में राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के समूह, न्यादर्श, मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रदर्शित किया गया है।

   शिक्षक अभिवृत्ति का मध्यमान 169.40 तथा मानक विचलन 39.01 प्राप्त हुआ है।

2. शिक्षक अभिवृत्ति मापनी के मानकों के अनुसार प्राप्त मध्यमान 169.40 तथा मानक विचलन 39.01 मानक अंक श्रृंखला के 167—263 अन्तर्गत है। इन मानको के अनुसार D ग्रेड है। इसका अभिप्राय है कि राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओ की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण एवं औसत स्तर की है।

3. राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओ का सहयोगी दृष्टिकोण, सज्जनता, धैर्य, नैतिक आचरण, अनुशासन औसत एवं साधारण स्तर का हैं।

4. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के महिला शिक्षिकाओ की रूचि एवं विद्यानुराग प्रवृत्ति को विकसित करन पर ही शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में अधिक विकास होगा।

5. अधिगमकर्त्ताओं की रूचि, अभिवृत्ति, आकांक्षा, आवश्यकता, अभिक्षमता, बौद्धिक योग्यता, वैयक्तिक विभिन्नता आदि के परिपेक्ष्य में उन्हें शिक्षित करने का प्रयास करना उनका दायित्व माना जाता है ताकि अन्तर्निहित क्षमताओं का पूर्ण विकास सम्भव हो सके। इसलिए शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का विकास करना होगा।

निष्कर्ष :–

अतः राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओ की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।

4.6 *शिक्षण प्रभावशीलता के दत्तों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या* :–

4.6.1 *उद्देश्य–6*

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन ।

***सारणी* 4.6**

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान व मानक विचलन

क्षेत्र	*समूह*	*न्यादर्श* N	*मध्यमान* M	*मानक विचलन* SD	*मानक अंक*	*श्रेणी*
शिक्षण प्रभावशीलता	शिक्षक	100	318.60	14.25	313.21-329.91	सर्वश्रेष्ठ

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी संख्या 4.6 में राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता के समूह, न्यादर्श, मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रदर्शित किया गया है।

   शिक्षक प्रभावशीलता का मध्यमान 318.60 तथा मानक विचलन 14.25 प्राप्त हुआ है।

2. शिक्षक प्रभावशीलता मापनी के मानकों के अनुसार प्राप्त मध्यमान 318.60 तथा मानक विचलन 14.05 मानक अंक श्रृंखला के 313.21–329.91 अन्तर्गत है। इन मानको के अनुसार सर्वश्रेष्ठ ग्रेड है। इसका अभिप्राय है कि राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की है।

3. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षक विद्यार्थियों के प्रेरणा स्त्रोत, मार्ग दर्शक तथा परामर्शदाता है। शिक्षक, शिक्षण कौशल में दक्ष, पाठ्य सहगामी क्रियाओं में रूचि, कक्षाकक्ष प्रबन्धन में माहिर तथा व्यवसायिक दक्षता से परिपूर्ण है।

4. शिक्षक ही समाज के लिए पथ–प्रदर्शक के रूप, में आदर्श के रूप में और एक अनुकरणीय व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार किये जाते हैं। शिक्षक छात्रों के शैक्षिक विकास के लिए ही जिम्मेदार नहीं माने जाते, बल्कि उन पर उनके सर्वांगीण विकास का दायित्व होता है। अतः शिक्षकों का प्रभावशाली होना आवश्यक है।

निष्कर्ष :–

अतः राजकीय एवं निजी विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।

4.6.2 ***उद्देश्य–7***

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन ।

सारणी 4.7

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान व मानक विचलन

क्षेत्र	***समूह***	***न्यादर्श* N**	***मध्यमान* M**	***मानक विचलन* SD**	***मानक अंक***	***श्रेणी***
शिक्षण प्रभावशीलता	शिक्षक	50	322.20	14.28	313.21-329.91	सर्वश्रेष्ठ

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी संख्या 4.7 में राजकीय विद्यालयों के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता के समूह, न्यादर्श, मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रदर्शित किया गया है।

   शिक्षक प्रभावशीलता का मध्यमान 322.20 तथा मानक विचलन 14.28 प्राप्त हुआ है।

2. शिक्षक प्रभावशीलता मापनी के मानकों के अनुसार प्राप्त मध्यमान 322.20 तथा मानक विचलन 14.28 मानक अंक श्रृंखला के 313.21–329.91 अन्तर्गत है। इन मानको के अनुसार सर्वश्रेष्ठ ग्रेड है। इसका अभिप्राय है कि राजकीय विद्यालयों के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की है।

3. राजकीय विद्यालयों के शिक्षक विद्यार्थियों के प्रेरणा स्त्रोत, मार्ग दर्शक तथा परामर्शदाता है। शिक्षक, शिक्षण कौशल में दक्ष, पाठ्य सहगामी क्रियाओं में रूचि वाला, कक्षाकक्ष प्रबन्धन में माहिर तथा व्यावसायिक दक्षता से परिपूर्ण है।

4. शिक्षक ही समाज के लिए पथ–प्रदर्शक के रूप, में आदर्श के रूप में और एक अनुकरणीय व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार किये जाते हैं। शिक्षक छात्रों के शैक्षिक विकास के लिए ही जिम्मेदार नही माने जाते हैं, बल्कि उन पर उनके सर्वांगीण विकास का दायित्व होता है। अतः शिक्षकों का प्रभावशाली होना आवश्यक है।

निष्कर्ष :–

अतः राजकीय विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।

4.6.3 ***उद्देश्य–8***

निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।

***सारणी* 4.8**

निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता

का मध्यमान एवं मानक विचलन

क्षेत्र	***समूह***	***न्यादर्श*** **N**	***मध्यमान*** **M**	***मानक विचलन*** **SD**	***मानक अंक***	***श्रेणी***
शिक्षण प्रभावशीलता	शिक्षक	50	315.01	13.27	313.21-329.91	सर्वश्रेष्ठ

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी संख्या 4.8 में निजी विद्यालयों के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता के समूह, न्यादर्श, मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रदर्शित किया गया है। शिक्षक प्रभावशीलता का मध्यमान 315.01 तथा मानक विचलन 13.27 प्राप्त हुआ है।
2. शिक्षक प्रभावशीलता मापनी के मानकों के अनुसार प्राप्त मध्यमान 315.01 तथा मानक विचलन 13.27 मानक अंक श्रृंखला के 313.21–329.91 अन्तर्गत है। इन मानको के अनुसार सर्वश्रेष्ठ ग्रेड है। इसका अभिप्राय है कि निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की है।
3. निजी विद्यालयों के शिक्षक विद्यार्थियों के प्रेरणा स्त्रोत, मार्ग दर्शक तथा परामर्शदाता है। शिक्षक, शिक्षण कौशल में दक्ष, पाठ्य सहगामी क्रियाओं में रूचि वाला, कक्षाकक्ष प्रबन्धन में माहिर तथा व्यावसायिक दक्षता से परिपूर्ण है।
4. शिक्षक ही समाज के लिए पथ–प्रदर्शक के रूप, में आदर्श के रूप में और एक अनुकरणीय व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार किये जाते हैं। शिक्षक छात्रों

के शैक्षिक विकास के लिए ही जिम्मेदार नहीं माने जाते हैं, बल्कि उन पर उनकें सर्वांगीण विकास का दायित्व होता है। अतः शिक्षकों का प्रभावशाली होना आवश्यक है।

निष्कर्ष :–

अतः निजी विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।

4.6.4 ***उद्देश्य–9***

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।

सारणी **4.9**

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान एवं मानक विचलन

क्षेत्र	***समूह***	***न्यादर्श* N**	***मध्यमान* M**	***मानक विचलन* SD**	***मानक अंक***	***श्रेणी***
शिक्षण प्रभावशीलता	पुरूष शिक्षक	50	318.60	14.25	313.21-329.91	सर्वश्रेष्ठ

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी संख्या 4.9 में राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता के समूह, न्यादर्श, मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रदर्शित किया गया है।

   शिक्षक प्रभावशीलता का मध्यमान 318.60 तथा मानक विचलन 14.25 प्राप्त हुआ है।

2. शिक्षक प्रभावशीलता मापनी के मानकों के अनुसार प्राप्त मध्यमान 318.60 तथा मानक विचलन 14.25 मानक अंक श्रृंखला के 313.21–329.91 अन्तर्गत है। इन मानको के अनुसार सर्वश्रेष्ठ ग्रेड है। इसका अभिप्राय है कि राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की है।

3. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षक विद्यार्थियों के प्रेरणा स्त्रोत, मार्ग दर्शक तथा परामर्शदाता है। शिक्षक, शिक्षण कौशल में दक्ष, पाठ्य

सहगामी क्रियाओं में रूचि वाला, कक्षाकक्ष प्रबन्धन में माहिर तथा व्यावसायिक दक्षता से परिपूर्ण है।

4. शिक्षक ही समाज के लिए पथ–प्रदर्शक के रूप, में आदर्श के रूप में और एक अनुकरणीय व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार किये जाते हैं। शिक्षक छात्रों के शैक्षिक विकास के लिए ही जिम्मेदार नहीं माने जाते हैं, बल्कि उन पर उनकें सर्वांगीण विकास का दायित्व होता है। अतः शिक्षकों का प्रभावशाली होना आवश्यक है।

निष्कर्ष :–

अतः राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।

4.6.5 *उद्देश्य–10*

राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।

***सारणी* 4.10**

राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान एवं मानक विचलन

क्षेत्र	*समूह*	*न्यादर्श* N	*मध्यमान* M	*मानक विचलन* SD	*मानक अंक*	*श्रेणी*
शिक्षण प्रभावशीलता	महिला शिक्षिकाऐ	50	310.60	12.20	307.71-312.91	उत्तम

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी संख्या 4.10 में राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओ की शिक्षण प्रभावशीलता के समूह, न्यादर्श, मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रदर्शित किया गया है।
   शिक्षक प्रभावशीलता का मध्यमान 310.60 तथा मानक विचलन 12.20 प्राप्त हुआ है।
2. शिक्षक प्रभावशीलता मापनी के मानकों के अनुसार प्राप्त मध्यमान 310.60 तथा मानक विचलन 12.20 मानक अंक श्रृंखला के 307.71–312.91 अन्तर्गत है। इन मानको के अनुसार उत्तम ग्रेड है। इसका अभिप्राय है कि राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता उत्तम स्तर की है।
3. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के महिला शिक्षिका विद्यार्थियों के प्रेरणा स्त्रोत, मार्ग दर्शक तथा परामर्शदाता हैं। शिक्षिका, शिक्षण कौशल में दक्ष,

पाठ्य सहगामी क्रियाओं में रूचि वाला, कक्षाकक्ष प्रबन्धन में माहिर तथा व्यावसायिक दक्षता से परिपूर्ण है।

4. शिक्षिका ही समाज के लिए पथ–प्रदर्शक के रूप, में आदर्श के रूप में और एक अनुकरणीय व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार किये जाते हैं। शिक्षिका छात्रों के शैक्षिक विकास के लिए ही जिम्मेदार नहीं माने जाते हैं, बल्कि उन पर उनके सर्वांगीण विकास का दायित्व हाता है। अतः शिक्षिकाओं का प्रभावशाली होना आवश्यक है।

निष्कर्ष :–

अतः राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओ की शिक्षण प्रभावशीलता उत्तम स्तर की हैं।

4.7 ***चरों की तुलना एवं सहसम्बन्ध*** :–

4.7.1 ***उद्देश्य*****–11**

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तुलनात्मक अध्ययन ।

परिकल्पना**–1**

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता हैं।

***सारणी* 4.11**

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण

क्षेत्र	***समूह***	***न्यादर्श*** **N**	***मध्यमान*** **M**	***मानक विचलन*** **SD**	***टी मूल्य***	***सार्थकता***
शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति	शिक्षक राजकीय विद्यालय	**50**	**171.01**	**33.10**	**0.33**	स्वीकृत
शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति	शिक्षक निजी विद्यालय	**50**	**173.40**	**37.10**		

0.05 सार्थकता स्तर पर t का सार्थक मान = **1.96**

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी 4.11 में राजकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के न्यादर्श, मध्यमान, मानक विचलन व टी–मूल्य को प्रदर्शित किया गया है।

2. राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 171.01 व 33.10 प्राप्त हुऐ है। निजी विद्यालय के शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 173.40 व 37.70 प्राप्त हुऐ है।

3. राजकीय विद्यालय एवं निजी विद्यालय के शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान व मानक विचलन से टी–मूल्य की गणना की गई। टी–मूल्य 0.33 प्राप्त हुआ। 0.05 सार्थकता स्तर पर टी–मूल्य का सार्थक मान 1.96 है। इस प्रकार से टी–मूल्य का प्राप्त मान 0.33 सार्थक मान 1.96 से कम है। अतः परिकल्पना–1 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

4. राजकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं निजी विद्यालय के शिक्षकों को शिक्षण क प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान में कोई अन्तर नहीं है। अतः शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है यानि कि शिक्षक अभिवृत्ति का स्तर साधारण तथा औसत है।

5. आरेख 4.1 राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन प्रदर्शित किया गया हैं।

निष्कर्ष *:–*

अतः गणना करने पर टी–मूल्य का प्राप्त मान 0.33 सार्थक मान 1.96 से कम है। अतः परिकल्पना–1 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।

आरेख– 4.1

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन

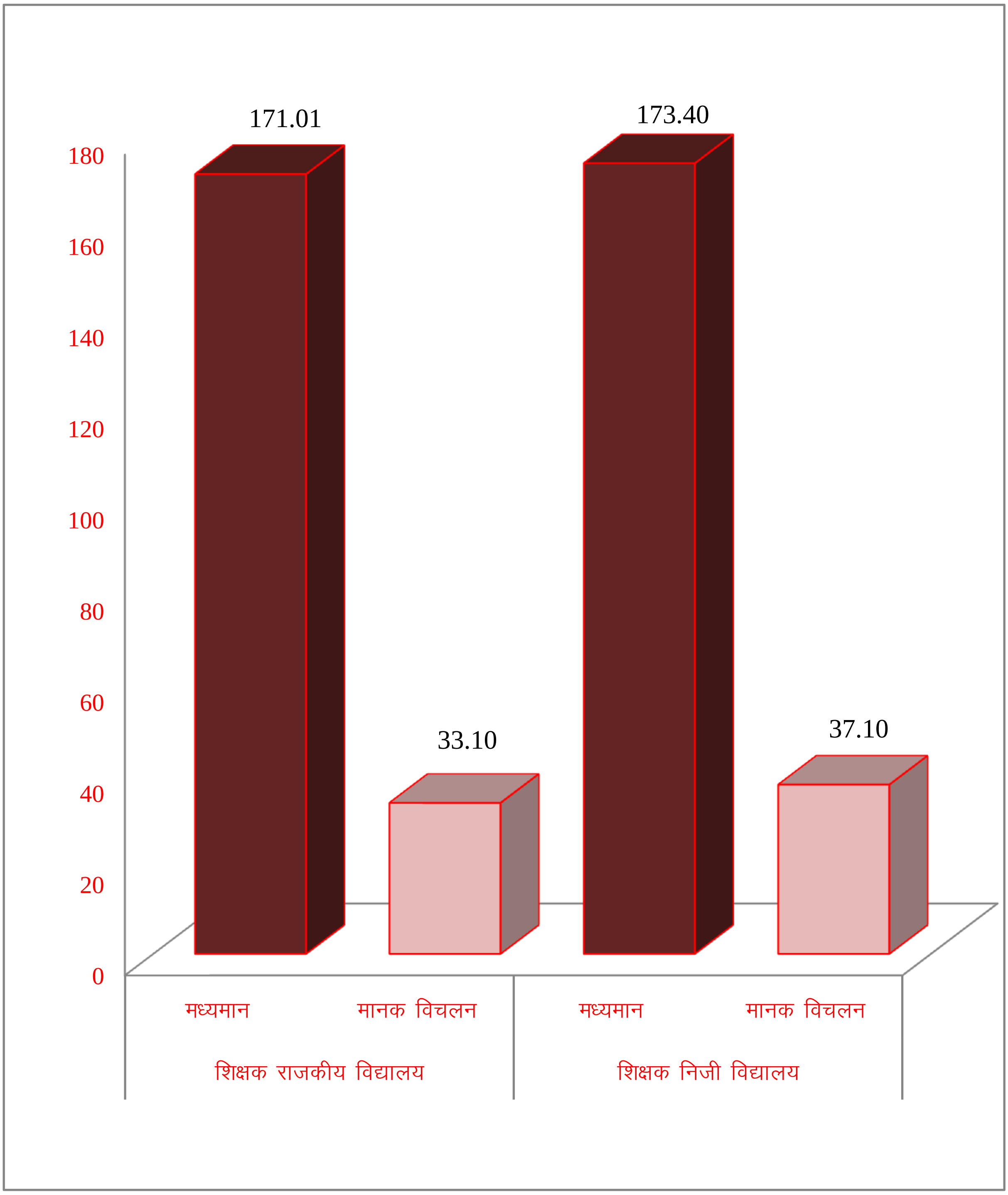

शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति

4.7.2 ***उद्देश्य***–12

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं माध्यमिक विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन ।

परिकल्पना–2

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता हैं।

सारणी 4.12

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण

क्षेत्र	***समूह***	***न्यादर्श*** N	***मध्यमान*** M	***मानक विचलन*** SD	***टी मूल्य***	***सार्थकता***
शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति	पुरूष शिक्षक	50	174.20	40.70	0.60	स्वीकृत
शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति	महिला शिक्षिकाऐ	50	169.40	39.01		

0.05 सार्थकता स्तर पर t का सार्थक मान = 1.96

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी 4.12 में राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के न्यादर्श, मध्यमान, मानक विचलन व टी–मूल्य को प्रदर्शित किया गया है।
2. राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 174.20 व 40.70 प्राप्त हुऐ है। राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 169.40 व 39.01 प्राप्त हुऐ है।
3. राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान व मानक विचलन से टी–मूल्य की गणना की गई। टी–मूल्य 0.60 प्राप्त हुआ। 0.05 सार्थकता स्तर पर टी–मूल्य का सार्थक मान 1.96 है। इस प्रकार से टी–मूल्य का प्राप्त मान 0.60 सार्थक मान 1.96 से कम है। अतः परिकल्पना–2 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।
4. राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं को शिक्षण क प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान में कोई अन्तर नहीं है। अतः शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।
5. आरेख 4.2 राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन प्रदर्शित किया गया हैं।

***निष्कर्ष** :–*

अतः गणना करने पर टी–मूल्य का प्राप्त मान 0.60 सार्थक मान 1.96 से कम है। अतः परिकल्पना–2 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय

एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।

आरेख 4.2

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन

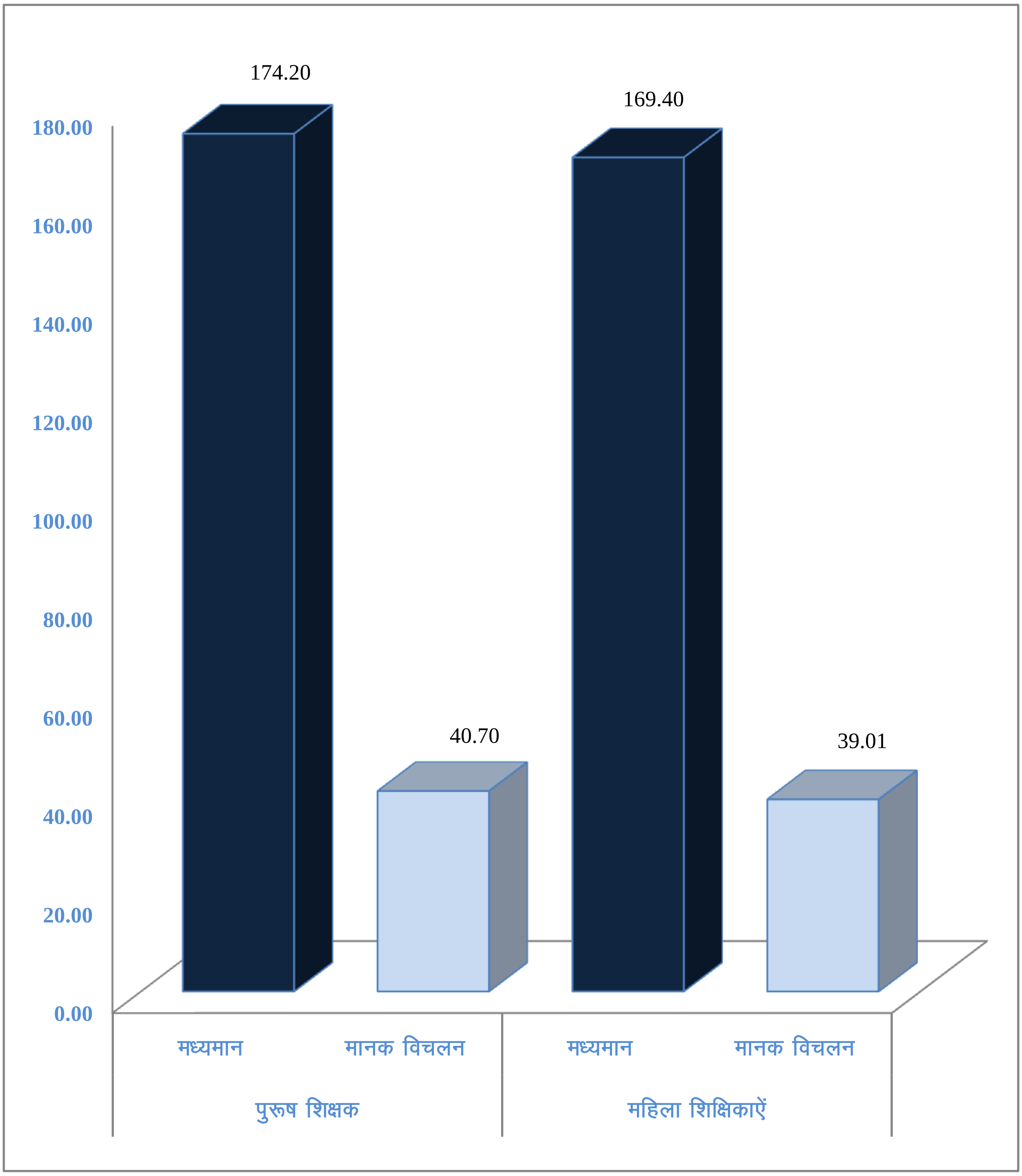

शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति

4.7.3 ***उद्देश्य–13***

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना–3

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी 4.13

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण

क्षेत्र	***समूह***	***न्यादर्श*** **N**	***मध्यमान*** **M**	***मानक विचलन*** **SD**	***टी मूल्य***	***सार्थकता***
शिक्षण प्रभावशीलता	शिक्षक राजकीय विद्यालय	**50**	**322.20**	**14.28**	**2.69**	अस्वीकृत
शिक्षण प्रभावशीलता	शिक्षक निजी विद्यालय	**50**	**315.01**	**13.27**		

0.05 सार्थकता स्तर पर t का सार्थक मान = **1.96**

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी 4.13 में राजकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण की प्रभावशीलता के न्यादर्श, मध्यमान, मानक विचलन व टी–मूल्य को प्रदर्शित किया गया है।
2. राजकीय विद्यालय के शिक्षकों को शिक्षण की प्रभावशीलता के मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 322.20 व 14.28 प्राप्त हुऐ है। निजी विद्यालय के शिक्षकों को शिक्षण प्रभावशीलता के मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 315. 01 व 13.27 प्राप्त हुऐ है।
3. राजकीय विद्यालय एवं निजी विद्यालय के शिक्षकों को शिक्षण प्रभावशीलता के मध्यमान व मानक विचलन से टी–मूल्य की गणना की गई। टी–म्ल्य 2.69 प्राप्त हुआ। 0.05 सार्थकता स्तर पर टी–मूल्य का सार्थक मान 1.96 है। इस प्रकार से टी–मूल्य का प्राप्त मान 2.69 सार्थक मान 1.96 से अधिक है। अतः परिकल्पना–3 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।
4. राजकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं निजी विद्यालय के शिक्षकों को शिक्षण प्रभावशीलता के मध्यमान में सार्थक अन्तर है। अतः शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है।
5. राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता निजी विद्यालय के शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशीलता से अधिक है।
6. आरेख 4.3 राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान, मानक विचलन प्रदर्शित किया गया हैं।

निष्कर्ष :–

अतः गणना करने पर टी–मूल्य का प्राप्त मान 2.69 सार्थक मान 1.96 से अधिक है। अतः परिकल्पना–3 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है।

आरेख 4.3

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता मध्यमान, मानक विचलन

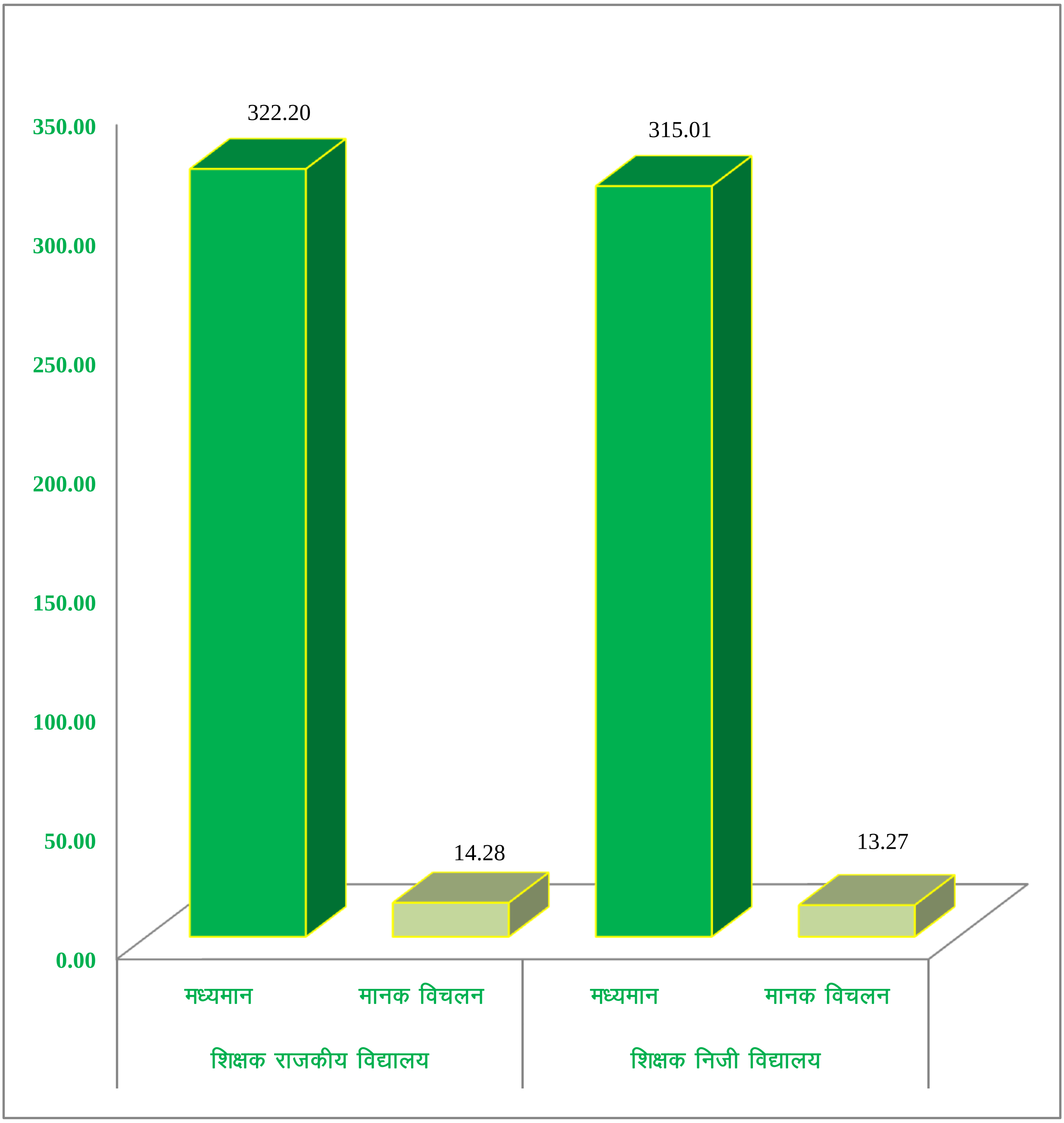

शिक्षण प्रभावशीलता

4.7.4 *उद्देश्य–14*

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना–4

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

***सारणी* 4.14**

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण

क्षेत्र	***समूह***	***न्यादर्श*** **N**	***मध्यमान*** **M**	***मानक विचलन*** **SD**	***टी मूल्य***	***सार्थकता***
शिक्षण प्रभावशीलता	पुरूष शिक्षक	50	318.60	14.25	3.07	अस्वीकृत
शिक्षण प्रभावशीलता	महिला शिक्षिकाऐ	50	310.60	12.20		

0.05 सार्थकता स्तर पर t का सार्थक मान = **1.96**

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी 4.14 में राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण की प्रभावशीलता के न्यादर्श, मध्यमान, मानक विचलन व टी–मूल्य को प्रदर्शित किया गया है।
2. राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों को शिक्षण की प्रभावशीलता के मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 318.60 व 14.25 प्राप्त हुऐ है। राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं को शिक्षण प्रभावशीलता के मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 310.60 व 12.20 प्राप्त हुऐ है।
3. राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं को शिक्षण प्रभावशीलता के मध्यमान व मानक विचलन से टी–मूल्य की गणना की गई। टी–मूल्य 3.07 प्राप्त हुआ। 0.05 सार्थकता स्तर पर टी–मूल्य का सार्थक मान 1.96 है। इस प्रकार से टी–मूल्य का प्राप्त मान 3.07 सार्थक मान 1.96 से अधिक है। अतः परिकल्पना–4 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।
4. राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं को शिक्षण प्रभावशीलता के मध्यमान में सार्थक अन्तर है। अतः शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है।
5. राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं के शिक्षण प्रभावशीलता से अधिक है।
6. आरेख 4.4 राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान, मानक विचलन प्रदर्शित किया गया हैं।

निष्कर्ष :–

अतः गणना करने पर टी–मूल्य का प्राप्त मान 3.07 सार्थक मान 1.96 से अधिक है। अतः परिकल्पना–4 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है।

आरेख 4.4

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों के महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता मध्यमान, मानक विचलन

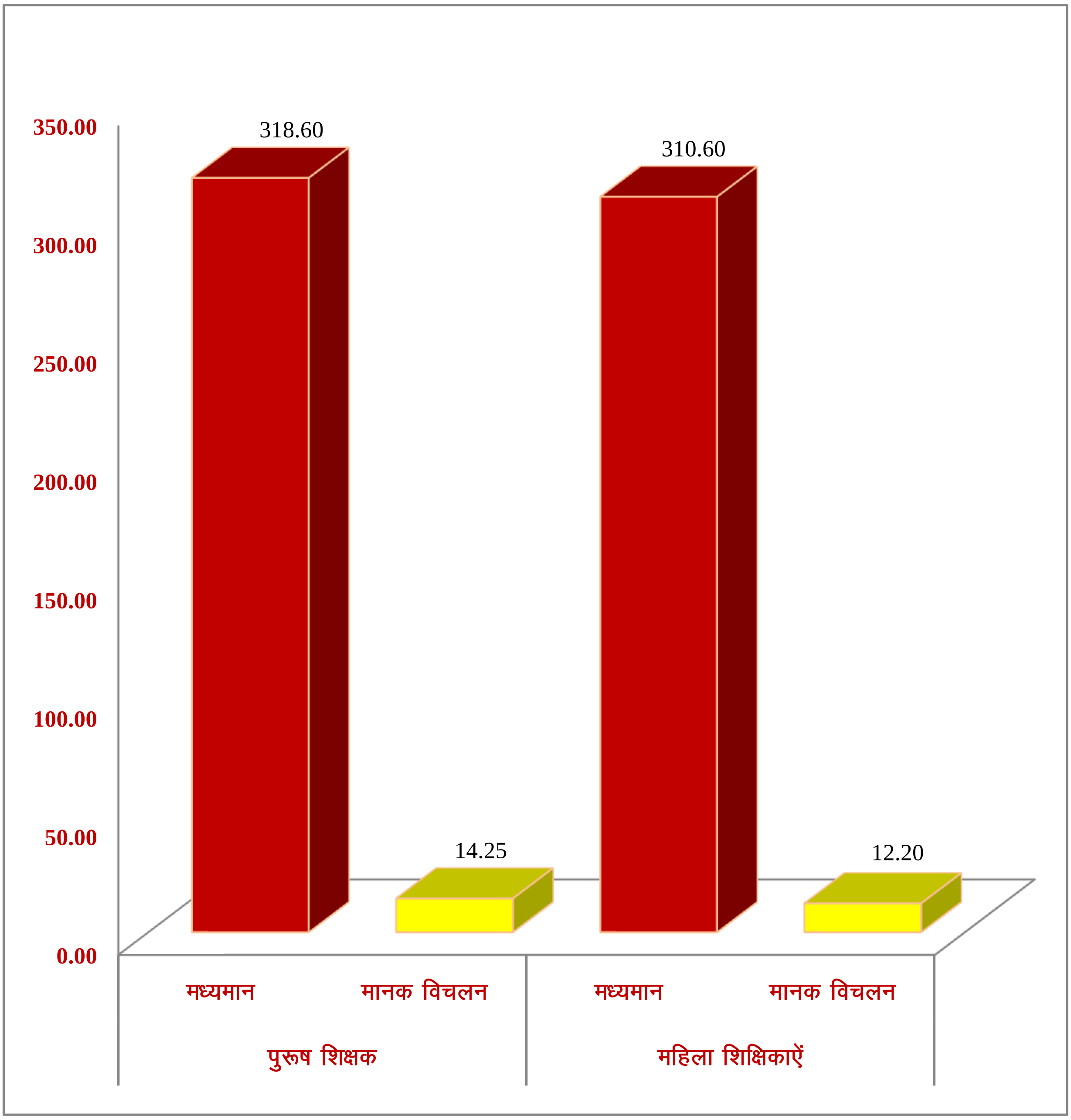

शिक्षण प्रभावशीलता

4.7.5 ***उद्देश्य–15***

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च्व शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

परिकल्पना–5

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च्व शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

सारणी **4.15**

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च्व शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध

क्षेत्र	***समूह***	**r–*मूल्य***	***सार्थकता***
शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति	शिक्षक राजकीय विद्यालय	+0.305	अस्वीकृत
उच्च्व शैक्षिक उपलब्धि	विद्यार्थी राजकीय विद्यालय		

0.05 सार्थकता स्तर पर r का सार्थक मान = **0.195**

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी 4.15 में राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के r–मूल्य को प्रदर्शित किया गया है।
2. राजकीय माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान व विचलन से r–मूल्य की गणना की गई। r–मूल्य +0.305 प्राप्त हुआ। 0.05 सार्थकता स्तर पर r–मूल्य का सार्थक मान 0.195 है। इस प्रकार से r–मूल्य का प्राप्त मान +0.305 सार्थक मान 0.195 से अधिक है। अतः परिकल्पना–5 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।
3. राजकीय विद्यालय के शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि मं सार्थक सह–सम्बन्ध है।
4. आरेख 4.5 राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध प्रदर्शित किया गया हैं।

निष्कर्ष :–

अतः गणना करने पर r–मूल्य का प्राप्त मान +0.305 सार्थक मान 0.195 से अधिक है। अतः परिकल्पना–5 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

आरेख 4.5

शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं उच्च–निम्न शैक्षिक उपलब्धि मे सह–सम्बन्ध

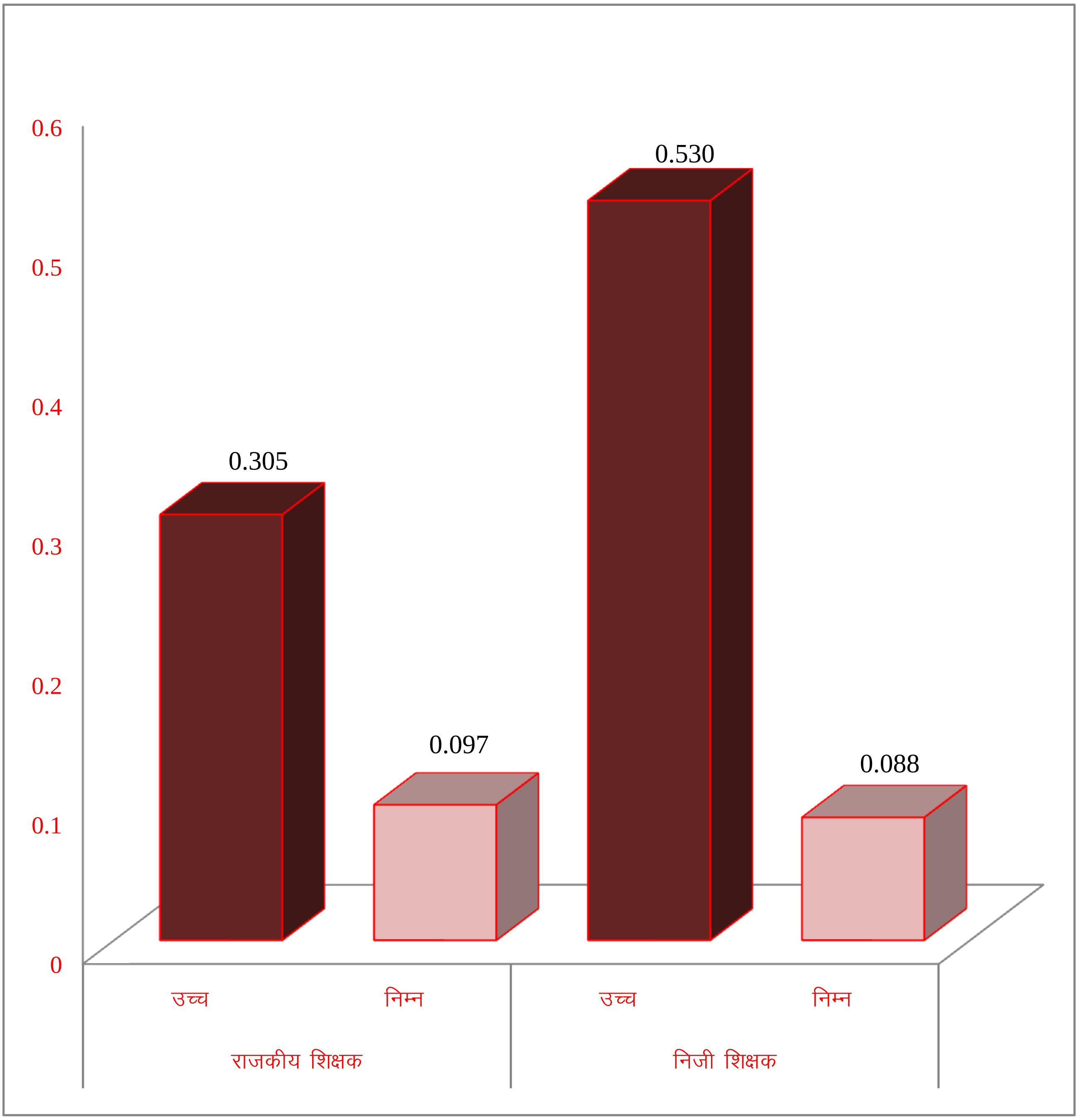

शैक्षिण उपलब्धि

4.7.6 ***उद्देश्य–16***

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

परिकल्पना–6

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

सारणी **4.16**

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध

क्षेत्र	***समूह***	**r**–***मूल्य***	***सार्थकता***
शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति	शिक्षक राजकीय विद्यालय	+0.097	स्वीकृत
निम्न शैक्षिक उपलब्धि	विद्यार्थी राजकीय विद्यालय		

0.05 सार्थकता स्तर पर r का सार्थक मान = **0.195**

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी 4.16 में राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के r–मूल्य को प्रदर्शित किया गया है।

2. राजकीय माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान व विचलन से r–मूल्य की गणना की गई। r–मूल्य +0.097 प्राप्त हुआ। 0.05 सार्थकता स्तर पर r–मूल्य का सार्थक मान 0.195 है। इस प्रकार से r–मूल्य का प्राप्त मान +0.097 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–6 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

3. राजकीय विद्यालय के शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

4. आरेख 4.5 राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध पदर्शित किया गया हैं।

निष्कर्ष :–

अतः गणना करने पर r–मूल्य का प्राप्त मान +0.097 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–6 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

4.7.7 ***उद्देश्य–17***

निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों के उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

परिकल्पना–7

निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता हैं।

सारणी 4.17

निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध

क्षेत्र	***समूह***	**r–*मूल्य***	***सार्थकता***
शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति	शिक्षक निजी विद्यालय	+0.530	अस्वीकृत
उच्च शैक्षिक उपलब्धि	विद्यार्थी निजी विद्यालय		

0.05 सार्थकता स्तर पर r का सार्थक मान = **0.195**

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी 4.17 में निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के r–मूल्य को प्रदर्शित किया गया है।
2. निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान व विचलन से r–मूल्य की गणना की गई। r–मूल्य +0.530 प्राप्त हुआ। 0.05 सार्थकता स्तर पर r–मूल्य का सार्थक मान 0.195 है। इस प्रकार से r–मूल्य का प्राप्त मान +0.530 सार्थक मान 0.195 से अधिक है। अतः परिकल्पना–7 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।
3. निजी विद्यालय के शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध है।
4. आरेख 4.5 निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध प्रदर्शित किया गया हैं।

निष्कर्ष :–

अतः गणना करने पर r–मूल्य का प्राप्त मान +0.530 सार्थक मान 0.195 से अधिक है। अतः परिकल्पना–7 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

4.7.8 *उद्देश्य–18*

निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों के निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

परिकल्पना–8

निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता हैं।

***सारणी* 4.18**

निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध

क्षेत्र	***समूह***	**r–*मूल्य***	***सार्थकता***
शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति	शिक्षक निजी विद्यालय	+0.088	स्वीकृत
निम्न शैक्षिक उपलब्धि	विद्यार्थी निजी विद्यालय		

0.05 सार्थकता स्तर पर r का सार्थक मान = 0.195

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी 4.18 में निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के r–मूल्य को प्रदर्शित किया गया है।

2. निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान व विचलन से r–मूल्य की गणना की गई। r–मूल्य +0.088 प्राप्त हुआ। 0.05 सार्थकता स्तर पर r–मूल्य का सार्थक मान 0.195 है। इस प्रकार से r–मूल्य का प्राप्त मान +0.088 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–8 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

3. निजी विद्यालय के शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

4. आरेख 4.5 निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध प्रदर्शित किया गया हैं।

निष्कर्ष :–

अतः गणना करने पर r –मूल्य का प्राप्त मान +0.088 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–8 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

4.7.9 *उद्देश्य–19*

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों के उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

परिकल्पना–9

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता हैं।

***सारणी* 4.19**

राजकीय एवं निजी विद्यालयों विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध

क्षेत्र	***समूह***	**r–*मूल्य***	***सार्थकता***
शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति	पुरूष शिक्षक	+0.357	अस्वीकृत
उच्च शैक्षिक उपलब्धि	विद्यार्थी		

0.05 सार्थकता स्तर पर r का सार्थक मान = 0.195

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी 4.19 में राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के r–मूल्य को प्रदर्शित किया गया है।

2. राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान व विचलन से r–मूल्य की गणना की गई। r–मूल्य +0.357 प्राप्त हुआ। 0.05 सार्थकता स्तर पर r–मूल्य का सार्थक मान 0.195 है। इस प्रकार से r–मूल्य का प्राप्त मान +0.357 सार्थक मान 0.195 से अधिक है। अतः परिकल्पना–9 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

3. राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध है।

4. आरेख 4.6 राजकीय एवं निजी विद्यालयों विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध प्रदर्शित किया गया है।

निष्कर्ष :–

अतः गणना करने पर r –मूल्य का प्राप्त मान +0.357 सार्थक मान 0.195 से अधिक है। अतः परिकल्पना–9 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

आरेख 4.6

शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं उच्च–निम्न शैक्षिक उपलब्धि मे सह–सम्बन्ध

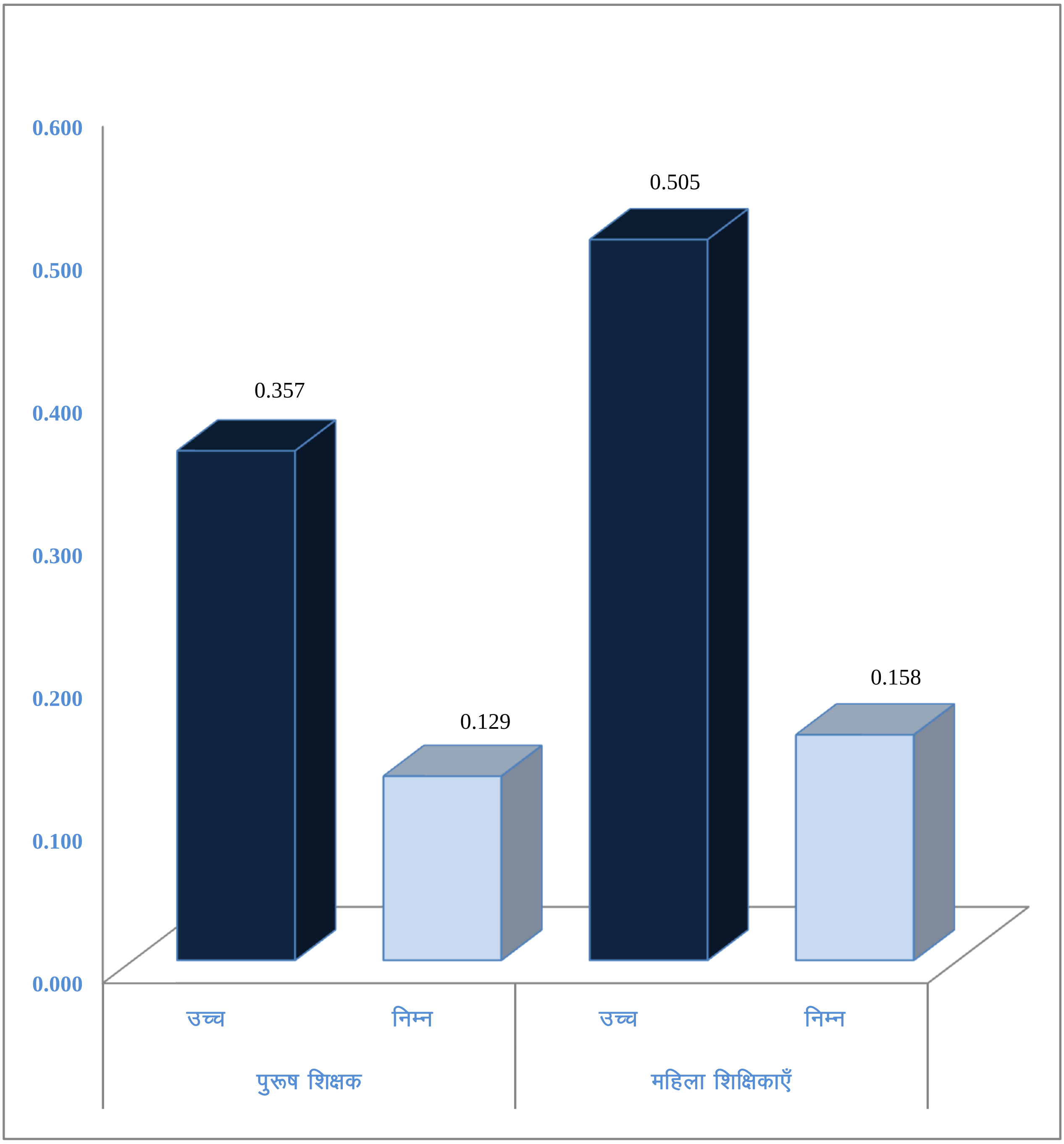

शैक्षिण उपलब्धि

4.7.10 *उद्देश्य–20*

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों के निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

परिकल्पना–10

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता हैं।

सारणी **4.20**

राजकीय एवं निजी विद्यालयों विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध

क्षेत्र	***समूह***	**r*–मूल्य***	***सार्थकता***
शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति	पुरूष शिक्षक	+0.129	स्वीकृत
निम्न शैक्षिक उपलब्धि	विद्यार्थी		

0.05 सार्थकता स्तर पर r का सार्थक मान = **0.195**

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी 4.20 में राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के r–मूल्य को प्रदर्शित किया गया है।
2. राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान व विचलन से r–मूल्य की गणना की गई। r–मूल्य +0.129 प्राप्त हुआ। 0.05 सार्थकता स्तर पर r–मूल्य का सार्थक मान 0.195 है। इस प्रकार से r–मूल्य का प्राप्त मान +0.129 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–10 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।
3. राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नही है।
4. आरेख 4.6 राजकीय एवं निजी विद्यालयों विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध प्रदर्शित किया गया हैं।

निष्कर्ष :–

अतः गणना करने पर r–मूल्य का प्राप्त मान +0.129 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–10 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

4.7.11 *उद्देश्य–21*

राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों के उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

परिकल्पना–11

राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता हैं।

***सारणी* 4.21**

राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध

क्षेत्र	***समूह***	**r–*मूल्य***	***सार्थकता***
शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति	महिला शिक्षिकाऐ	+0.505	अस्वीकृत
उच्च शैक्षिक उपलब्धि	विद्यार्थी		

0.05 सार्थकता स्तर पर r का सार्थक मान = **0.195**

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी 4.21 में राजकीय एवं निजी विद्यालय के महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के r–मूल्य को प्रदर्शित किया गया है।

2. राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान व विचलन से r–मूल्य की गणना की गई। r–मूल्य +0.505 प्राप्त हुआ। 0.05 सार्थकता स्तर पर r–मूल्य का सार्थक मान 0.195 है। इस प्रकार से r–मूल्य का प्राप्त मान +0.505 सार्थक मान 0.195 से अधिक है। अतः परिकल्पना–11 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

3. राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध है।

4. आरेख 4.6 राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध प्रदर्शित किया गया हैं।

निष्कर्ष :–

अतः गणना करने पर r –मूल्य का प्राप्त मान +0.505 सार्थक मान 0.195 से अधिक है। अतः परिकल्पना–11 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

4.7.12 ***उद्देश्य–22***

राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों के निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

परिकल्पना–12

राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता हैं।

सारणी 4.22

राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं को शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध

क्षेत्र	***समूह***	***r–मूल्य***	***सार्थकता***
शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति	महिला शिक्षिकाऐ	**-0.158**	स्वीकृत
निम्न शैक्षिक उपलब्धि	विद्यार्थी		

0.05 सार्थकता स्तर पर r का सार्थक मान = **0.195**

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी 4.22 में राजकीय एवं निजी विद्यालय के महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के r–मूल्य को प्रदर्शित किया गया है।
2. राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान व विचलन से r–मूल्य की गणना की गई। r–मूल्य -0.158 प्राप्त हुआ। 0.05 सार्थकता स्तर पर r–मूल्य का सार्थक मान 0.195 है। इस प्रकार से r–मूल्य का प्राप्त मान -0.158 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–12 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।
3. राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध है।
4. आरेख 4.6 राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध प्रदर्शित किया गया हैं।

निष्कर्ष :–

अतः गणना करने पर r –मूल्य का प्राप्त मान -0.158 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–12 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है।

4.7.13 *उद्देश्य–23*

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

परिकल्पना–13

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता हैं।

***सारणी* 4.23**

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध

क्षेत्र	***समूह***	**r–*मूल्य***	***सार्थकता***
शिक्षण प्रभावशीलता	शिक्षक राजकीय विद्यालय	+0.359	अस्वीकृत
उच्च शैक्षिक उपलब्धि	विद्यार्थी राजकीय विद्यालय		

0.05 सार्थकता स्तर पर r का सार्थक मान = 0.195

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी 4.23 में राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के r–मूल्य को प्रदर्शित किया गया है।
2. राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान व विचलन से r–मूल्य की गणना की गई। r–मूल्य +0.359 प्राप्त हुआ। 0.05 सार्थकता स्तर पर r–मूल्य का सार्थक मान 0.195 है। इस प्रकार से r–मूल्य का प्राप्त मान +0.359 सार्थक मान 0.195 से अधिक है। अतः परिकल्पना–13 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।
3. राजकीय विद्यालय के शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशीलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध है।
4. आरेख 4.7 राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध प्रदर्शित किया गया हैं।

निष्कर्ष :–

अतः गणना करने पर r–मूल्य का प्राप्त मान +0.359 सार्थक मान 0.195 से अधिक है। अतः परिकल्पना–13 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

आरेख 4.7

शिक्षण प्रभावशिलता एवं उच्च–निम्न शैक्षिक उपलब्धि मे सह–सम्बन्ध

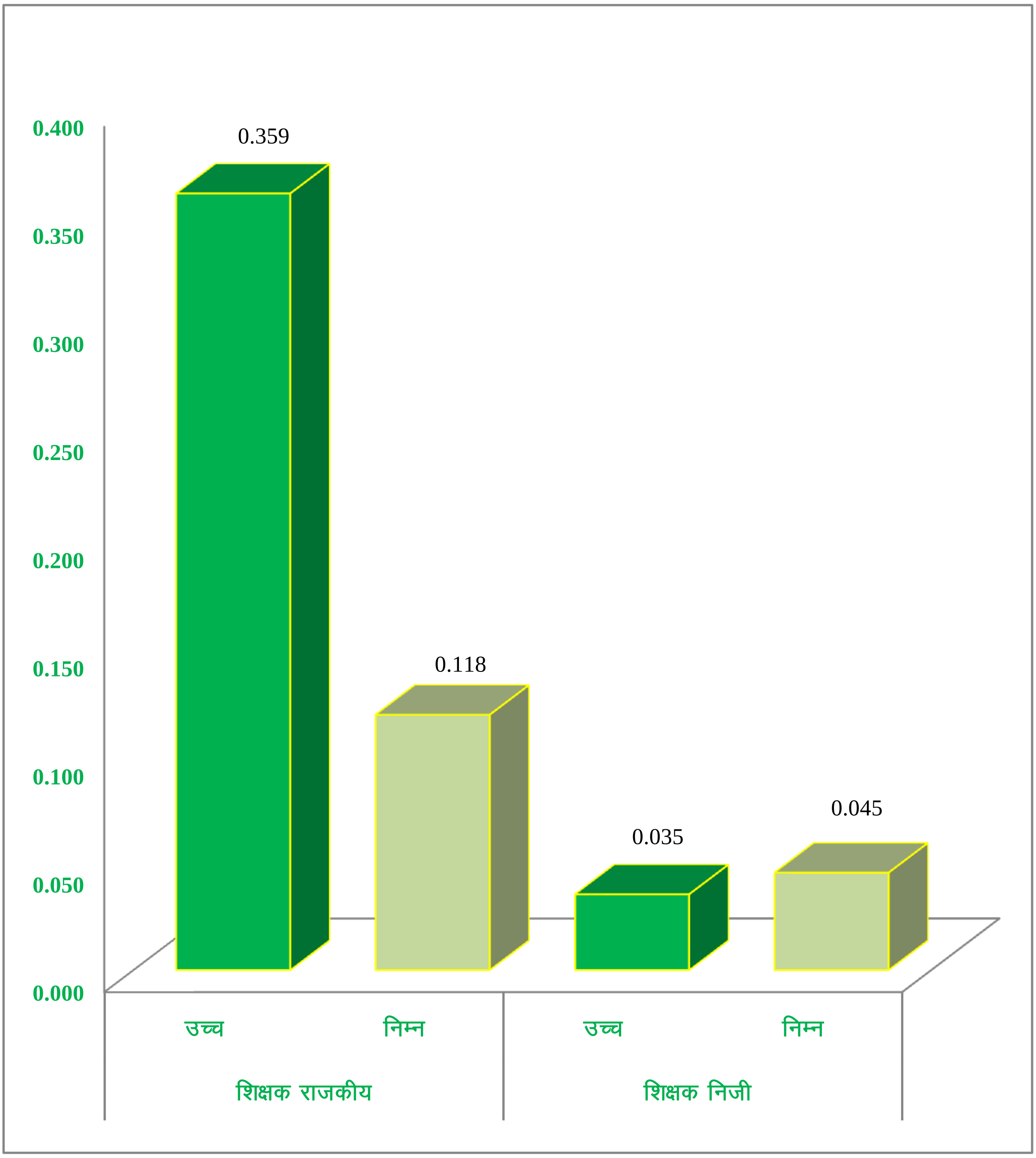

शैक्षिण उपलब्धि

4.7.14 *उद्देश्य–24*

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

परिकल्पना–14

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता हैं।

***सारणी* 4.24**

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध

क्षेत्र	*समूह*	r–*मूल्य*	*सार्थकता*
शिक्षण प्रभावशीलता	शिक्षक राजकीय विद्यालय	+0.118	स्वीकृत
निम्न शैक्षिक उपलब्धि	विद्यार्थी राजकीय विद्यालय		

0.05 सार्थकता स्तर पर r का सार्थक मान = **0.195**

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी 4.24 में राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के r–मूल्य को प्रदर्शित किया गया है।
2. राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान व विचलन से r–मूल्य की गणना की गई। r–मूल्य +0.118 प्राप्त हुआ। 0.05 सार्थकता स्तर पर r–मूल्य का सार्थक मान 0.195 है। इस प्रकार से r–मूल्य का प्राप्त मान +0.118 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–14 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।
3. राजकीय विद्यालय के शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशीलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नही है।
4. आरेख 4.7 राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध प्रदर्शित किया गया हैं।

निष्कर्ष :–

अतः गणना करने पर r–मूल्य का प्राप्त मान +0.118 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–14 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

4.7.15 ***उद्देश्य–25***

निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

परिकल्पना–15

निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता हैं।

सारणी **4.25**

निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध

क्षेत्र	***समूह***	**r–*मूल्य***	***सार्थकता***
शिक्षण प्रभावशीलता	शिक्षक निजी विद्यालय	+0.035	स्वीकृत
उच्च शैक्षिक उपलब्धि	विद्यार्थी निजी विद्यालय		

0.05 सार्थकता स्तर पर r का सार्थक मान = **0.195**

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी 4.25 में निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के r–मूल्य को प्रदर्शित किया गया है।
2. निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान व विचलन से r–मूल्य की गणना की गई। r–मूल्य +0.035 प्राप्त हुआ। 0.05 सार्थकता स्तर पर r–मूल्य का सार्थक मान 0.195 है। इस प्रकार से r–मूल्य का प्राप्त मान +0.035 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–15 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।
3. निजी विद्यालय के शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।
4. आरेख 4.7 निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध प्रदर्शित किया गया है।

निष्कर्ष :–

अतः गणना करने पर r –मूल्य का प्राप्त मान +0.035 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–15 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है।

4.7.16 ***उद्देश्य–26***

निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

परिकल्पना–16

निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता हैं।

सारणी 4.26

निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध

क्षेत्र	***समूह***	***r–मूल्य***	***सार्थकता***
शिक्षण प्रभावशीलता	शिक्षक निजी विद्यालय	+0.045	स्वीकृत
निम्न शैक्षिक उपलब्धि	विद्यार्थी निजी विद्यालय		

0.05 सार्थकता स्तर पर r का सार्थक मान = 0.195

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी 4.26 में निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के r–मूल्य को प्रदर्शित किया गया है।

2. निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान व विचलन से r–मूल्य की गणना की गई। r–मूल्य +0.045 प्राप्त हुआ। 0.05 सार्थकता स्तर पर r–मूल्य का सार्थक मान 0.195 है। इस प्रकार से r–मूल्य का प्राप्त मान +0.045 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–16 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

3. निजी विद्यालय के शिक्षकों के शिक्षण एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

4. आरेख 4.7 निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध प्रदर्शित किया गया हैं।

निष्कर्ष :–

अतः गणना करने पर r –मूल्य का प्राप्त मान +0.045 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–16 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

आरेख 4.8

शिक्षण प्रभावशिलता एवं उच्च–निम्न शैक्षिक उपलब्धि मे सह–सम्बन्ध

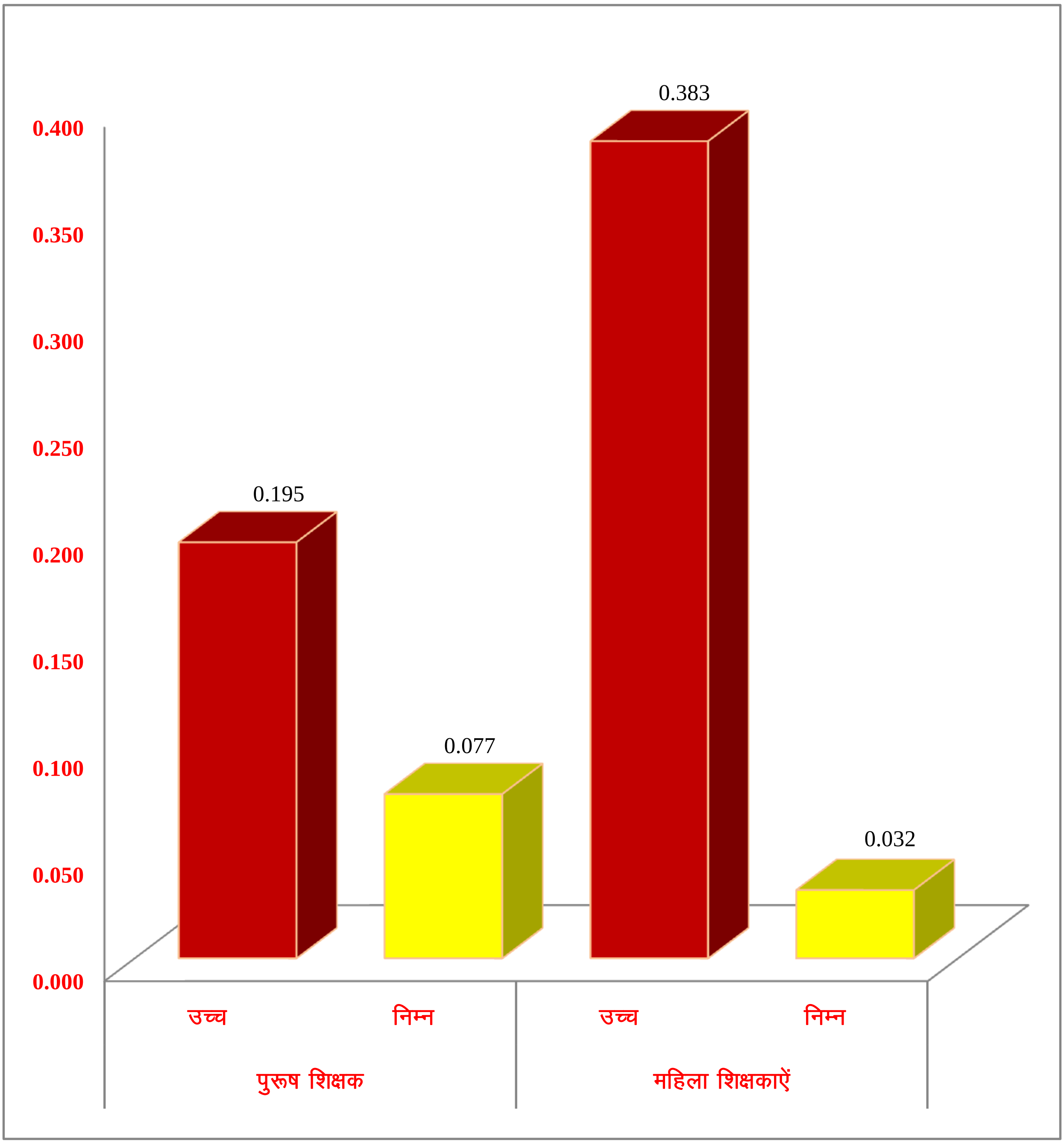

शैक्षिण उपलब्धि

4.7.17 *उद्देश्य–27*

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

परिकल्पना–17

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता हैं।

***सारणी* 4.27**

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध

क्षेत्र	***समूह***	**r–*मूल्य***	***सार्थकता***
शिक्षण प्रभावशीलता	पुरूष शिक्षक	**-0.195**	स्वीकृत
उच्च शैक्षिक उपलब्धि	विद्यार्थी		

0.05 सार्थकता स्तर पर r का सार्थक मान = **0.195**

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी 4.27 में राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के r–मूल्य को प्रदर्शित किया गया है।
2. निजी राजकीय एवं निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान व विचलन से r–मूल्य की गणना की गई। r–मूल्य -0.195 प्राप्त हुआ। 0.05 सार्थकता स्तर पर r–मूल्य का सार्थक मान 0.195 है। इस प्रकार से r–मूल्य का प्राप्त मान -0.195 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–17 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।
3. राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।
4. आरेख 4.8 राजकीय एवं निजी विद्यालयों क पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध प्रदर्शित किया गया हैं।

निष्कर्ष :–

अतः गणना करने पर r –मूल्य का प्राप्त मान -0.195 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–17 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में निम्न ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है।

4.7.18 *उद्देश्य–28*

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

परिकल्पना–18

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता हैं।

सारणी 4.28

राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध

क्षेत्र	***समूह***	**r–*मूल्य***	***सार्थकता***
शिक्षण प्रभावशीलता	पुरूष शिक्षक	+0.077	स्वीकृत
निम्न शैक्षिक उपलब्धि	विद्यार्थी		

0.05 सार्थकता स्तर पर r का सार्थक मान = **0.195**

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी 4.28 में राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के r–मूल्य को प्रदर्शित किया गया है।
2. निजी राजकीय एवं निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान व विचलन से r–मूल्य की गणना की गई। r–मूल्य +0.077 प्राप्त हुआ। 0.05 सार्थकता स्तर पर r–मूल्य का सार्थक मान 0.195 है। इस प्रकार से r–मूल्य का प्राप्त मान +0.077 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–18 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।
3. राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध नहीं है।
4. आरेख 4.8 राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध प्रदर्शित किया गया हैं।

निष्कर्ष :–

अतः गणना करने पर r –मूल्य का प्राप्त मान +0.077 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–18 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

4.7.19 *उद्देश्य–29*

राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

परिकल्पना–19

राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता हैं।

सारणी 4.29

राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध

क्षेत्र	***समूह***	**r*–मूल्य***	***सार्थकता***
शिक्षण प्रभावशीलता	महिला शिक्षिकाऐ	+0.383	अस्वीकृत
उच्च शैक्षिक उपलब्धि	विद्यार्थी		

0.05 सार्थकता स्तर पर r का सार्थक मान = **0.195**

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी 4.29 में राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के r–मूल्य को प्रदर्शित किया गया है।
2. राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान व विचलन से r–मूल्य की गणना की गई। r–मूल्य +0.383 प्राप्त हुआ। 0.05 सार्थकता स्तर पर r–मूल्य का सार्थक मान 0.195 है। इस प्रकार से r–मूल्य का प्राप्त मान +0.383 सार्थक मान 0.195 से अधिक है। अतः परिकल्पना–19 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।
3. राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं के शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध है।
4. आरेख 4.8 राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध प्रदर्शित किया गया हैं।

निष्कर्ष :–

अतः गणना करने पर r –मूल्य का प्राप्त मान +0.383 सार्थक मान 0.159 से अधिक है। अतः परिकल्पना–19 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

4.7.20 ***उद्देश्य–30***

राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

परिकल्पना–20

राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता हैं।

सारणी 4.30

राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध

क्षेत्र	***समूह***	**r–*मूल्य***	***सार्थकता***
शिक्षण प्रभावशीलता	महिला शिक्षिकाऐ	-0.032	स्वीकृत
निम्न शैक्षिक उपलब्धि	विद्यार्थी		

0.05 सार्थकता स्तर पर r का सार्थक मान = **0.195**

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

1. सारणी 4.30 में राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के r–मूल्य को प्रदर्शित किया गया है।
2. राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान व विचलन से r–मूल्य की गणना की गई। r–मूल्य -0.032 प्राप्त हुआ। 0.05 सार्थकता स्तर पर r–मूल्य का सार्थक मान 0.195 है। इस प्रकार से r–मूल्य का प्राप्त मान -0.032 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–20 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।
3. राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं के शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।
4. आरेख 4.8 राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का सह–सम्बन्ध प्रदर्शित किया गया हैं।

निष्कर्ष :–

अतः गणना करने पर r –मूल्य का प्राप्त मान -0.032 सार्थक मान 0.159 से कम है। अतः परिकल्पना–20 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है।

4.8 सार :–

प्रस्तुत शोध के चतुर्थ अध्याय में सांख्यिकी का उपयोग कर आंकड़ों का वर्गीकरण सारणीयन, विश्लेषण व व्याख्या करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि इन्हीं के आधार पर परिकल्पना को सत्य की कसौटी पर स्वीकृत तथा अस्वीकृत किया जाता है। किसी भी अन्वेषण कार्य का महत्व उसके परिणामों में निहित रहता है। अतः आँकड़ों का विश्लेषण तथा व्याख्या करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

अध्याय—पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

श्रेयान्स्यधर्मो विगुणः पर धर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वभावनयतं कर्म कुर्वन्प्नोति किल्विषम्।।

महाभारत

अध्याय पंचम
शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 *शोध सारांश :–*

प्रत्येक कार्य को आरम्भ करने से पूर्व हमें लक्ष्य निर्धारित करना होता है, बिना लक्ष्यों के कोई भी कार्य सफल नहीं माना जा सकता, ठीक उसी प्रकार शोध कार्य भी बिना लक्ष्य के सफल नहीं माना जा सकता है।

जिस प्रकार एक माली बीज बोता है, उसमें खाद, पानी देता है उसकी देखभाल करता है तथा उम्मीद करता है कि बीज फसल के रूप में परणित होंगे। ऐसा होने पर ही उसकी मेहनत सफल होती है अन्यथा उसके द्वारा किए गये कार्य का कोई अर्थ नहीं रह जाता है।

अनुसंधान की प्रक्रिया में तथ्यों का विश्लेषण कर जो निष्कर्ष दिये जाते है, इन निष्कर्षों के आधार पर भावी शोध हेतु सुझाव दिये जाते हैं।

प्रत्येक शोधकर्ता इस तथ्य से भली–भांती परिचित होता है कि निष्कर्षों के अभाव में प्रत्येक शोध कार्य अधूरा समझा जाता है। ये निष्कर्ष भाव रूप से निरूपित किये जाते हैं।

निष्कर्ष निरूपण में निष्पक्षता अत्यन्त अनिवार्य होती है। इससे निष्कर्षों की विश्वसनीयता, वैधता, शुद्धता तथा सत्यता में वृद्धि होती है। शिक्षा के क्षेत्र में ऐसे निष्कर्ष अत्यन्त मूल्यवान उपयोगी व महत्वपूर्ण होते है, यह शोध काय का अंतिम परन्तु आवश्यक बिन्दु होता है।

5.2 *समस्या कथन* :–

"शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा शिक्षण प्रभावशीलता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।"

5.2 शोध के उद्देश्य :–

1. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।
2. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।
3. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन ।
4. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन ।
5. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन ।
6. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।
7. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।
8. निजी विद्यालया के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।
9. राजकीय एवं निजी विद्यालया के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।
10. राजकीय एवं निजी विद्यालया को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।
11. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।
12. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।
13. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन।
14. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन।

15. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

16. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

17. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

18. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

19. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

20. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

21. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

22. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

23. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

24. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

25. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

26. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

27. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

28. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

29. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

30. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

5.4 ***शोध परिकल्पना*** :–

1. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

2. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति मे सार्थक अन्तर नहीं होता है।

3. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

4. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

5. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।
6. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।
7. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।
8. निजी विद्यालयों के शिक्षको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।
9. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।
10. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।
11. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।
12. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।
13. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।
14. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।
15. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।
16. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

17. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

18. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों को शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

19. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

20. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

5.5 *शोध अध्ययन हेतु चयनित उपकरण :–*

शोध अध्ययन हेतु निम्नलिखित शोध उपकरणों का उपयोग किया गया है :–

1. ***शिक्षक अभिवृत्ति परीक्षण*** :– डॉ. जयप्रकाश, डॉ. आर.पी. श्रीवास्तव, डॉ. एस.डी. कपूर।
2. ***शिक्षक प्रभावशीलता मापनी*** :– डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. डी.एन. मूथा।
3. शैक्षिक उपलब्धि हेतु कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षा की अंकतालिका के आधार पर दत्तों का संग्रह किया गया है।

5.6 *शोध परिसीमन :–*

1. शोध अध्ययन राजस्थान के कोटा जिले तक ही सीमित रखा गया है।
2. शोध अध्ययन हेतु राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम का चयन किया गया है।

3. शोध अध्ययन हेतु राजकीय विद्यालय एवं निजी विद्यालयों का चयन किया गया है।

4. शोध अध्ययन हेतु कक्षा दसवीं में अध्ययनरत विघार्थियों का चयन किया गया है।

5. शोध अध्ययन हेतु कोटा जिले के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

5.7 ***शोध विधि :–***

1. ***सर्वेक्षण*** :–

सर्वेक्षण का अर्थ है 'ऊपर से देखना' अथवा निरीक्षण करना है। सर्वेक्षण विधि की सहायता से अनेक समस्याओं का अध्ययन ही नहीं किया जाता है, बल्कि समस्याओं का समाधान ढूँढने का भी प्रयास किया जाता है। इसलिए शोधार्थी ने शोध अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

2. ***जनसंख्या*** :–

शोध अध्ययन हेतु जनसंख्या में एक विशिष्ट समूह के समस्त व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है। शोध अध्ययन हेतु जनसंख्या के रूप में राजस्थान के कोटा जिले के विभिन्न राजकीय व निजी विद्यालयों के शिक्षकों व विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

3. ***न्यादर्श*** :–

न्यादर्श के बिना शोध कार्य को पूर्ण नहीं किया जा सकता है। न्यादर्श प्रविधि शोध कार्य को व्यावहारिक तथा समय, धन, शक्ति की दृष्टि से मितव्ययी बना देती है।

(v) न्यादर्श के रूप में कुल 20 राजकीय व निजी माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है।

(vi) न्यादर्श के रूप में राजकीय व निजी विद्यालयों के 100 शिक्षकों का चयन किया गया है।

(vii) न्यादर्श हेतु राजकीय व निजी विद्यालयों के कक्षा दसवीं में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

(viii) प्रस्तुत अध्ययन के लिए शोधार्थी द्वारा यादृच्छिक विधि की लॉटरी प्रविधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया है।

4. ***विश्लेषण प्रक्रिया*** :–

शोध उपकरण से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकी का उपयोग किया गया है।

(i) मध्यमान,

(ii) मानक विचलन,

(iii) टी परीक्षण,

(iv) सह–सम्बन्ध।

5.8 ***शोध अध्ययन के निष्कर्ष :–***

शिक्षक आज मात्र छात्रों के शैक्षिक विकास के लिए ही जिम्मेदार नहीं माने जाते हैं, बल्कि उन पर उनके सर्वांगीण विकास का दायित्व होता है। अधिगमकर्त्ताओं की रूचि, अभिवृत्ति, आकांक्षा, आवश्यकता, अभिक्षमता, बौद्धिक योग्यता, वैयक्तिक विभिन्नता आदि के परिपेक्ष्य में उन्हें शिक्षित करने का प्रयास करना उनका दायित्व माना जाता है ताकि अन्तर्निहित क्षमताओं का पूर्ण विकास सम्भव हो सके। इसलिए शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति होनी चाहिए।

31. राजकीय एवं निजी विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।

32. राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।

33. निजी विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।

34. राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।

35. राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओ की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।
36. राजकीय एवं निजी विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।
37. राजकीय विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।
38. निजी विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।
39. राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।
40. राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओ की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।
41. टी–मूल्य का प्राप्त मान 0.33 सार्थक मान 1.96 से कम है। अतः परिकल्पना–1 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।
42. टी–मूल्य का प्राप्त मान 0.60 सार्थक मान 1.96 से कम है। अतः परिकल्पना–2 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।
43. टी–मूल्य का प्राप्त मान 2.69 सार्थक मान 1.96 से अधिक है। अतः परिकल्पना–3 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है।
44. टी–मूल्य का प्राप्त मान 3.07 सार्थक मान 1.96 से अधिक है। अतः परिकल्पना–4 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है।

45. गणना करने पर r–मूल्य का प्राप्त मान +0.305 सार्थक मान 0.195 से अधिक है। अतः परिकल्पना–5 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

46. गणना करने पर r–मूल्य का प्राप्त मान +0.097 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–6 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

47. गणना करने पर r –मूल्य का प्राप्त मान +0.530 सार्थक मान 0.195 से अधिक है। अतः परिकल्पना–7 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

48. गणना करने पर r –मूल्य का प्राप्त मान +0.088 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–8 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

49. गणना करने पर r –मूल्य का प्राप्त मान +0.357 सार्थक मान 0.195 से अधिक है। अतः परिकल्पना–9 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

50. गणना करने पर r –मूल्य का प्राप्त मान +0.129 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–10 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत को जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

51. गणना करने पर r –मूल्य का प्राप्त मान +0.505 सार्थक मान 0.195 से अधिक है। अतः परिकल्पना–11 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

52. गणना करने पर r –मूल्य का प्राप्त मान -0.158 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–12 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है।

53. गणना करने पर r–मूल्य का प्राप्त मान +0.359 सार्थक मान 0.195 से अधिक है। अतः परिकल्पना–13 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

54. गणना करने पर r–मूल्य का प्राप्त मान +0.118 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–14 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

55. गणना करने पर r –मूल्य का प्राप्त मान +0.035 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–15 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

56. गणना करने पर r –मूल्य का प्राप्त मान +0.045 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–16 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

57. गणना करने पर r –मूल्य का प्राप्त मान -0.195 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–17 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में निम्न ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है।

58. गणना करने पर r –मूल्य का प्राप्त मान +0.077 सार्थक मान 0.195 से कम है। अतः परिकल्पना–18 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध है।

59. गणना करने पर r –मूल्य का प्राप्त मान +0.383 सार्थक मान 0.159 से अधिक है। अतः परिकल्पना–19 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

60. गणना करने पर r –मूल्य का प्राप्त मान -0.032 सार्थक मान 0.159 से कम है। अतः परिकल्पना–20 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है।

शिक्षक ही समाज के लिए पथ–प्रदर्शक के रूप, में आदर्श के रूप में और एक अनुकरणीय व्यक्तित्व के रूप में स्वोकार किये जाते हैं। शिक्षक छात्रों के शैक्षिक विकास के लिए ही जिम्मेदार नहीं माने जाते, बल्कि उन पर उनके सर्वांगीण विकास का दायित्व होता है। अतः शिक्षकों का प्रभावशाली होना चाहिए।

5.9 *शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ* :–

1. शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति विषय पर प्रस्तुत शोध शिक्षकों को शिक्षण के प्रति जागरूकता लाने में उपयोगी साबित हो सकेगा।
2. शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एक ऐसा विषय है, जो सीधे तौर पर विद्यार्थियों के भविष्य के साथ जुड़ा हुआ है, अतः प्रस्तुत शोध शिक्षकों में शिक्षण के प्रति जागरूकता लाकर विद्यार्थियों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में उपयोगी साबित हो सकेगा।
3. शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति विषय पर प्रस्तुत शोध द्वारा शिक्षक शिक्षण के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति के प्रति जागरूक होकर इससे बच सकेंगे।
4. शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति विषय पर प्रस्तुत शोध शिक्षको को अपने शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सकारात्मक परिवर्तन लाने में उपयोगी साबित हो सकेगा।
5. शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति विषय पर प्रस्तुत शोध के द्वारा शिक्षकों का परिवर्तित व्यवहार समाज और राष्ट्र हित में उपयोगी होगा।
6. शिक्षकों की शिक्षण के प्रति प्रभावशीलता विषय पर प्रस्तुत शोध के द्वारा शिक्षकों का परिवर्तित व्यवहार शिक्षा में गुणात्मक सुधार ला सकेगा।
7. शिक्षकों की शिक्षण के प्रति प्रभावशीलता विषय पर प्रस्तुत शोध शिक्षकों में शिक्षण के प्रति जागरूकता लाने के साथ ही विद्यार्थियो के लिए भी उपयोगी साबित हो सकेगा।
8. शिक्षकों की शिक्षण के प्रति प्रभावशीलता विषय पर प्रस्तुत शोध के द्वारा शिक्षकों का परिवर्तित व्यवहार विद्यार्थिया में शिक्षकों के प्रति सम्मान जगाने में सफल साबित हो सकेगा।
9. शिक्षकों की शिक्षण के प्रति प्रभावशीलता विषय पर प्रस्तुत शोध भावी शिक्षकों हेतु मार्गदर्शक एवं उपयोगो सिद्ध हो सकेगा।
10. शिक्षकों की शिक्षण के प्रति प्रभावशीलता विषय पर प्र्स्तुत शोध से शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में हुआ सकारात्मक परिवर्तन विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के प्रति उपयोगी सिद्ध हो सकेगा।

5.10 *भावी शोध अध्ययन हेतु सुझाव* :–

1. वर्तमान शोध में माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रति अभिवृत्ति तथा शिक्षण प्रभावशीलता का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के साथ सम्बन्ध का अध्ययन किया गया है। अतः भावी शोध में उच्च माध्यमिक अथवा प्राथमिक स्तर के शिक्षकों को लेकर शोध अध्ययन किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध का क्षेत्र शहरी क्षेत्र से बढ़ा कर ग्रामीण क्षेत्रों में किया जा सकता है।
3. सेवा पूर्ण व सेवारत अध्यापकों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. वर्तमान शोध अध्ययन का कोटा जिले तक की सीमित रखा गया है। अतः भविष्य में राजस्थान के अन्य जिलों को भी सम्मिलित कर शोध कार्य को अधिकाधिक गहन बनाया जा सकता है।
5. वतर्मान शोध में अध्यापकों के न्यादर्श को सम्मिलित किया गया है। भविष्य में इसे आवश्यकता के अनुसार बढ़ाया जा सकता है।
6. शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति व शिक्षण प्रभावशीलता के द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जा सकता है।
7. वर्तमान शोध में शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति व शिक्षण प्रभावशीलता के स्थान पर प्रधानाध्यापक के शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति व शिक्षण प्रभावशीलता पर अध्ययन किया जा सकता है।
8. प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के शिक्षकों में शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति व शिक्षण प्रभावशीलता का तुलतात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
9. उच्च मानसिक एवं औसत मानसिक योग्यता के शिक्षकों में शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति व शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन किया जा सकता है।

10. वर्तमान शोध अध्ययन में राजकीय व निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति व शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया अतः भावी शोध में केन्द्रीय विद्यालयों या नवोदय विद्यालयों के शिक्षकों पर शोध किया जा सकता है।

5.11 *सार* :–

शोध के इस अध्याय में दत्तों के विश्लेषण एवं विवेचन से प्राप्त निष्कर्षों एवं सुझावों को प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत अध्याय में अध्ययन के निर्धारित उद्देश्य व परिकल्पनाओं के सत्यापन से प्राप्त परिणामों के आधार पर शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति व शिक्षण प्रभावशिलीता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह सम्बन्ध के विषय में व्याख्या दी गई है। साथ ही वर्तमान शोध अध्ययन की शिक्षा जगत में उपयोगिता एवं महत्व और शैक्षिक निहितार्थ को प्रस्तुत किया गया है।

शोध निष्कर्ष

उर्ध्वकाहुर्विरौम्येष न च कश्चित् श्रुणोति मे।

धर्मादर्शश्चकामश्च स किमर्थं न सेव्यते।।

महाभारत

शोध निष्कर्ष

शिक्षक आज मात्र छात्रों के शैक्षिक विकास के लिए ही जिम्मेदार नहीं माने जाते हैं, बल्कि उन पर उनके सर्वांगीण विकास का दायित्व होता है। अधिगमकर्त्ताओं की रूचि, अभिवृत्ति, आकांक्षा, आवश्यकता, अभिक्षमता, बौद्धिक योग्यता, वैयक्तिक विभिन्नता आदि के परिपेक्ष्य में उन्हें शिक्षित करने का प्रयास करना उनका दायित्व माना जाता है ताकि अन्तर्निहित क्षमताओं का पूर्ण विकास सम्भव हो सके। इसलिए शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति हानी चाहिए।

1. राजकीय एवं निजी विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।
2. राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।
3. निजी विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।
4. राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।
5. राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओ की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।
6. राजकीय एवं निजी विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।
7. राजकीय विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।
8. निजी विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।
9. राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।
10. राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओ की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।

11. परिकल्पना–1 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।

12. परिकल्पना–2 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण क प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।

13. परिकल्पना–3 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है।

14. परिकल्पना–4 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है।

15. परिकल्पना–5 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

16. परिकल्पना–6 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

17. परिकल्पना–7 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

18. परिकल्पना–8 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

19. परिकल्पना–9 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

20. परिकल्पना–10 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।
21. परिकल्पना–11 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।
22. परिकल्पना–12 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है।
23. परिकल्पना–13 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।
24. परिकल्पना–14 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।
25. परिकल्पना–15 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।
26. परिकल्पना–16 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।
27. परिकल्पना–17 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में निम्न ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है।

28. परिकल्पना–18 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध है।

29. परिकल्पना–19 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

30. परिकल्पना–20 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है।

शिक्षक ही समाज के लिए पथ–प्रदर्शक के रूप, में आदर्श के रूप में और एक अनुकरणीय व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार किये जाते हैं। शिक्षक छात्रों के शैक्षिक विकास के लिए ही जिम्मेदार नहीं माने जाते, बल्कि उन पर उनके सर्वांगीण विकास का दायित्व होता है। अतः शिक्षकों का प्रभावशाली होना चाहिए।

सारांश

धारणात् धर्म मित्याहु, धर्मो धारयति प्रजाः।

महाभारत

शोध सारांश

1.1 ***प्रस्तावना*** :–

ब्रूबेकर के अनुसार, ''शिक्षण उन स्थितियों की व्यवस्था एवं निर्माण है, जिनमें कुछ अन्तराल तथा बाधाएं हैं, जिनका किसी व्यक्ति को सामना करना पड़ता है, उसके करने से वह कुछ सीखेगा।'' ***ब्रूबेकर*** की परिभाषा से शिक्षण का मुक्तात्मक स्वरूप स्पष्ट होता है। मुक्तात्मक शिक्षण के अन्तर्गत शिक्षक को प्रमुखता प्रदान की जाती है।

आज की शैक्षिक परम्परा में यह सारी प्रक्रिया शिक्षक के द्वारा निर्वहन की जा रही है, अर्थात् शिक्षक के बिना यथोचित शिक्षा की परिकल्पना संभव प्रतीत नहीं होती है। शिक्षक का व्यक्तित्व शिक्षण को प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जैसे–विषय पर उसका अधिकार, छात्रों के लिए मृदुल व्यवहार, ऊँची आवाज, निष्पक्षता, चरित्र तथा उसकी योग्यता की छाप बालक पर पड़े बिना नहीं रहती हैं।

शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक का स्वयं का व्यक्तित्व आकर्षक हो। शिक्षार्थी का शिक्षण बिन्दु के प्रति झुकाव, उसके उद्देश्य को पूर्णतः समझना, विषय–वस्तु की उपयुक्तता एवं सरलता, पाठ–योजना का निर्माण, सहायक सामग्री का उचित प्रयोग, कक्षा वातावरण की उपयुक्तता, भौतिक सुविधाएँ, विद्यार्थी तथा अध्यापक का मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य, अभिप्रेरणा जागृत करने की पद्धति, जिससे छात्र तथा अध्यापक दोनों में आत्मविश्वास तथा आत्मानुभूति हो आदि शिक्षण के ही प्रभावकारी तत्त्व हैं। शिक्षक को सदैव उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर शिक्षण करना चाहिए।

यदि शिक्षक आधारभूत शिक्षण कला में निपुण नहीं है तो वह छात्रों का उचित मार्ग–दर्शन करने और उनमें वांछित परिवर्तन लाने में सफल नहीं हो सकता है।

शिक्षक को शिक्षण कला में निपुण होने के लिये शिक्षण क्रिया के समय शिक्षक द्वारा प्रतिपादित व्यवहारों की जानकारी करके उनका अभ्यास करना नितान्त आवश्यक है।

प्रभावशाली शिक्षण के विभिन्न शिक्षण कौशलों का ज्ञान तथा उसकी पहचान करना एक कुशल शिक्षक के लिए महत्वपूर्ण कार्य है। इस सम्बन्ध में अनेक विद्वानों ने शिक्षण प्रभावशीलता तथा शिक्षण के कौशलों का अध्ययन किया है।

शिक्षक की शिक्षण म अभिवृत्ति व प्रभावशीलता का महत्व होता है। शिक्षकों की शिक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विद्यार्थी को उन्नत बनाती है। शिक्षक सकारात्मक अभिवृत्ति के द्वारा ही विद्यार्थी के अन्तर्मन की जिज्ञासा को शान्त कर पाता है।

शिक्षकों की शिक्षण के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति विद्यार्थियों के जीवन पर दुष्प्रभाव डालतो है, और इस कारण से विद्यार्थी कुण्ठाओं से ग्रस्त हो जाता है। जब तक शिक्षक का शिक्षण एवं विषयवस्तु के सम्प्रेषण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण नहीं होता है, तब तक शिक्षण स्वाभाविक एवं प्रभावी नहीं हो पाता है।

1.2 ***समस्या कथन*** :–

"शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति तथा शिक्षण प्रभावशीलता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।"

1.3 ***शोध के उद्देश्य*** :–

1. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।
2. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।
3. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन ।
4. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन ।

5. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन ।
6. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।
7. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।
8. निजी विद्यालया के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।
9. राजकीय एवं निजी विद्यालया के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।
10. राजकीय एवं निजी विद्यालया को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन।
11. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।
12. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।
13. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन।
14. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन।
15. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।
16. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।
17. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

18. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

19. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

20. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

21. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

22. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

23. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

24. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

25. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

26. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

27. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्याथियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

28. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

29. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

30. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह–सम्बन्ध का अध्ययन।

1.4 *शोध परिकल्पना* :–

1. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

2. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

3. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

4. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

5. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

6. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

7. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

8. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

9. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

10. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

11. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

12. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

13. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

14. राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

15. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

16. निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

17. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

18. राजकीय एवं निजी विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

19. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

20. राजकीय एवं निजी विद्यालयों को महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता और विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं होता है।

1.5 *शोध अध्ययन हेतु चयनित उपकरण :–*

शोध अध्ययन हेतु निम्नलिखित शोध उपकरणों का उपयोग किया गया है :–

1. ***शिक्षक अभिवृत्ति परीक्षण*** :– डॉ. जयप्रकाश, डॉ. आर.पी. श्रीवास्तव, डॉ. एस.डी. कपूर।
2. ***शिक्षक प्रभावशीलता मापनी*** :– डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. डी.एन. मूथा।
3. शैक्षिक उपलब्धि हेतु कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षा की अंकतालिका के आधार पर दत्तों का संग्रह किया गया है।

1.6 *शोध परिसीमन :–*

1. शोध अध्ययन राजस्थान के कोटा जिले तक ही सीमित रखा गया है।
2. शोध अध्ययन हेतु राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम का चयन किया गया है।
3. शोध अध्ययन हेत, राजकीय विद्यालय एवं निजी विद्यालयों का चयन किया गया है।

4. शोध अध्ययन हेतु कक्षा दसवीं में अध्ययनरत विघार्थियों का चयन किया गया है।

5. शोध अध्ययन हेतु कोटा जिले के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

1.8 *शोध विधि :–*

1. ***सर्वेक्षण*** :–

सर्वेक्षण का अर्थ है 'ऊपर से देखना' अथवा निरीक्षण करना है। सर्वेक्षण विधि की सहायता से अनेक समस्याओं का अध्ययन ही नहीं किया जाता है, बल्कि समस्याओं का समाधान ढूँढने का भी प्रयास किया जाता है। इसलिए शोधार्थी ने शोध अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

2. ***जनसंख्या*** :–

शोध अध्ययन हेतु जनसंख्या में एक विशिष्ट समूह के समस्त व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है। शोध अध्ययन हेतु जनसंख्या के रूप में राजस्थान के कोटा जिले के विभिन्न राजकीय व निजी विद्यालयों के शिक्षकों व विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

3. ***न्यादर्श*** :–

न्यादर्श के बिना शोध कार्य को पूर्ण नहीं किया जा सकता है। न्यादर्श प्रविधि शोध कार्य को व्यावहारिक तथा समय, धन, शक्ति की दृष्टि से मितव्ययी बना देती है।

(i) न्यादर्श के रूप में कुल 20 राजकीय व निजी विद्यालयों का चयन किया गया है।

(ii) न्यादर्श के रूप में राजकीय व निजी विद्यालयों के 100 शिक्षकों का चयन किया गया है।

(iii) न्यादर्श हेतु राजकीय व निजी विद्यालयों के कक्षा दसवीं में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया ह।

(iv) प्रस्तुत अध्ययन के लिए शोधार्थी द्वारा यादृच्छिक विधि की लॉटरी प्रविधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया है।

4. ***विश्लेषण प्रक्रिया*** :–

शोध उपकरण से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकी का उपयोग किया गया है।

(v) मध्यमान,

(vi) मानक विचलन,

(vii) टी परीक्षण,

(viii) सह–सम्बन्ध।

1.8 *शोध अध्ययन के निष्कर्ष :–*

शिक्षक आज मात्र छात्रों के शैक्षिक विकास के लिए ही जिम्मेदार नहीं माने जाते हैं, बल्कि उन पर उनके सर्वांगीण विकास का दायित्व होता है। अधिगमकर्त्ताओं की रूचि, अभिवृत्ति, आकांक्षा, आवश्यकता, अभिक्षमता, बौद्धिक योग्यता, वैयक्तिक विभिन्नता आदि के परिपेक्ष्य में उन्हें शिक्षित करने का प्रयास करना उनका दायित्व माना जाता है ताकि अन्तर्निहित क्षमताओं का पूर्ण विकास सम्भव हो सके। इसलिए शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति होनी चाहिए।

1. राजकीय एवं निजी विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।
2. राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।
3. निजी विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।
4. राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षको की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।
5. राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओ की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति साधारण तथा औसत स्तर की हैं।

6. राजकीय एवं निजी विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।
7. राजकीय विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।
8. निजी विद्यालय के शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।
9. राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षको की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।
10. राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओ की शिक्षण प्रभावशीलता सर्वश्रेष्ठ स्तर की हैं।
11. परिकल्पना–1 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।
12. परिकल्पना–2 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।
13. परिकल्पना–3 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है।
14. परिकल्पना–4 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों एवं राजकीय एवं निजी विद्यालयों की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है।
15. परिकल्पना–5 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च्व शैक्षिक उपलब्धि में उच्च्व धनात्मक सह–सम्बन्ध है।
16. परिकल्पना–6 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

17. परिकल्पना–7 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

18. परिकल्पना–8 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

19. परिकल्पना–9 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

20. परिकल्पना–10 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

21. परिकल्पना–11 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

22. परिकल्पना–12 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है।

23. परिकल्पना–13 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

24. परिकल्पना–14 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

25. परिकल्पना–15 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

26. परिकल्पना–16 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि निजी विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

27. परिकल्पना–17 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में निम्न ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है।

28. परिकल्पना–18 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह–सम्बन्ध है।

29. परिकल्पना–19 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

30. परिकल्पना–20 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि राजकीय एवं निजी विद्यालय की महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशिलता एवं विद्यार्थियों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि में निम्न ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है।

शिक्षक ही समाज के लिए पथ–प्रदर्शक के रूप, में आदर्श के रूप में और एक अनुकरणीय व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार किये जाते हैं। शिक्षक छात्रों के शैक्षिक विकास के लिए ही जिम्मेदार नहीं माने जाते, बल्कि उन पर उनके सर्वांगीण विकास का दायित्व होता है। अतः शिक्षकों का प्रभावशाली होना चाहिए।

1.9 *भावी शोध हेतु सुझाव* :–

1. वर्तमान शोध में माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रति अभिवृत्ति तथा शिक्षण प्रभावशीलता का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के साथ सम्बन्ध का अध्ययन किया गया है। अतः भावी शोध में उच्च माध्यमिक अथवा प्राथमिक स्तर के शिक्षकों को लेकर शोध अध्ययन किया जा सकता है।

2. प्रस्तुत शोध का क्षेत्र शहरी क्षेत्र से बढ़ा कर ग्रामीण क्षेत्रों में किया जा सकता है।
3. सेवा मूर्ण व सेवारत अध्यापकों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. वर्तमान शोध अध्ययन का कोटा जिले तक की सीमित रखा गया है। अतः भविष्य में राजस्थान के अन्य जिलों को भी सम्मिलित कर शोध कार्य को अधिकाधिक गहन बनाया जा सकता है।
5. वतर्मान शोध में अध्यापकों के न्यादर्श को सम्मिलित किया गया है। भविष्य में इसे आवश्यकता के अनुसार बढ़ाया जा सकता है।
6. शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति व शिक्षण प्रभावशीलता के द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

''परित्राणाय साधूनां विनाशायश्च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।''

महाभारत

संदर्भ ग्रन्थ सूची

(1) हिन्दी सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1	अरोड़ा, रीता (2005)	:	''शिक्षण एवं अधिगम के मनोसामाजिक आधार'' शिक्षा प्रकाशन, जयपुर
2	कपिल, एच के. (1979)	:	''अनुसंधान विधियाँ'' द्वितीय संस्करण हरप्रसाद भार्गव हाऊस, आगरा
3	ढोढियाल, एवं पाठक (1990)	:	''शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
4	पाठक, पी.डी. (2007)	:	''शिक्षा मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
5	भटनागर, आर. पी. (1973)	:	''शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व'' द्वितीय संस्करण विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
6	भटनागर, सुरेश (2009)	:	''शिक्षा मनोविज्ञान'' लायल बुक डिपो, मेरठ
7	मेहता, वी.आर. (2006)	:	''उभरते भारतीय समाज में अध्यापक एवं शिक्षा'' कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा
8	शर्मा, आर.एस. (2004)	:	''शिक्षा अनुसंधान'', आर.लाल बुक डिपो, मेरठ
9	सुखिया, एस.पी. (1973)	:	''शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व'' द्वितीय संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
10	त्रिवेदी एवं शुक्ला (2008)	:	रिसर्च मैथ्डोलॉजी'' कॉलेज बुक डिपो, जयपुर

(2) शब्द कोश और एनसाईक्लोपीडिया की सूची :–

1 वर्मा और शाही (2009) : ''ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश'' ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली

2 शैली, वेहक्यर (2006) : ''ऑक्सफोर्ड एडवांस लर्नर डिक्सनरी'' ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली

(3) हिन्दी शोध पत्र–पत्रिकाऐं :–

1 भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, भारतीय इंस्टीट्यूट ऑफ रिसर्च, लखनऊ जुलाई–दिसम्बर एवं जनवरी–जून (1980 से 2011)

2 भारतीय आधुनिक शिक्षा NCERT, नई दिल्ली अंक–3, वर्ष–22 जनवरी 2015

3 वशिष्ठ, प्रज्ञा : भविष्य की शिक्षा एवं शिक्षक अभिवृत्ति ; शिक्षा मित्र (2011)

4 शिक्षक प्रभावशीलता एवं छात्र उपलब्धि ; नई शिक्षा (2007)

5 अतिरिक्त कार्यभार एवं शिक्षक प्रभावशीलता ; विश्वज्योति (2009)

6 शिक्षा का दार्शनिक स्वरूप एवं शिक्षक अभिवृत्ति ; शैक्षिक मंथन (2010)

(4) शोध प्रबन्ध :–

1. खण्डेलवाल, मन्जू (1988) ''अध्यापन व्यवसाय के प्रति पूर्व सेवारत तथा सेवारत प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन'', शोध प्रबन्ध ।

2. राय, एस. (1990) ''शिक्षकों की अपने छात्रों तथा उनकी कार्य संतुष्टि के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन'', शोध प्रबन्ध ।

3. काविया, शक्तिबाला (2005) ''पूर्व प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन'', लघु शोध प्रबन्ध, ज. रा.ना. राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर (राजस्थान) ।

4. मुवीन, मो. (2006) ''प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का लिंग, योग्यता व परिवेश के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन'', शोध प्रबन्ध।

5. दकशिनामुर्ति, के. (2007) ''इन इन्टरेक्शन इफेक्ट ऑफ टीचर्स टीचिंग इफेक्टिवनेस, टीचर्स पर्सनेलिटी एण्ड टीचर्स एटीट्यूड ऑन एकेडेमिक एचीवमेन्ट इन सोशल साइन्स अमंग स्टूडेन्ट्स स्टडिंग इन सैकण्डरी स्कूल।''

6. सिंह, गुरमीत (2007) ''जॉब सेटिस्फेक्शन ऑफ टीचर्स एज्यूकेटर इन रिलेशन टू देयर एटीट्यूड टूवर्डस टीचिंग''। शोध प्रबन्ध।

7. जैन, शीतल (2009) ''सरकारी व निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।''

8. चौधरी, के.के. एवं कुमार, अरविन्द (2011) ''अशासकीय एवं विद्याभारती संचालित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।'' शोध प्रबन्ध।

9. भंडारकर, बी.जी. (1980) –''ए स्टडी ऑफ पॉलीटेक्निक टीचर्स एटीट्यूड टूवर्ड्स टीचिंग प्रोफेशन एण्ड इट्स कोरिलेट्स।''

10. श्रीवास्तव, रमाकुमारी (1980) – ''उदयपुर विश्वविद्यालय में शिक्षण–प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति'' (अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध, उदयपुर विश्वविद्यालय)।

11. जैन, बी (1982) – शिक्षकों के कक्षागत व्यवहार तथा उनकी व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।

12. रामचन्द्रन, जी. (1991) –''शिक्षक व छात्रों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।''

13. रॉय, शिप्रा (1992) –''छात्रों के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति व उनकी कार्य संतुष्टि के मध्य तुलनात्मक अध्ययन''।

14. भटनागर, वीनू (1996) –''जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान एवं सरकारी शिक्षक प्रशिक्षण के प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति एवं स्वधारणा का तुलनात्मक अध्ययन।''

15. बाला, पी. (1997) –''ए स्टडी ऑफ जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ नवोदय स्कूल टीचर्स इन एटीट्यूड टूवर्ड्स टीचिंग प्रोफेशन।''

16. पुष्पम, ए.एम.एल. (2003) –''एटीट्यूड टूवर्ड्स टीचिंग प्रोफेशन एण्ड जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ वूमेन टीचर्स इन कोयम्बटूर।''

17. काविया, शक्तिबाला (2005) –''पूर्व प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।'' अप्रकाशित लघुशोध प्रबंध, 2005, ज.रा.ना. राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड विश्वविद्यालय, उदयपुर ।

18. गिल, टी.के. एवं सेनी, एस.के. (2005) –''इफेक्ट ऑफ टीचर एज्यूकेशन ऑन एटीट्यूड ऑफ स्टूडेन्ट टीचर्स टूवर्डस द टीचिंग प्रोफेशन।''

19. बरण्डा, रणजीत कुमार (2006) – ''आर.पी.एस.सी. से चयनित तृतीय श्रेणी के शिक्षकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।''

20. सुमंगल, वी. एवं उषादेवी, वी.के. (2008) –''वूमन टीचर्स एटीट्यूड टूवर्ड्स टीचिंग प्रोफेशन एण्ड सक्सेस इन टीचिगं''।

21. कुमार, डी. (2009) – ''बेसिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता अभिवृत्तियों तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता एवं समर्पण स्तर का अध्ययन।''

22. लेसिंग, कॉर्ली जे. (2009) -''टीचर्स एटोट्यूड टूवर्ड्स द गिफ्टिड चिल्ड्रन, द इम्पोरटेन्स ऑफ प्रोफेशनल डेवलपमेन्ट एण्ड स्कूल''।

23. गुप्ता (1982) – लिंग एवं आर्थिक स्तर के आधार पर जिज्ञासा और उपलब्धि के साथ सम्बन्ध का अध्ययन।

24. वाल्टर (1985) – शिक्षकों के निर्णय लेने की क्षमता में शिक्षकों के ज्ञान के सम्बन्ध पर एक अध्ययन।

25. वाली (1985) –शिक्षण प्रभावशीलता के शैक्षिक सम्बन्ध के कारणों का अध्ययन।

26. हुसैन (1986) –हाई स्कूल शिक्षक की असंतुलन भूमिका, उनके शिक्षण प्रभावशीलता एवं शैक्षिक विरक्तता के सम्बन्ध में अध्ययन।

27. ओकेच (1988) –विद्यार्थियों के लिए शिक्षकों की अभिवृत्ति का प्रमुख तत्व प्रभावशाली शिक्षण पर एक अध्ययन।

28. सिंह (1988) –शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता और उनकी कार्य सन्तुष्टि पर अध्ययन।

29. अग्रवाल (1988) –"अधिक प्रभावशाली और कम प्रभावशाली शिक्षकों के सम्बन्धित कारक और समायोजन समस्या का अध्ययन"।

30. मोरे (1988) –शिक्षण प्रभावशीलता, शिक्षण अभिवृत्ति और व्यक्तित्व के गुणों के बीच सम्बन्धों का परीक्षण।

31. अतरिया (1989) –शिक्षकों के मूल्य, कार्य संतुष्टि का उनकी शैक्षणिक प्रभावशीलता से सम्बंधों को महाविद्यालय स्तर पर अध्ययन।

32. अब्राहम (1994) –कॉलेज के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षक प्रभावशीलता पर एक शोध अध्ययन।

33. गेरा एवं आहुजा (2001) –नवीं कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और कक्षा कक्ष वातावरण और विद्यार्थियों की शैक्षिक तनाव के सम्बन्ध पर एक अध्ययन।

(5) English Books :-

1	Aggarwal, JC (2002)	:	"Educational Research" Arya Book Depot Agra.
2	Best, John W. & James V.Khan (1986)	:	"Research in Education", Prentice Hall of India Private Limited, New Delhi-110111
3	Insko, Chester A (1967)	:	"Theories of attitude change", Newyork, Appleton century croft.
4	Sharma, Vijay Mohan (1990)	:	"Research techniques", National Publishing House, Dariyaganj, New Delhi.
5	Tiwari, R.N. & Shukla, D.P. (1996)	:	"Research Methodology", Radha Publications, New Delhi
6	Venkataiah, N. (2001)	:	"Educational Research in Indian Universities" APH Publishing Corporation, New Delhi-110002
7	Verma, M(1965)	:	:An introduction to educational and psychological research", Asia Publishing House, New Delhi

(6) Survey and Journals:-

1 Buch, M.B. (1974) "First Survey of Research in Education, Entre of Advanced Study in Education Faculty of Education and Psychology", M.S. University, Baroda

2 Buch, M.B. (1972-1978) "Second Survey of Research in Education", Society for Edu. Res. and Development, Baroda

3 Buch, M.B. "Third Survey of Education Research, NCERT, (1983-1988), New Delhi

4 Buch, M.B. "Forth Survey of Education Research, NCERT, Vol.I, II (1988-

92), New Delhi

5 Sharma, S.K. "Fifth Survey of Education Research, NCERT, Vol.I, II (1993-98), New Delhi

6 Sharma, S.K. "Sixth Survey of Education Research, NCERT, Vol.I, II (1998-2003), New Delhi

7 Dissertation Abstract International, The Humanities and Social Science, (2009) Vol.69,70 No.1-10

8 Indian Journal of Education Research, NCERT, New Delhi (2009) Vol.-20,23,24,28

9 Journal of Teacher Education and Research, Vol-2, No.I, Indian Educational Abstracts Jan and July 2007

10 Indian Educational Review Vol.44 No.I Jan-2008

(7) Abstracts, Dissertation and Thesis :-

1. More, R.T. (1988) A study of the relationship between Personality aptitude for teaching and effectivness of Secondary teachers. Ph.D. Educ., Nagpur University.

2. Srivastava, Madhu Bala (1989) “The impact of the Teacher Education Programme of Lucknow University on Pupil - Teacher’s attitude and taching efficiency. Ph.D. Edu. University of Lucknow.

3. Patil, G.G. and Deshmukh, D.V. (1993) A study of the relationship between aptitutde in teaching and teaching Efficiency of pupil teachers. Research Bulletin Maharashtra State Council of Educational Research and Training Vol.- XXIII (1 & 2) 9-13 (IEA 01st July, 1996).

(8) Website :_

1. http://www.freedictionary.com

2. http://www.shodhganga.inflibnet.ac.in

3. http://www.knowledgecommission.gov.in

4. www.wallacefoundation.org
5. www.ncert.nic.in
6. www.unicef.org
7. www.dissertation.com
8. www.wikepedia.com
9. www.sagepublication.com
10. www.journal.com

परिशिष्ट

''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः।
अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।''

महाभारत

परिशिष्ट–1

TEACHING APTITUDE TEST

Developed by Dr. Jai Prakash, Dr. R. P. Srivastava
and Dr. S. D. Kapoor

इन्हें भरिये –

1. Name of Teacher …………………………………… Age ….. years. Sex:Male/Female
2. Qualification: M.A./M.Sc./M.Com./B.Ed./M.Ed./Any other
3. Teaching experience …………. Years
4. Name of School ……………………………………………………..
5. Type of Institution (1) Boys/Girls (2) Government/Private

निर्देश

1. निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान पूर्वक पढ़िये।
2. यदि निर्देशो में कोई बात समझ में न आये तो परीक्षक से अवश्य पूछ लीजिये।
3. कृपया उत्तर–पत्र में अपना नाम, योग्यता, आयु, पद आदि स्पष्ट लिखिये। इस पुस्तिका में न तो कुछ लिखिये और न ही किसी प्रकार का चिन्ह बनाइये।
4. उत्तर देते समय सामान्य परिस्थिति के विषय में सोचिये, किसी विशेष स्थिति का विचार न कीजिये।
5. उत्तर देने के लिए समय का कोई प्रबन्ध नहीं है, किन्तु जितनी शीध्रता से हो, काम कीजिये।
6. कृपया प्रत्येक वक्तव्य का उत्तर दीजिये।

   उत्तर लिखने की विधि –

   इस पुस्तिका में 150 वक्तव्य दिये गय है, जिनके द्वारा आपके अध्यापन सम्बन्धी विचारों का पता लगाने का प्रयत्न किया गया है। प्रत्येक वक्तव्य को पढ़िये और निर्णय कीजिए कि आपका क्या विचार है या आप कैसा

अनुभव करते है। जैसा भी आपका विचार हो या जैसा भी आप अनुभव करते हों, वैसा अपना उत्तर दिये हुए उत्तर–पत्र पर यथा–स्थान लिखिये।

यदि आप दिये हुए वक्तव्य से पूर्ण सहमत हों तो पू.स. के नीचे बने खानें में सही का (✔) चिन्ह बना दीजिए।

यदि आप दिये हुए वक्तव्य से पूर्ण सहमत हों तो स. के नीचे बने खानें में सही का (✔) चिन्ह बना दीजिए।

यदि आप अनिश्चित या द्विविधा में हों, तो द्वि. के नीचे बने खानें में सही का (✔) चिन्ह बना दीजिए।

यदि आप दिये हुए वक्तव्य से असहमत हों तो अस. के नीचे बने खानें में सही का (✔) चिन्ह बना दीजिए।

यदि आप दिये हुए वक्तव्य से पूर्ण असहमत हों तो पू.अस. के नीचे बने खानें में सही का (✔) चिन्ह बना दीजिए।

भाग 1

1. बहुधा अध्यापक को दूसरे के साथ काम करने एवं दूसरों के लिए काम करने में आनन्द मिलता है।
2. सामान्यतया अध्यापक को दूसरों का सहयोग प्राप्त करने में सफलता मिलती है।
3. विद्यालय में और विद्यालय के बाहर दूसरे व्यक्तियों को अध्यापक की आवश्यकता होती है।
4. कक्षा के नियम और उपनियम ऐसे होने चाहिए कि कोई भी उनका उल्लंघन न कर सके।
5. अधिकांशतः विद्यार्थी अध्यापकों को परेशान व नाराज करने के लिए ही दुर्व्यवहार करते हैं।
6. छात्रों को अपने अध्यापकों से खुले रूप में असहमत हो सकने का अधिकार है।
7. यह संसार सहयोग की भावना पर ही चलता है।
8. अच्छी व्यवस्था के लिए दृढ़ शासन की आवश्यकता होती है।
9. विद्यालय की व्यवस्था के लिए छात्र परिषद् का सहयोग अधिक अच्छा है।
10. समाज हमारे लिए है और हम समाज के लिए हैं।
11. यह आशा नहीं करनी चाहिए कि छात्रों को विद्यालय में विनोद मिलेगा।
12. आज भी प्राचीन काल की तरह छात्रों को कठिन दण्ड देने की आवश्यकता है।
13. बहुत से विद्यार्थी अध्यापक के लिए बहुत सी चीजें सरल बना देने का प्रयास करते हैं।
14. विद्यालय के प्रबन्ध एवं व्यवस्था का उत्तदायित्व केवल उसके प्रधानाध्यापक पर होता है।
15. छात्रों को अध्यापक की सभी बातों को मानना चाहिए क्योंकि अध्यापक कक्षा में सर्वोपरि है।

भाग 2

16. अध्यापक समाज में विनम्र एवं विचारशील हाने का प्रयास करता है।
17. यदि बच्चे की व्यवस्था करने में अभिभावक असमर्थ हो तो अध्यापक द्वारा यह कार्य पूरा नहीं किया जा सकता।
18. बहुत से विद्यार्थी, जब उन्हें स्वयं पर छोड़ दिया जाता है, अधिक प्रयत्नशील हो जाते हैं।
19. सभी बच्चों की एक साथ कक्षा–वृद्धि कर देने से उनके अर्जित ज्ञान का स्तर गिरता है।
20. जो अध्यापक अधिक लोकप्रिय होते है, वे सम्भवतः अपने विद्यार्थी को अधिक अच्छी तरह समझते हैं।
21. अधिकतर अध्यापक अपने छात्रों के प्रति बहुत उदार होते हैं।
22. यदि बच्चों को उन्हीं के ऊपर छोड़ दिया जाये तो वे अपने लिए स्वयं विचार करेंगे।
23. बच्चों के संवेगात्मक जीवन तथा उससे सम्बन्धित समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए।
24. अध्यापकों को अपने छात्रों की घरेलु परिस्थितियों की जानकारी भी रखनी चाहिए।
25. बच्चों की रूचि को स्कूल के काम का आधार बनाना व्यावहारिक नहीं है।
26. बहुत से बच्चों में अत्यधिक कल्पना पाई जाती है।
27. अध्यापक को लड़ाकू और उदण्ड बालकों पर विशेष ध्यान देना पड़ता है।
28. सब बच्चे, बच्चे है, अतः उनकी समस्याओं का समाधान सामूहिक ढंग से कर देना चाहिए।
29. यह सम्भव नहीं है कि अध्यापक कक्षा के सभी छात्रों की कठिनाइयों को जान सकें।
30. बालकों की वैयक्तिक भिन्नताओं को ध्यान में रखकर पढ़ाना सम्भव नहीं हैं।

भाग 3

31. कोई चीज गलत भी हो जाती है, तब भी अध्यापक अपने ऊपर संयम रखते हैं।
32. अध्यवसायी छात्र निश्चय ही किसी के धैर्य को हिला देते है।
33. कुछ ऐसे भी क्षण होते हैं जब अध्यापक विद्यार्थी के प्रति धैर्य खो दें, तो उसे दोष नहीं दिया जा सकता।
34. बहुधा अध्यापक बार–बार बालकों को एक ही चीज समझाने में असफल होने पर क्रुद्ध एवं अप्रसन्न हो जाते हैं।
35. कक्षा में मन्द बुद्धि के बालक अध्यापक के लिए एक विकट समस्या उत्पन्न कर देते हैं।
36. अध्यापक के चारों ओर घर, विद्यालय, समाज तथा स्वयं की समस्या ही समस्या है। उन पर विजय पाकर वह अपने पवित्र कार्य में धैर्य पूर्वक संलग्न रहता है।
37. कभी–कभी प्रखर बुद्धि के बालक अनुशासन सम्बन्धी असाध्य समस्या उत्पन्न कर देते हैं।
38. बहुधा असफलतायें, सफलताओं से अधिक श्रेयष्कर प्रमाणित होती हैं।
39. अध्यापक पर बालक, समाज और राष्ट्र के प्रति इतने अधिक उत्तरदायित्व है कि वे अपना धैर्य खो भी दें, तो अनुचित नहीं है।
40. अध्यापक के बार–बार सुधारने पर भी यदि बालक नहीं सुधरता, तो अध्यापक भी उसकी परवाह नहीं करता।
41. कभी–कभी अध्यापक अपने धर का क्रोध स्कूल में बालकों पर उतारा करतें हैं।
42. अध्यापक परीक्षा काल में अपने धैर्य एवं संलग्नता को बनाए रखते हैं।
43. बालक सुयोग्य नागरिक बनने के पथ पर हैं, इसलिए अध्यापक धीरे–धीरे धैर्यपूर्वक उन्हें आगे बढ़ाते हुए चलता है।
44. समाजिक और आर्थिक समस्याओं में फँसकर अध्यापक भी अपना धैर्य खो बैठते हैं।

45. बहुधा अध्यापक विद्यालय के प्रति अपना क्रोध अपने बाल–बच्चों पर उतारा करते हैं।

भाग 4

46. अध्यापक नये विचार तथा नवीन विधियों को जानना और उनका प्रयोग करना पसन्द करते हैं।
47. एक अध्यापक से यह आशा नहीं करनी चाहिए कि वह अपने सायंकालीन मनोरंजन की बलि देकर एक विद्यार्थी के घर जाकर मिलें।
48. अध्यापक भी गलत हो सकता है, जैसे कि छात्र।
49. बालकों में तीव्र जिज्ञासा पाई जाती है।
50. व्यक्तिगत उद्देश्य और सामाजिक उद्देश्य एक दूसरे के पूरक है।
51. शिक्षा प्रत्येक बालक को समाज में रखकर उसकी विशेषताओं को विकसित कर उसे समाजोपयोगी बनाती है।
52. अध्यापक बालक, विद्यालय, समाज और सरकार के प्रति उत्तरदायी होते हैं।
53. अध्यापक बालकों के उचित विकास के लिए उपयुक्त वातावरण निर्मित करते हैं।
54. वास्तव में अध्यापक शिशुओं, बालकों, किशोरो और प्रौढ़ों में रूचि रखते है।
55. कक्षा में बच्चों को जितनी स्वतन्त्रता दी जाती है, उससे अधिक देनी चाहिए।
56. शिक्षा का रूप समय और परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होता रहता है।
57. अध्यापक विद्यालय में शिक्षक, खेल के मैदान में खिलाड़ी और समाज में सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में रहते हैं।
58. बहुधा बालक कक्षा में अधिक सामाजिक होते हैं।
59. अक्षर ज्ञान को शिक्षा कहना गलत है।
60. अध्यापक का अध्यापन क्षेत्र केवल पुस्तकों तक ही सीमित नहीं रहता बल्कि इसके आग भी होता है।

भाग 5

61. अध्यापक अपने व्यवहार में ईमानदारी तथा निष्पक्षता के ऊँचे विचार रखते हैं।

62. बच्चों के बारे में निर्णय 'देखकर' करना चाहिए न कि 'सुनकर'।

63. अध्यापक में भी कुछ न कुछ कमी होती है।

64. बालकों पर जो प्रतिबन्ध लगाए जाएँ, उनका कारण उन्हें बता देना चाहिए।

65. धोखेबाजी द्वारा प्रकट होने वाली बेईमानी सम्भवतः नैतिक अपराधों में सबसे अधिक गम्भीर है।

66. न्याय एवं निष्पक्ष व्यवहार ही कक्षा के अनुशासन को सुव्यवस्थित करते हैं।

67. सत्य, अहिंसा, प्रेम और न्याय ही समाज में बहुत से विद्यार्थी, जब उन्हें स्वयं पर छोड़ दिया जाता है, अधिक प्रयत्नशील हो जाते हैं।

68. अध्यापक निर्धन एवं दुर्बल विद्यार्थियों को सम्भवतः अधिक अंक दे दिया करते हैं, जिससे उनका वर्ष बेकार न जाने पाए।

69. आधुनिक युग में सबसे बड़ी माँग है निष्पक्षता और ईमानदारी।

70. कुछ धनी एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों के बालकों को अपेक्षाकृत अधिक अंक मिल जाया करते हैं।

71. अध्यापक ज्ञान का वह महासागर है, जिसमें अगणित नदियाँ बिना कुछ सोचे समझे मिला करती है।

72. स्वाभाविक रूप से बालक बहुत ही अच्छे पैदा होते है किन्तु वातावरण के कारण बुरे बन जाते हैं।

73. वर्गहीन समाज की स्थापना अध्यापक के हाथ में है।

74. छात्र के मूल्यांकन करने में उसकी अवाप्ति (attainment) तथा प्रयत्न में भेद नहीं करना चाहिए।

75. छात्र द्वारा प्राप्त अंकों एवं डिवीजन को दण्ड के फलस्वरूप कम नहीं करना चाहिए।

भाग 6

76. अध्यापक के विचार तथा उसकी योजनायें दूसरों में अनुकरण की प्रवृत्ति उत्पन्न करती हैं।
77. अध्यापक अपने कार्य में सावधानी, सम्पूर्णता और यथार्थता का ध्यान रखते हैं।
78. अध्यापक को जितना वेतन मिलता है, उससे अधिक काम करने की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।
79. अधिकांश छात्र अपने अध्यापकों का ख्याल रखते हैं।
80. विद्यार्थी की असफलता के लिए अध्यापक कदाचित ही दोषी रहते हैं।
81. निर्भीक होने की अपेक्षा लज्जाशील होना अधिक उचित है।
82. सम्भवतः अध्यापक विद्यार्थी के गन्दे ओर भद्दे वाक्य लिखने को अत्यधिक गम्भीर दोष मानते हैं।
83. सादा जीवन और उच्च विचार अध्यापक का भूषण है।
84. आज भी चरित्र सर्वोपरि है।
85. कार्य करते रहने की प्रवृत्ति की कमी ही सम्भवतः असफलता का सबसे प्रमुख कारण है।
86. अध्यापक की वेष–भूषा तथा आकार–प्रकार सामान्यतया प्रशंसनीय रहते हैं।
87. शिक्षक को धन एवं स्वास्थ्य की अपेक्षा सम्मान अधिक प्रिय होता है।
88. अध्यापक एक सामान्य प्राणी है। उसमें भी चारित्रिक दोष हो सकते हैं।
89. बहुधा सभी अध्यापक निडर और निर्भीक होते हैं।
90. कर्त्तव्य और अधिकार में अध्यापक को आज अधिकार चाहिए।

भाग 7

91. अध्यापक दूसरों को निर्देश देने तथा अनुशासन रखने में समर्थ होते है।
92. अधिकांश बालक आज्ञाकारी होते हैं।
93. साधारण अनुशासन की समस्या को गम्भीर बनाने की अपेक्षा सरलता से कभी–कभी हँसता है तो कक्षा नियन्त्रण के बाहर हो जाती है।

94. यदि अध्यापक कक्षा में किसी बात पर छात्रों के साथ हँसता है तो कक्षा नियन्त्रण के बाहर हो जाती है।

95. कक्षा में अच्छा अनुशासन स्थापित करने के लिए अध्यापक को कठोर होना चाहिए।

96. अनुशासन सम्बन्धी समस्याओं को रोकने की अपेक्षा उनका सुलझाना अधिक आसान है।

97. अनुशासन सम्बन्धी कठिन समस्या के लिए अध्यापक का दोष बहुत कम होता है।

98. अनुशासन रखना समस्या नहीं है, जबकि अधिकतर अध्यापकों का कहना है कि यह एक बड़ी समस्या है।

99. छात्र अध्यापक को परेशान करना चाहते हैं।

100. कक्षा से भागने वाले विद्यार्थियों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित नहीं करनी चाहिए।

101. कक्षा को नियमानुकूल रखने पर बहुत जोर दिया जाता है।

102. गन्दे तथा भद्दे वाक्य लिखते हुए पाए जाने वाले छात्रों को कड़ी सजा देनी चाहिए।

103. बच्चों को यह सीखना चाहिए कि वे बिना प्रश्न किये ही बड़ों की आज्ञा माने।

104. बाह्य अनुशासन स्व–अनुशासन से अधिक अच्छा है।

105. आजकल अधिकतर अध्यापक अनुशासित न होकर दूसरों को अनुशासित करने पर अधिक जोर दिया करते हैं।

भाग 8

106. कक्षा में कभी–कभी छात्र बहुत ऊबते हैं।

107. अध्यापक का वेतन और सम्मान दोनो कम हैं, पर वे निराश नहीं होते हैं।

108. अध्यापन कार्य नीरस होता है।

109. अध्यापन कार्य भी एक विचित्र व्यवसाय है, जिसमें सदैव बच्चों के साथ रहकर बच्चे ही बने रहना पड़ता है।

110. अध्यापक एक बाल वाटिका का माली है, वह दिन प्रतिदिन उनके फलने फूलने की आशा करता है।

111. प्रायः शिक्षक अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट नहीं रहते हैं।

112. बहुधा अध्यापक स्वयं प्रसन्न मुद्रा में रहते हैं और दूसरों को प्रसन्न बना देते हैं।

113. अध्यापक अपने कार्य एवं विचारों में विश्वास रखते हुए उत्तरोत्तर उन्नति की आशा करते हैं।

114. अध्यापक स्वतः नये वातावरण में बड़ी सुगमतापूर्वक अपने को अनुकूल बना लेते हं।

115. सामान्यतः अध्यापक प्रत्येक कार्य के आशायुक्त पक्ष की ओर देखते हैं।

116. अध्यापक स्वयं योजना बनाते हैं और उसे क्रियान्वित कर शुभ लाभ की आशा करते हैं।

117. अध्यापक वर्तमान से सन्तुष्ट होकर सदैव सुन्दर भविष्य की आशा करते हैं।

118. अध्यापक विनोदमय वातावरण में रहते हैं आर उसको उत्पन्न करते हैं।

119. कर्म पर ही अधिकार है, इस प्रकार की भावना बहुधा अध्यापक के लिये कोरी कल्पना ही होती है।

120. आज के युग में यदि अध्यापक अपने व्यवसाय और जीवन के प्रति उदासीन रहे तो उन्हे दोषी नहीं कहा जा सकता।

भाग 9

121. विद्यालय की साहित्यिक तथा अन्य प्रकार की गोष्ठियों में अध्यापक का भाग लेना आवश्यक है।

122. अध्यापक का अधिकांश समय अध्ययन में न व्यतीत होकर अन्य कार्यो में व्यतीत होती है।

123. अध्यापक के पास एक निजी छोटा पुस्तकालय होना चाहिए।

124. जैसे बच्चे नई मिठाइयों को देखकर ललचा जाते हैं, वैसे ही अध्यापक नई पुस्तकों को देख कर।

125. समाचार पत्रों का पठन अध्यापक की एक दैनिक प्रक्रिया है।

126. अध्यापक जीवन–पयन्त विद्यार्थी बने रहते हैं।

127. पुस्तकें अध्यापक की पूँजी है।

128. विद्वत् मंडली में अध्यापक सम्मिलित होकर आनन्द का अनुभव करते हैं।

129. अध्यापक अपनी मासिक आय का एक छोटा भाग पुस्तकें तथा मैंगजीन खरीदने में व्यय नहीं करते।

130. ज्ञान वह प्रकाश है जिससे सारा संसार आलोकित होता है।

131. यह कहना ठीक नहीं है कि अध्यापक के सच्चे मित्र उनकी पुस्तकें होती हैं।

132. अध्यापकों से यह आशा नहीं करनी चाहिए कि वह अपना समय और धन कहीं दूर आयोजित सभा एवं गाष्ठी में सम्मिलित होने के लिए व्यय नहीं करते।

133. सामान्यतया अध्यापक अपने अध्ययन काल में अपने वर्ग के औसत छात्रों में ऊपर रहते हैं।

134. सामान्यतया अध्यापक को अध्ययन के लिए समय नहीं मिलता।

135. बहुधा अध्यापक को अपने बारे में जानकारी नहीं रहती।

भाग 10

136. अध्यापक में स्फर्ति एवं शक्ति का कोष संचित रहता है।

137. अध्यापक केवल पुस्तकीय ज्ञान देने वाला ही नहीं बल्कि प्रेरणा का केन्द्र है।

138. सम्भवतः प्रेरणा एवं अध्यवसाय की कमी ही असफलता के प्रमुख कारण है।

139. जो छात्र अपने कार्य क्षेत्र में उत्साह, जोश और तल्लीनता दिखातें है, उन्हें अध्यापक भी चाहते हैं।

140. अध्यापक अन्य कर्मचारियों की भाँति एक कर्मचारी नहीं है, बल्कि वह एक समाज सुधारक तथा नेता है।

141. अधिकाशं अध्यापक अपने विचारों को स्पष्ट एवं प्रभावोत्पादक ढंग से प्रकट नहीं कर पाते।

142. आज के अध्यापक से यह आशा नहीं करनी चाहिए कि वह विद्यालय के साथ साथ समाज में भी अपना कार्य क्षेत्र रखे।

143. अध्यापक अपने कार्य में पूर्ण सावधानी बरतते हैं।

144. बालक एक पुस्तिका है, अध्यापक को उसका अध्ययन शुरू से अन्त तक करना चाहिए।

145. बालक स्फर्ति, तेज और शक्ति के संगम है।

146. अध्यापक अपने व्यवसाय की ही भाँति आलसी और सुस्त हो जाते हैं।

147. अध्यापक नित्य प्रति अपनी बालवाटिका को नवीन पुष्पों से सुसज्जित करने के लिये प्रयास करते रहते हैं।

148. अध्यापक उत्साह तथा जोश में छात्रों में पीछे रहते हैं।

149. बहुधा अध्यापक बालकों में जिज्ञासा जगाने मे असफल रहते हैं।

150. व अध्यापक जिनमें उत्साह का अभाव रहता है, अपने अध्यापन कार्य में सफल प्रतीत होते हैं।

परिशिष्ट–2

TEACHERS EFFECTIVENESS SCALE

Developed by Dr. Pramod Kumar, Dr. D. N. Muthar

इन्हें भरिये –

1. Name of Teacher ……………………………………. Age ….. years. Sex:Male/Female
2. Qualification: M.A./M.Sc./M.Com./B.Ed./M.Ed./Any other
3. Teaching experience …………. Years
4. Name of School ……………………………………………………..
5. Type of Institution (1) Boys/Girls (2) Government/Private

निर्देश

1. निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान पूर्वक पढ़िये।
2. यदि निर्देशो में कोई बात समझ में न आये तो परीक्षक से अवश्य पूछ लीजिये।
3. कृपया उत्तर–पत्र में अपना नाम, योग्यता, आयु, पद आदि स्पष्ट लिखिये। इस पुस्तिका में न तो कुछ लिखिये और न ही किसी प्रकार का चिन्ह बनाइये।
4. उत्तर देते समय सामान्य परिस्थिति के विषय में सोचिये, किसी विशेष स्थिति का विचार न कीजिये।
5. उत्तर देने के लिए समय का कोई प्रबन्ध नहीं है, किन्तु जितनी शीध्रता से हो, काम कीजिये।
6. कृपया प्रत्येक वक्तव्य का उत्तर दीजिये।

उत्तर लिखने की विधि –

इस पुस्तिका में 69 वक्तव्य दिये गये है, जिनके द्वारा आपके अध्यापन सम्बन्धी विचारों का पता लगाने का प्रयत्न किया गया है। प्रत्येक वक्तव्य को पढिये और निर्णय कीजिए कि आपका क्या विचार है या आप कैसा

अनुभव करते है। जैसा भी आपका विचार हो या जैसा भी आप अनुभव करते हों, वैसा अपना उत्तर दिये हुए उत्तर–पत्र पर यथा–स्थान लिखिये।

यदि आप दिये हुए वक्तव्य से पूर्ण सहमत हों तो पू.स. के नीचे बने खानें में सही का (✓) चिन्ह बना दीजिए।

यदि आप दिये हुए वक्तव्य से पूर्ण सहमत हों तो स. के नीचे बने खानें में सही का (✓) चिन्ह बना दीजिए।

यदि आप अनिश्चित या द्विविधा में हों, तो द्वि. के नीचे बने खानें में सही का (✓) चिन्ह बना दीजिए।

यदि आप दिये हुए वक्तव्य से असहमत हों तो अस. के नीचे बने खानें में सही का (✓) चिन्ह बना दीजिए।

यदि आप दिये हुए वक्तव्य से पूर्ण असहमत हों तो पू.अस. के नीचे बने खानें में सही का (✓) चिन्ह बना दीजिए।

क्रस	कथन	पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिश्चत	असहमत	पूर्णतया असहमत
1	जिस विषय को पढाता हूँ/है उस पर पूर्ण अधिकार है।					
2	अपने ज्ञान का विकास करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता हूँ/है।					
3	अपने पाठ्स–विषय के अतिरिक्त अन्य उपयोगी विषयों, जैसे–तत्कालीन घटनाओं का ज्ञान, सामान्य ज्ञान आदि का ज्ञान देने की क्षमता रखता हॅ/है।					
4	छात्रों को उनकी समस्याओं का हल ढूँढ़ने के लिए आवश्यकतानुसार परामर्श देता हूँ/है।					
5	छात्रों को उपयुक्त उत्प्रेरण के योग्य अवसर प्रदान करता हूँ/है।					
6	वांछनीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कक्षा में पुरस्कार का अधितर तथा दण्ड का न्यूनतम प्रयोग करता हूँ/है।					
7	समस्त छात्रों के प्रति एक सा व्यवहार करता हूँ/है।					
8	अपना समय व श्रम छात्रों के लिए स्वेच्छा से देने को सदैव तैयार रहता हूँ/है।					
9	छात्रों को यथा सम्भव शारीरिक दण्ड नहीं देता हूँ/है।					
10	छात्रों के साथ शिष्ट भाषा का प्रयोग करता हूँ/है।					
11	छात्रों के साथ समानता का व्यवहार करता हूँ/है।					
12	छात्रों के विचारों व प्रस्तावों का सममान करता हूँ/है।					
13	छात्रों को अकारण ही कक्षा के बाहर किसी कार्य के लिए नहीं बुलाता हूँ/है।					
14	छात्रों द्वारा बताई गई अपनी त्रुटियों को सहर्ष स्वीकार करता हूँ/है।					
15	संस्था प्रधान का वरिष्ठतम सदस्य के अनुरूप सम्मान करता हूँ/है।					

क्रस	कथन	पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतया असहमत
16	छात्रों के बेतुके प्रश्नों को भी धैय से सुनकर उनका समाधान करता हूँ/है।					
17	विद्यालय के दैनिक कार्यो में वाछिंत सहयोग देता हूँ/है।					
18	भरपूर आत्म विश्वास है।					
19	विद्यालय की गतिविधियों के सम्बन्ध में अपनी निष्पक्ष राय देता हूँ/है।					
20	संस्था के विरूद्ध कोई भी कार्य नहीं करता हूँ/है।					
21	अपने मतभेदों का निवारण विचार विनिमय द्वारा करता हूै/है।					
22	अपने सभी अध्यापकों की पीठ पीछे निन्दा नहीं करता हूँ/है।					
23	साथी अध्यापकं के साथ मित्रता व भ्रातृत्व का सम्बन्ध रखता हूँ/है।					
24	अपने सभी अध्यापक से ज्ञान ग्रहण करने में संकोच नहीं करता हूँ/है।					
25	अपने सभी अध्यापकों कस मार्ग दर्शन करने के लिए सदैव तैयार रहता हूँ/है।					
26	जाति, सामाजिक स्तर व आर्थिक स्थिति आदि का बिना भेदभाव किए समस्त अभिवावकों के साथ सम्मानजनक व्यवहार हूँ/है।					
27	छात्रों की समस्याओं के समाधान अथवा उनके सद्विकास के लिए अभिभावकों को यथावसर सहयोग देता हूँ/है।					
28	छात्रों के सर्वागीण विकास में अभिभावकों को सहयोग प्राप्त करता हूँ/है।					
29	विद्यालय में संचालित सह–शैक्षणिक क्रियाओं में रूचि लेता हूँ/है।					
30	छात्रों की रूचि व क्षमता के अनुसार उन्हें सह–शैक्षणिक क्रियाओं में भाग लेने के लिए तैयार करता हूँ/है।					
31	सह–शैक्षणिक क्रियाओं का सुसंचालन करता हूँ/है।					

क्रस	कथन	पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिशचत	असहमत	पूर्णतया असहमत
32	दैनिक–पाठ योजना नियमित रूप से तैयार करता हूँ/है।					
33	पाठ के शिक्षण उद्देश्यों ससे पूर्णतया परिचित हूँ/है।					
34	उपयुक्त सहायक सामग्री का पहले चयन या निर्माण करता हूँ/है।					
35	सृजनशील हूँ/है।					
36	उत्तरदायी हूँ/है।					
37	अन्तःदृष्टि है।					
38	कल्पनाशील हूँ/है।					
39	समायोजन क्षमता है।					
40	छात्रों की क्षमता के अनुसार अभ्यास कार्य (गृह–कक्षा) तैयार करता हूँ/है।					
41	कक्षा में उपयुक्त यिाक्षण विधि का उपयोग करता हूँ/है।					
42	विषय–सामग्री स्पष्ट स्प से प्रस्तुत करता हूँ/है।					
43	अभिव्यक्ति प्रभावशाली है।					
44	पाठ में छात्रों की रूचि का विकास करता हूँ/है।					
45	श्याम–पट्ट का उपयोग करता हूँ/है।					
46	प्रत्येक छात्र पर व्यक्तिगत ध्यान देता हूँ/है।					
47	सहायक सामग्री का अधिकाधिक उपयोग करता हूँ/है।					
48	कक्षा अभ्यास कार्य की उपयुक्त परिवीक्षण करता हूँ/है।					

क्रस	कथन	पूर्णतया सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	पूर्णतया असहमत
49	लिखित कार्य की समय पर उपयुक्त जाँच करता हूँ/है।					
50	यथावश्यक उपचारात्मक विधियों का प्रयोग करता हूँ/है।					
51	पाठ की समाप्ति पर पाठ की समीक्षा करता हूँ/है।					
52	कक्षा की स्वच्छता की ओर ध्यान देता हूँ/है।					
53	भावात्मक स्थिरता वाला हूँ/है।					
54	कक्षा का भयमुक्त नियन्त्रण करता हूँ/है।					
55	शिक्षा मनोविज्ञान का पूर्ण ज्ञान है।					
56	शिक्षा मनोविज्ञान का उपयोग छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर करता हूँ/है।					
57	शिक्षा की नवीनतम प्राविधियों का ज्ञान प्राप्त कर उनका उपयोग करने के लिए प्रयत्नशील रहता हूँ/है।					
58	कक्षा व्यवस्था में अधिकाधिक छात्रों का सहयोग लेता हूँ/है।					
59	विद्यालय में स्फूर्तिमय, क्रियाशील और प्रसन्नचित्त रहता हूँ/है।					
60	कक्षा में सम्मनित वेशभूषा में रहता हूँ/है।					
61	नियमित एवं समय का पाबन्द हूँ/है।					
62	कक्षा में धूम्रपान/चायपान नहीं करता हूँ/है तथा पान आदि खाकर नहीं आता हूँ/है।					
63	सहयोग की भावना है।					
64	व्यवसाय के प्रति रूचि है।					
65	व्यवसाय में निष्ठा है।					
66	विनोदी हूँ/है।					
67	मिशनरी उत्साह है।					
68	छात्रों में नियमितता की आदत पर जोर देता हूँ/है।					
69	अनुशासित हूँ/है।					

प्रस्तुतीकरण

''चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्म विभागशः।''

महाभारत

प्रस्तुतीकरण प्रपत्र–1

pushkrit gupta <pushkritgupta@yahoo.com>
To: kc gautam <kcgautam500@gmail.com>

Good morning mam,

Firstly thanks for contribution, Your research paper is approved by our editorial board. For publication of your research paper kindly download copy right form from website of our journal, www.adyapaksarthi.org, and send it by simple it by post. Also deposit the subscription fee as mentioned on web. your research paper is published on website in Vol6, issue 01, 2018 after all formalities fulfil by your side.

Thanks,

Dr. Pushkrit Gupta
Associate Professer
M: 9416829100
Add: #374, HBC, Baldev Nagar, Ambala City,
Haryana-134007

राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों में अतिरिक्त कार्यभार का शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता व शिक्षण अभिवृत्ति पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 श्रीकान्त भारतीय,
(शोध पर्यवेक्षक)
सह–आचार्य,
जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर
शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
सकतपुरा, कोटा (राजस्थान)

गरिमा गौतम
शोधार्थी
कोटा विश्वविद्यालय,
कोटा (राज.)

1.1 प्रस्तावना :–

अध्यापन के व्यवसाय को राष्ट्र निर्माण के कार्य से जोड़कर इसे विशेष महत्व दिया गया है। क्योंकि अध्यापक ही भावी नागरिकों के चरित्र का निर्माता, मानवीय मूल्यों का निर्धारक तथा अनुशासन का आधर स्तम्भ होता है। एक योग्य अध्यापक अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्र व समाज का प्रमुख निर्माता होता है। ***एच. जी. वेल्स*** के शब्दों में– ''अध्यापक इतिहास का निर्माणकर्ता है। राष्ट्र का इतिहास विद्यालयों में लिखा जाता है और विद्यालय अपने अध्यापकों से भिन्न नहीं हो सकते।''

किसी भी समाज में शिक्षक की प्रतिष्ठा व उसके प्रति आदर व सम्मान की भावना का हाना, उस समाज के सांस्कृतिक उन्नयन का परिचायक है। इसी प्रकार के विचार व्यक्त करते हुए ***डॉ. सयद्दीन*** ने कहा है कि – ''यदि आप किसी देश की जनता के सांस्कृतिक स्तर को मापना चाहते तो इसका अच्छा तरीका यह है कि आप यह मालूम करें कि उस समाज में अध्यापकों की सामाजिक स्थिति क्या है तथा उन्हें कितनी प्रतिष्ठा प्राप्त है।''

एक कुशल अध्यापक अपने विचारों से विद्यार्थी, समाज व राष्ट्र को प्रभावित करता है तथा उनमें परिवर्तन ला सकता है। इस रूप में शिक्षक समाज में परिवर्तन लाने

की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। ***कोठारी कमीशन*** के अनुसार– ''शिक्षा, जीवन, समाज और व्यक्तित्व के परिवर्तन का सबसे सशक्त साधन है।'' शिक्षा ही किसी राष्ट्र के व्यक्तियों के खुशहाल जीवन जीने के स्तर तथा सुरक्षा का निर्धारण करती है। किसी दार्शनिक ने ठीक ही कहा है कि –''एक अभियंता की गलती पुल विध्वंस में तथा डॉक्टर की गलती मुर्दे के साथ दफन हो जाती है लेकिन एक अध्यापक की गलती सम्पूर्ण समाज व राष्ट्र को बर्बाद कर देती है।''

अतः शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति करने के लिए यह आवश्यक है कि विद्यालय संस्थानों द्वारा शिक्षकों का उचित चयन किया जाये। अच्छे शिक्षक की पहचान है कि उनमें विषय–वस्तु को पहचाननें की समझ, उनकी कार्य करने की श्रेष्ठ आदतें, कर्तव्य परायणता, वांछित अभिवृत्ति, कार्य कुशलता, विशिष्ट मूल्यों का निर्धारण व समायोजन की क्षमता हो। उन्हें ही हम सच्चे अर्थो में एक अच्छे शिक्षक की संज्ञा दे सकते हैं।

एक व्यक्ति अपने व्यवसाय से तभी संतुष्ट हो सकता है, जब वह मिलने वाले व्यवसाय के कार्य की प्रक्रियाओं से संतुष्ट हो, व्यवसाय में उन्नति के अवसरों से संतुष्ट हो, जहाँ अध्यापक कार्य कर रहा है उस संस्थान के नियमों, कार्यो एवं प्रशासकों से संतुष्ट हो तभी वह अपने कार्यों को संतोषजनक रूप से कर सकता है।

शिक्षक विद्यालय संगठन की धुरी है। यदि प्राचार्य विद्यालय संगठन का मस्तिष्क है तो शिक्षक उस संस्थान की वह तंत्रिका है जो मस्तिष्क के आदेशानुसार उचित ढंग से कार्य करती है। एक विद्यालय, विद्यार्थी, समाज, अभिभवक, शिक्षकों से कतिपय वांछनीय गुणों की अपेक्षा रखता है। जैसे – ज्ञान की उत्कृष्ठता, स्वायत्तता, व्यवसाय के प्रति निष्ठा, शिक्षा में गुणवत्ता लाने हेतु प्रयासरत प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण, कार्य के प्रति समर्पण, उत्साह, धैर्य, प्रभावशाली व्यक्तित्व व इन सभी में सर्वोच्च है शिक्षक की शिक्षण प्रभावकता व शिक्षण अभिवृत्ति।''

शोधकर्ताओं न अपने अध्ययन में यह पाया कि शिक्षक की शिक्षण प्रभावकता एवं कक्षागत परिस्थितियों एवं वातावरण में धनात्मक सहसंबंध है। शिक्षक की शिक्षण प्रभावकता, विद्यार्थियों की उपलब्धियों को धनात्मक रूप से प्रभावित करती है।

शिक्षक की शिक्षण प्रभावकता एवं शिक्षण अभिवृत्ति ही एक आदर्श शिक्षक की छवि होती है। लेकिन वर्तमान समय में शिक्षक की शिक्षण प्रभावकता व शिक्षण अभिवृत्ति को अनेक कारक प्रभावित कर रहे हैं। जैसे – विद्यालय प्रशासन का हस्तक्षेप, शिक्षा

अधिकारियों का विद्यालय की समस्याओं की ओर ध्यान नहीं देना, विद्यालय में व्याप्त वेतन विसंगतियाँ, प्रशासन द्वारा शिक्षकों को अतिरिक्त कार्यभार दिया जाना आदि। राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों में शिक्षकों को प्रदत्त अतिरिक्त कार्यभार शिक्षक की शिक्षण प्रभावकता व शिक्षण अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाला मूल कारण है। अतिरिक्त कार्यभार से अभिप्राय शिक्षकों को प्रदान किये जाने वाले उन कार्यो से है जो उन्हें शिक्षण कार्य के अलावा प्रशासन की ओर से प्रदान किये जाते है जैसे–जनगणना अभियान, पल्स पोलियो अभियान, मतदाता परिचय पत्र, अपने विषय के अलावा अन्य विषयों का शिक्षण कार्य करना आदि।

अतिरिक्त कार्यभार के कारण ही शिक्षक अपने शिक्षण कार्य को प्रभावी ढंग से नहीं कर पाते और न ही अपने शिक्षण उद्देश्यों की पूर्ति कर पाते हैं जिसके फलस्वरूप शिक्षकों में एक विशेष संवेग की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, जैसे– क्रोध प्रकट करना, चिंतित रहना, अनिश्चितता की स्थिति, भविष्य की चिन्ता आदि।

बर्ट्रेंड रसेल ने भी इस सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये हैं। उनका मानना है कि –''अध्यापक को सदैव अपने विषय में हो रहे नये अनुसंधानों से परिचित होना चाहिए। इसके लिए उसके पास काफी समय होना चाहिए ताकि वह यह जान सके कि उसका जो विषय है, उसके सम्बन्ध में दूसरे देशों में क्या हो रहा है परन्तु जिस अध्यापक को अधिक कार्य करना पड़ रहा है तथा जो पढ़ाते–पढ़ाते थक जाता है वह ऐसा नहीं कर सकता।''

वर्तमान समय में राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों में शिक्षकों को प्रदत्त अतिरिक्त कार्यभार स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर है। अतिरिक्त कार्यभार शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता एवं शिक्षण अभिवृत्ति को प्रभावित करता है। ***रोटर (***1994) ने बताया कि एक कुसमायोजित व असंतुष्ट शिक्षक छात्रों की आकांक्षाओं को सफलता की कसोटी पूरा नहीं कर सकता। केवल समायाजित स्वतंत्र शिक्षक ही भावी पीढ़ी के विकास में सहायक है।

अतः देश के भग्य निर्माण के क्रम में यह अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है कि राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों में शिक्षकों को प्रदत्त अतिरिक्त कार्यभार का शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता व शिक्षण अभिवृत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है।

1.2 समस्या का औचित्य :–

शिक्षक की शिक्षण–प्रभावकता व शिक्षण अभिवृत्ति का प्रत्यक्ष प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर तथा अप्रत्यक्ष प्रभाव देश की प्रगति पर पड़ता है। शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति तभी सम्भव है जब शिक्षक की शिक्षण प्रक्रिया प्रभावी हो तथा वे अपने विद्यार्थियों को प्र्याप्त समय देकर विभिन्न शिक्षण तकनीकों का प्रयोग करते हुए शिक्षण कार्य करे।

वर्तमान समय में राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों में शिक्षकों को शिक्षण कार्य के अलावा जनगणना अभियान, पल्स पोलियो अभियान, मतदाता परिचय पत्र, अपने विषय के अलावा अन्य विषयों का शिक्षण कार्य करना आदि के कारण शिक्षक चाहकर भी अपने शिक्षण की प्रभावकता व शिक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति को बनाए नहीं रख सकता।

अतिरिक्त कार्यभार के कारण ही शिक्षक को पाठ्यक्रम पूरा करवानें मे सम्पूर्ण शैक्षणिक सत्र का समय कम प्रतीत होता है तथा स्वयं की शिक्षण की प्रभावकता शून्य। अतः ऐसे शिक्षक सदैव असंतुष्टता, अस्वायत्तता तथा नकारात्मक विषम अभिवृत्ति से ग्रसित रहते हैं।

Loving(1994) ने विद्यालय अध्यापकों पर शोध कार्य किया, इस शोध का शीर्षक था–

"A Study of Job Satisfaction Among School Teacher."

इन्होंने शोध निष्कर्ष में पाया कि ''गैर राजकीय विद्यालयों के अध्यापक स्वयं के व्यवसाय से संतुष्ट नहीं है अतः गैर राजकीय विद्यालय के अध्यापकों में सदैव कुण्ठा व चिन्ता बनी रहती है जिसके कारण अध्यापकों की शिक्षण प्रभावकता व शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति प्रभावित होती है।''

वर्तमान में शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है तथा विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र कई आपराधिक कृत्य कर रहे हैं तथा उनमें अनैतिकता का विकास हो रहा है, कुछ अध्यापक अपने कार्य को निष्ठापूर्वक नहीं कर रहे हैं। जिससे छात्र विद्यालय में जाने के स्थान पर कोचिंग पर जाना अधिक पसंद करते हैं।

उपरोक्त शोध में शिक्षण अभिवृत्ति व शिक्षा की शिक्षण की प्रभावकता तथा अध्यापकों की कार्य संतुष्टता का अध्ययन किया गया है। लेकिन वर्तमान तक राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों में अतिरिक्त कार्यभार से सम्बन्धित शोध कार्य नहीं किया गया है जो सफल, उद्देश्यपूर्ण व प्रभारी शिक्षण कार्य तथा सकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के मार्ग में एक बड़ी बाधा है। अतः प्रस्तुत शोध में '' राजकीय व गैर राजकीय विद्यालयों में अतिरिक्त कार्यभार का शिक्षक की शिक्षण प्रभावकता एंव शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन'' विषय पर शोध अध्ययन किया गया है।

1.3 उद्देश्य :-

1. राजकीय विद्यालय के शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण प्रभावकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. राजकीय विद्यालय के शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. राजकीय विद्यालय को महिला शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय को महिला शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण प्रभावकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
4. राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण प्रभावकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
5. राजकीय विद्यालय को महिला शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय को महिला शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
6. राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

1.4 परिकल्पनाएँ :—

1. राजकीय विद्यालय के शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण प्रभावकता पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होता है।
2 राजकीय विद्यालय के शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होता है।
3 राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण प्रभावकता पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होता है।
4 राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण प्रभावकता पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होता है।
5 राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होता है।
6 राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होता है।

1.5 सन्दर्भ साहित्य का अध्ययन :—

1.5.1 विदेशों में हुए अध्ययन :—

1. विक्टोन एवं कोक (1998)- "Study of Teacher Effectiveness."

विक्टोन व कोक ने शिकागो के अध्यापकों पर अनुसंधान किया, जिसके आधार पर अध्यापकों में शिक्षण प्रभावशीलता की कमी का कारण शारीरिक, व्यावसायिक तथा व्यक्तिगत असुरक्षा की भावना पाई गई।

2. नेस्टे (2002)- "Effect of Education Environment on Teaching Attitude."

नेस्टे ने निष्कर्ष प्राप्त किये कि शिक्षण अभिवृत्ति पर शैक्षिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है अतः शैखिक वातावरण में सुधार अपेक्षित है।

3. **Davil C.Dibon** (2004)- Memorial University of New Found Land.-"A Study on The Impact of Workload on Teacher and Student."

इन्होंने निष्कर्ष प्राप्त किये कि अतिरिक्त कार्यभार, शिक्षण प्रभावशीलता को प्रभावित करता है अतः शिक्षकों के उत्तरदायित्वों को पुनः सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

1.5.2 भारत में हुए अध्ययन :–

1 केरोला व भारद्वाज (1993)- "Classroom Situation of Primary School to Improve Teacher Effectiveness."

कोरेला व भारद्वाज ने निष्कर्ष प्राप्त किया कि प्राथमिक कक्षाओं की अव्यवस्थाएँ शिक्षक प्रभावकता पर प्रभाव डालती है।

2 मेहता, एच. (1994)- "The Socio Economic Level of a Teacher & Its Impact on Primary School Teacher."

मेहता ने निष्कर्ष प्राप्त किया कि प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का सामाजिक व आर्थिक स्तर उच्च रहने पर उनका शिक्षण कार्य प्रभावी होता है।

3 **Sinha, Neela** (1996)- "Study of Teacher Attitude Towards School Environment."

इन्होने निष्कर्ष प्राप्त किया कि अधिकांश शिक्षक विद्यालय की समस्याओं की ओर ध्यान नहीं देते। जिससे शिक्षण अभिवृत्ति पर प्रभाव पड़ता है।

4 **Dhar, J.N.** (2004)- "Professional Status of Teacher."

इन्होने निष्कर्ष प्राप्त किया कि वर्तमान समय में अध्यापन कार्य पूर्ण रूप से एक व्यावसायिक रूप ले चुका है जिसमें शिक्षण अभिवृत्ति पर न्यून स्थान है।

5 सुब्रह्मण्यम (2005)- "Teaching Competence of Secondary School Physical Science Teacher in Relation to Their Satisfaction of Teaching Subject."

इन्होने शोध हेतु 50 अध्यापकों का चयन किया जिससे निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शिक्षक विद्यालय द्वारा दिये गये शिक्षण विषयों से संतुष्ट नहीं है।

6. **Maheshwari, Pushpa** (2006)- "A Case Study of Trible Area of Sambalpur District in Teacher Employment and Teaching Effectiveness at Primary Stage."

इन्होने निष्कर्ष प्राप्त किया कि आदिवासी क्षेत्रों का सामाजिक व आर्थिक वातावरण शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता को प्रभावित करता है।

7. **Barpanda, N.** (2007)- "शिक्षकों के पारिवारिक स्तर का विद्यालय में शिक्षण अभिवृत्ति पर प्रभाव – एक अध्ययन."

इन्होने निष्कर्ष प्राप्त किया कि पारिवारिक असामंजस्य होने की स्थिति में शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति पर प्रतिकूल प्रभाव होता है तथा पारिवारिक सांमजस्य की स्थितह में शिक्षण अभिवृत्ति पर अनुकूल प्रभाव दिखाई देता है।

8. शर्मा, पी.एस. (2007)- "The Effect of Teacher Effectiveness on Student Achievements."

इन्होने निष्कर्ष प्राप्त किया कि अध्यापक प्रभावशीलता विद्यार्थयों की उपलब्धियों का सहज मार्ग होती है।

9. **Dr. Siddharth Ghatvisdava** (2012)-

"Co-relation Between Teacher Effectiveness and Teaching Aptitute."

इन्होने निष्कर्ष प्राप्त किया कि शिक्षण– प्रभवशीलता व शिक्षण अभिवृत्ति में सह–सम्बन्ध है तथा यदि किसी कारण से शिक्षक की शिक्षण अभिवृत्ति प्रभावित होती है तो उसका प्रभाव शिक्षण प्रभावशीलता पर भी पड़ता है।

10. **Mr. D. Staraman and Dr. S. Rajshekar** (2013): (Department of Education: Annamalai University)- "Teaching Effectiveness of B.Ed Student Teacher as Related to Their Teaching Aptitude and Academic Performance."

इन्होने निष्कर्ष प्राप्त किया कि शिक्षण– प्रभवशीलता व शिक्षण अभिवृत्ति में सह–सम्बन्ध है तथा यदि किसी कारण से शिक्षक की शिक्षण अभिवृत्ति प्रभावित होती है तो उसका प्रभाव शिक्षण प्रभावशीलता पर भी पड़ता है।

1.6 शोध विधि :–

शोधकर्ता ने अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया।

1.7 न्यादर्श :–

न्यादर्श के रूप में राजकीय विद्यालय के 30 शिक्षकों (15 महिला व 15 पुरूष) एवं गैर राजकीय विद्यालय के 30 शिक्षकों (15 महिला व 15 पुरूष) का चयन किया गया है। शिक्षकों का चयन यादृच्छिक विधि की लॉटरी प्रविधि द्वारा किया गया।

सारणी 1.1

प्रतिदर्शन

विद्यालय	पुरूष शिक्षक	महिला शिक्षक	योग
राजकीय विद्यालय	15	15	30
गैर राजकीय विद्यालय	15	15	30
योग	30	30	60

1.8 शोध उपकरण :–

शोध अध्ययन हेतु निम्न प्रमापिकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया है :–

1. शिक्षण अभिवृत्ति प्रश्नावली – डॉ. उमा कुलसुम।
2. शिक्षण प्रभावशीलता प्रश्नावली – डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. डी.एन. मूथा।

1.9 शोध सांख्यिकी :–

दत्त विश्लेषण के लिए निम्नलिखित सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है –

1. मध्यमान (Mean)

2. मानक विचलन (S.D.)
3. क्रांतिक अनुपात (C.R.)

1.10 समस्या परिसीमन :–

1. अध्ययन के लिये कोटा जिले का चयन किया गया है।
2. आर.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम से सम्बन्धित राजकीय व गैर राजकीय विद्यालय का चयन किया गया है।
3. राजकीय एवं गैर राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का चयन किया गया।

1.11 प्रदत्तों का सारणीयन, विश्लेषण एवं व्याख्या :–

1.11.1 उद्देश्य–1

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण प्रभावकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना 1

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण प्रभावकता पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारणी 1.1

क्षेत्र	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाप विचलन SD	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	निर्वचन
राजकीय विद्यालयों के शिक्षक	30	322.13	3.60	1.15	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है अतः परिकल्पना स्वीकृत है।
गैर राजकीय विद्यालयों के शिक्षक	30	321.1	3.29			

$df=N_1+N_2-2=30+30-2=58$

सार्थकता स्तर .05 पर मूल्य 2.00

व्याख्या एवं विश्लेषण :—

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता का मध्यमान 322.13 व प्रमाप विचलन 3.60 है तथा गैर राजकीय विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण प्रभावकता का मध्यमान 321.1 एवं प्रमाप विचलन 3.29 है। दोनों के मध्यमानों के अंतर का क्रांतिक अनुपात 1.15 प्राप्त हुआ ह।

प्राप्त क्रांतिक अनुपात मूल्य सार्थकता स्तर .05 के सार्थकता मूल्य 2.00 से बहुत कम है अतः अतिरिक्त कार्यभार के फलस्वरूप राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता में सार्थक अंतर नहीं है।

निष्कर्ष :—

अतः परिकल्पना 1 स्वीकृत की जाती है।

1.11.2 उद्देश्य—2

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना 2—

राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारणी 1.2

क्षेत्र	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाप विचलन SD	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	निर्वचन
राजकीय विद्यालयों के शिक्षक	30	264.96	8.82	0.25	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है, अतः परिकल्पना स्वीकृत है।
गैर राजकीय विद्यालयों के शिक्षक	30	265.53	8.36			

$df=N_1+N_2-2=30+30-2=58$

सार्थकता स्तर .05 पर मूल्य 2.00

व्याख्या एवं विश्लेषण :—

राजकीय विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का मध्यमान 264.96 व प्रमाप विचलन 8.82 है तथा गैर राजकीय विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का मध्यमान 265.53 एवं प्रमाप विचलन 8.36 है। दोनों के मध्यमानों के अंतर का क्रांतिक अनुपात 0.25 प्राप्त हुआ है।

प्राप्त क्रांतिक अनुपात मूल्य सार्थकता स्तर 0.5 के सार्थकता मूल्य 2.00 से बहुत कम है, अतः अतिरिक्त कार्यभार के फलस्वरूप राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों

व गैर राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

निष्कर्षः–

अतः परिकल्पना 2 स्वीकृत की जाती है।

1.11.3 उद्देश्य–3

राजकीय विद्यालयों की महिला शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण प्रभावकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना 3–

राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण प्रभावकता पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी 1.3

क्षेत्र	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाप विचलन SD	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	निर्वचन
राजकीय विद्यालयों की महिला शिक्षक	15	323.33	2.95	5.079	0.05	सार्थक अन्तर है, अतः परिकल्पना अस्वीकृत है।
गैर राजकीय विद्यालयों की महिला शिक्षक	15	318.86	1.76			

$df=N_1+N_2-2=15+15-2=28$

सार्थकता स्तर .05 पर मूल्य 2.00

व्याख्या विश्लेषण :–

राजकीय विद्यालयों के महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता का मध्यमान 323.33 तथा प्रमाप विचलन 2.95 है तथा गैर राजकीय विद्यालयों के महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता का मध्यमान 318.86 तथा इसका प्रमाप विचलन 1.76 है। दोनों के मध्यमानों का क्रांतिक अनुपात 5.079 मूल्य सार्थकता स्तर 0.5 के सार्थकता मूल्य 2.00 से अधिक है। अतः राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर होता है।

निष्कर्षः–

अतः परिकल्पना 3 अस्वीकृत की जाती है।

1.11.4 उद्देश्य–4

राजकीय विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण प्रभावकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना 4–

राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण प्रभावकता पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारणी 1.4

क्षेत्र	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाप विचलन SD	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	निर्वचन
राजकीय विद्यालयों के पुरूष शिक्षक	30	320.93	3.80	1.93	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है, अतः परिकल्पना स्वीकृत है।
गैर राजकीय विद्यालयों के पुरूष शिक्षक	30	323.33	2.95			

$df=N_1+N_2-2=15+15-2=28$

सार्थकता स्तर .05 पर मूल्य 2.00

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

राजकीय विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता का मध्यमान 320.93 व प्रमाप विचलन 3.80 है। गैर राजकीय विद्यालया के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता का मध्यमान 323.33 तथा इसका प्रमाप विचलन 2.95 है। दोनों के मध्यमानों के अन्तर का क्रांतिक अनुपात 1.93 प्राप्त हुआ है। प्राप्त कांतिक अनुपात मूल्य सार्थकता स्तर .05 के सार्थकता स्तर मूल्य 2.00 से बहुत कम है। अतः

राजकीय तथा गैर राजकीय शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण प्रभावकता पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष :—

अतः परिकल्पना 4 स्वीकृत की जाती है।

1.11.5 उद्देश्य—5

राजकीय विद्यालयों की महिला शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना 5—

राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारणी **1.5**

क्षेत्र	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाप विचलन SD	क्रांतिक अनुपात	सार्थक—ता स्तर	निर्वचन
राजकीय विद्यालयों को महिला शिक्षक	15	271.40	3.80	5.48	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है, अतः परिकल्पना अस्वीकृत है।
गैर राजकीय विद्यालयों के महिला शिक्षक	15	260.33	7.44			

$df=N_1+N_2-2=15+15-2=28$

सार्थकता स्तर .05 पर मूल्य 2.00

व्याख्या एवं विश्लेषणः—

राजकीय विद्यालयों की महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का मध्यमान 271.40 तथा प्रमाप विचलन 3.80 है तथा गैर राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का मध्यमान 260.33 तथा प्रमाप विचलन 7.44 है। दोनों मध्यमानों के अन्तर का क्रांतिक अनुपात 5.48 पाप्त हुआ है।

प्राप्त कांतिक अनुपात मूल्य सार्थकता स्तर .05 के सार्थकता स्तर मूल्य 2.00 से बहुत अधिक है। अतः राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है।

निर्ष्कषः—

अतः परिकल्पना 5 अस्वीकृत की जाती है।

1.11.6 उद्देश्य–6

राजकीय विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना 6–

राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारणी 1.6

क्षेत्र	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाप विचलन SD	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	निर्वचन
राजकीय विद्यालयों के पुरूष शिक्षक	15	258.53	7.64	5.72	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है, अतः परिकल्पना अस्वीकृत है।
गैर राजकीय विद्यालयों के पुरूष शिक्षक	15	271.40	3.80			

$df=N_1+N_2-2=15+15-2=28$

सार्थकता स्तर .05 पर मूल्य 2.00

व्याख्या एवं विश्लेषणः–

राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता का मध्यमान 258.53 व प्रमाप विचलन 7.64 है। गैर राजकीय विद्यालया के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का मध्यमान 271.40 व प्रमाप विचलन 3.80 है। दोनों के मध्यमानों के अन्तर का क्रांतिक अनुपात 5.72 है।

मूल्य सार्थकता स्तर 0.05 के सार्थकता मूल्य 2.00 से बहुत अधिक है। अतः राजकीय तथा गैर राजकीय शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण अभिवृत्ति पर प्रभाव में सार्थक अन्तर होता है।

निष्कर्षः–

अतः परिकल्पना 6 अस्वीकृत की जाती है।

1.12 शोध निष्कर्ष :–

1. राजकोय व गैर राजकीय विद्यालयों में अतिरिक्त कार्यभार का शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः राजकीय व गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षक की कार्य कुशलता पर अतिरिक्त कार्यभार का अधिक प्रभाव नहीं होता।
2. राजकीय व गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों में अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है। गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों में अपने वेतन व शैक्षिक व्यवसाय के प्रति असंतुष्टि व अस्थिरता की भावना रहती है। इस पर अतिरिक्त कार्यभार उनकी शिक्षण अभिवृत्ति को और अधिक न्यून बना देता है। किन्तु फिर भी उच्च परिणाम प्रदान करने हेतु उच्च शिक्षण अभिवृत्ति के साथ कार्य करना होता है।
3. राजकीय व गैर राजकीय महिला शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर पाया गया है। परिणामों के आधार पर यह सामान्यीकरण किया है कि राजकीय विद्यालय में कार्यरत महिलाओं की नियुक्ति घर से अत्यधिक दूर दराज के स्थानों पर होने व अत्यधिक कार्यभार मिलने के कारण वे अपनी शिक्षण प्रभावकता को बनाये नहीं रख सकती है। जबकि गैर राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षिओं में कई ऐसी शिक्षिकाएँ पाई गई जिनके परिवार की आर्थिक स्थिती अच्छी नहीं है वे न्यून वेतन प्राप्ति के साथ ही समस्त अतिरिक्त

कार्यभार को भी पूरा करते हुए उच्च शिक्षण प्रभावकता के साथ शिक्षण कार्य करती है।

4. राजकीय व गैर राजकीय पुरूष शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण प्रभावकता पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। प्राप्त परिणाम के आधार पर यह सामान्यीकरण किया है कि राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षक अतिरिक्त कार्यभार मिलने के बाद भी अपने शिक्षण कार्य में शिक्षण प्रभावकता को बनाये रखनें में सक्षम होते हैं क्यों कि उन्हें उच्च परिणाम देने होते है। इसी प्रकार गैर राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षक भी अपने परिवार को आधारभूत आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए अतिरिक्त कार्यभार को पूर्ण करने के साथ ही उच्च शिक्षण प्रभावकता के साथ शिक्षण कार्य करते हैं।

5. राजकीय व गैर राजकीय विद्यालय की महिला शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर पाया गया है। राजकीय विद्यालय की महिलाएँ शिक्षण कार्य के साथ–साथ मिलने वाले अतिरिक्त कार्यभार को करते हुए अपनी शिक्षण अभिवृत्ति को उच्च नहीं बनाए रख सकती है क्योंकि उन्हें अपने व्यवसाय को खोने का डर नहीं रहता है। जबकि गैर राजकीय विद्यालय को महिलाएँ विद्यालय में अपने स्थायित्व को लेकर अधिक सचेत रहतीं है और इसी कारण वे समस्त अतिरिक्त कार्यभार के दायित्व पूर्ण करने के बाद भी अपनी शिक्षण अभिवृत्ति को उच्च बनाए रखती हैं ताकि कुशलतापूर्वक शिक्षण करते हुए उच्च परिणाम दे सकें।

6. राजकीय विद्यालय के शिक्षकों को प्राप्त अतिरिक्त कार्यभार के कारण उन्हें विद्यालय में शिक्षण कार्य हेतु उचित वातावरण नहीं मिल पाता। ऐसे माहौल में उनकी शिक्षण अभिवृत्ति न्यून हो जाती है। जबकि गैर राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों को प्रदत्त अतिरिक्त कार्यभार के लिए कई बार अन्य सुविधाएँ व भत्ते दिये जाते है। तथा उस अतिरिक्त कार्यभार व अपने शिक्षण कार्य को संतुलित रूप में पूरा करने हेतु उचित वातावरण प्रदान

किया जाता है। इन परिस्थितियों में गैर राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षक को अपनी शिक्षण अभिवृत्ति को उच्च बनाए रखते हैं।

अतः स्पष्ट है कि गैर राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति से उच्च होती है। इस प्रकार राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों व गैर राजकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों के अतिरिक्त कार्यभार का उनकी शिक्षण अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर होता है।

1.13 शैक्षिक निहितार्थ :–

1. अध्यापक भावी राष्ट्र का निर्माण करते है अतः अध्यापकों को अतिरिक्त कार्यभार से मुक्त रख कर उनमें उच्च शिक्षण प्रभावकता व शिक्षण अभिवृत्ति का विकास किया जाना चाहिए।
2. अध्यापकों को अतिरिक्त कार्यभार से मुक्त किये जाने पर अध्यापक में सकारात्मक शिक्षण प्रभावकता व शिक्षण अभिवृत्ति का विकास होता है। जिसके फलस्वरूप अध्यापक विद्यालय की प्रत्येक व्यवस्था में सुधार लाकर व्यवस्था को उन्नत बना सकते हैं।
3. वर्तमान समय में अध्यापकों की शिक्षण प्रभावकता व शिक्षण अभिवृत्ति न्यून पाये जाने के कारण शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है। विद्यालय में छात्रों की उपलब्धि पर असर पड़ रहा है। अतः छात्रों को सही मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए अध्यापकों को शिक्षण कार्य हेतु उचित वातावरण प्रदान करके उनकी शिक्षण प्रभावकता व शिक्षण अभिवृत्ति में विकास किया जाना चाहिए।
4. राजकीय विद्यालय के शिक्षकों को इस हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए कि उनकी उच्च कार्यकुशलता से विद्यार्थियों की भविष्य उज्ज्वल हो सकें। अतः राजकीय विद्यालय के अध्यापकों की शिक्षण अभिवृत्ति को विकसित किया जाना चाहिए।

1.14 भावी शोध हेतु सुझाव :–

1. प्रस्तुत समस्या को व्यापक बनाया जा सकता है अर्थात् बड़े पैमाने पर यह अध्ययन किया जा सकता है।

2 अध्ययन कोटा जिले तक ही सीमित रखा गया है इसे अधिक विस्तृत क्षेत्र लेकर ओर अधिक व्यापक किया जा सकता है।

3 अग्रिम शोधकार्य में शिक्षकों को प्रदत्त अतिरिक्त कार्यभार के फलस्वरूप शिक्षकों के मूल्य, स्वधारणा, उपलब्धि, अभिप्रेरणा, समायोजन व व्यावसायिक संतुष्टि पर भी प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

4 राजस्थान व अन्य राज्य के अध्यापकों को प्रदत्त अतिरिक्त कार्यभार का शिक्षकों की शिक्षण प्रभावकता व शिक्षण अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

1.15 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

हिन्दी पुस्तकें :

1	अरोड़ा, रीता (2005)	:	''शिक्षण एवं अथिगम के मनो सामाजिक आधार'' शिक्षा प्रकाशन जयपुर
2	कपिल, एच के. (1979)	:	''अनुसंधान विधियाँ'' द्वितीय संस्करण हरप्रसाद भार्गव हाऊस, आगरा
3	ढोढियाल, एस. पाठक (1990)	:	''शैक्षिके अनुसंधान का विधिशास्त्र'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
4	पाठक, पी.डी. (2007)	:	''शिक्षा मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
5	भटनागर, आर.पी. (1973)	:	''शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व'' द्वितीय संस्करण विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
6	भटनागर, सुरेश (2009)	:	''शिक्षा मनोविज्ञान'' लायल बुक डिपो, मेरठ
7	मेहता, वी.आर. (2006)	:	''उभरते भारतीय समाज में अध्यापक एवं शिक्षा'' बी.ई. प्रथम कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

8 शर्मा, आर.एस. (2004) : ''शिक्षा अनुसंधान'', आर.लाल बुक डिपो, मेरठ

9 सुखिया, एस.पी. (1973) : ''शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व'' द्वितीय संस्करण विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

10 त्रिवेदी एवं शुक्ला (2008) : रिसर्च मैथ्डोलॉजी'' कॉलेज बुक डिपो, जयपुर

हिन्दी शोध पत्र–पत्रिकाओं :

1 भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, भारतीय इंस्टीट्यूट ऑफ रिसर्च, लखनऊ जुलाई–दिसम्बर एवं जनवरी–जून (1980 से 2011)

2 भारतीय आधुनिक शिक्षा NCERT, नई दिल्ली अंक–3, वर्ष–22 जनवरी 20

Survey :-

1. Fifth Survey of Educational Research 1988-92 Volume I, II, National Council of Educational Research & Training, New Delhi.

2. Sixth Survey of Educational Research 1993-2000 Volume I, II, National Council of Educational Research & Training, New Delhi.

Thesis:

1. काविया, शक्तिबाला (2005) ''पूर्व प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन'', लघु शोध प्रबन्ध, ज.रा.ना. राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर (राजस्थान) ।

2. More, R.T. (1988)- "A study of the relationship between Personality aptitude for teaching and effectivness of Secondary teachers". Ph.D. Education, Nagpur University.

3. Srivastava, Madhu Bala (1989) "The impact of the Teacher Education Programme of Lucknow University on Pupil - Teacher's attitude and taching efficiency. Ph.D. Edu. University of Lucknow.

4. Patil, G.G. and Deshmukh, D.V. (1993) A study of the relationship between aptitutde in teaching and teaching Efficiency of pupil teachers. Research Bulletin Maharashtra State Council of Educational Research and Training Vol. XXIII (1 & 2) 9-13 (IEA 01st July, 1996).

Website :

1. http://www.freedictionary.com
2. http://www.shodhganga.inflibnet.ac.in
3. http://www.knowledgecommission.gov.in

प्रस्तुतीकरण प्रपत्र–2

Letter of Acceptance

From: Ambika p Sharma <ap_sharma2010@yahoo.in>
Date: Fri 31 Aug, 2018, 8:36 AM
Subject: Kindly acknowledge
To: Sadhna Tyagi <tyagisadhana@gmail.com>

Dear Dr. Sadhana

The research paper sent by MS Garima Gautam, titled "A study of effectiveness in teaching among male and female teachers of Higher Secondary Schools and its relation with students' achievement." has been paper selected to be published in the current issue of Chetana, which will be published online by the end of September 2018. It is finally printed.

Yours: Prof. A.P. Sharma
Chief Editor,
Chetana, International journal of Education

A study of effectiveness in teaching among male and female teachers of Higher Secondary Schools and its relation with students' achievement.

Dr. Shrikant Bhartiya,
Associate Professor,
Jawahar Lal Nehru PGTT College,
Sakatpura, Kota (Raj.)

Garima Gautam,
Research Scholar,
Kota University,
Kota (Raj.)

1.1 Introduction :

Education plays a vital role in shaping India's future and this warrants a sincere and honest trail at the hands of those who really matter. "**The destiny of India is being shaped in her class rooms**." Has been pointed by the **Education Commission (1964-66)**. From the time when teaching started gaining recognition as a profession, experts as well as common man, began to wonder about the usefulness and effectiveness of the teacher. Good teaching results in good learning and good teaching requires good teacher who are capable and oriented to assume power and responsibilities needed to make learning meaningful. Researchers have shown that students who receive active interaction and work supervision from their teachers achieve more than those students who spend most of their time working through curriculum materials on their own.

Every teacher possesses attributes that could make him either an effective or an ineffective teacher contingent on their psychological makeup, professional preparation, student's expectations and situational demands.

1.2 Concept of Effectiveness in Teaching :

Ryans (1950), "Teaching is effective to the extent that the teacher acts in ways that are favourable to the development of basic skills, understanding, work habits, desirable attitudes, value judgments and adequate personal adjustments of the pupils."

Arthur Combs (1962),"A good teacher is a person who has learned to use himself as an effective instrument" He has defined effective teacher as " .. unique human being who has learned to use himself effectively and efficiently for carrying out his own and society's purposes".

Dickson (1980), "Teaching effectiveness is a demonstrated repertoire of competencies involved with - (1) teaching plans and materials, (2) class-room procedures, (3) inter personal skills, and (4) learner's reinforcement-involvement reflected in teacher behaviour.

Gupta and Kapoor (1990), have derived the term "Teacher effectiveness" as a repertoire of efficacy exhibited by a teacher in - (1) instructional strategies, (2) class room management, (3) personal disposition, temperament and tendencies, (4) evaluation and feed back (5) interpersonal relations, (6) initiative and enthusiasm, (7) professional values and (8) innovativeness in the everyday teaching learning situation.

The teacher occupies the most important place so far as quality is concerned. So, any effort at improving the quality of education would mainly depend upon the quality of teachers. The **Kothari Commission** (1964-66) states, "… of all the factors that influence the quality of education …, the quality, competence and character of teachers are undoubtedly the most significant". The National Policy of Education 1986, the Programme of Action 1986 and their 1992 revised versions have also echoed the same views.

The importance of the teacher is aptly stated in the **National Policy on Education for Nigeria** (1981-83) which says that" ….no education system can rise above the quality of its teachers". To a very large extent, the quality of the teacher determines the quality of teaching and learning, and the degree of achievement of educational objectives.

Effectiveness in teaching refers specifically to the perfection characteristics in a teacher for the teaching. According to **Kumar and Mutha**

(1974) an effective teacher is a unique person who is conscious of role and responsibilities of a teacher :

(1) Preference in content and knowledge,

(2) Good technique of teaching,

(3) Unbiased nature,

(4) Qualities of a counsellor, and

(5) Regard for discipline.

1.3 Rationale of the study :

The teacher occupies the most important place in the society. Improvement in the quality of education mainly depend upon the quality of teachers. The **Kothari Commission** (1964-66) stated that all the factors that influences the education are quality, competency and character of teachers are undoubtedly the most significant. The National Policy of Education 1986, the Programme of Action 1986 and their 1992 revised versions have also of same view. Therefore, the teachers effectiveness, efficiency, aptitude and attitude influences the process of teaching learning in the class room situation.

1.4 Review of Literature :

The review of the related studies regarding the Teaching effectiveness revealed that the correlates viz., intelligence, personality, factors like age, sex, marital status, educational qualifications and socio-economic status, adjustment, attitude towards teaching profession, teaching efficiency, self acceptance, scholarship, professional qualities, personal dispositions, personal attributes, teaching experience, level of aspiration, creative thinking, class room behaviour, strength of imagination, organization of teaching learning process, type of school professional training, in service training, interactional factor, classroom setting, teacher morale, social and emotional adjustment are the factors having a bearing on the effectiveness in teaching.

Howsam (1960) and **Fathu** (1962), both reviewed the research on predictor criteria and effectiveness in teaching and concluded that such researches had failed to substantiate links for such characteristics as intelligence, age, experience, socio-economic status, sex, job interest and special aptitudes.

Santhanam (1972), studied the relationship between teacher's age, regency of training, experience, sex, material status, and the subjects taught by the teacher.

Nair (1974), aimed at finding out the impact of certain sociological factors like family background, caste, religion and sex etc. on the effectiveness in teaching of teachers. The study which was conducted on secondary school teachers from the district of Trichur (Kerala) revealed that age had a positive relationship with effectiveness in teaching whereas teacher's parental socio-economic conditions had negative influence on effectiveness in teaching.

Malhotra (1976), aimed at finding out correlation between demographic (age, sex and qualification) and professional (teaching experience, professional status and the subject taught) variables and teacher classroom behaviour. He found that -

The teacher with bachelor's degree, low teaching experience, positive attitude and well adjusted were more indirect in the classroom behaviour than the teachers with master's degree, high teaching experience, and negative attitude and poorly adjusted.

Arora, K. (1978), made a differentiation between effective and ineffective teachers on the basis of six dimensions viz. professional, academic background, pupil-teacher relationship, classroom behaviours and interaction with principal and teachers. The higher a teacher scored on all the six dimensions, more effective was the teacher.

Sharma, M.L. (1978), aimed at ascertaining the relationship between teaching success and variables viz., self-concept and intelligence, experience and academic achievement.

Anand, S.P. (1983), stated that effectiveness in teaching is determined by the teacher himself, his pupil, and the curriculum. Under ‘teacher himself as a person’, Anand had considered personality component, behaviour, qualifications and job satisfaction and under ‘pupil’, he considered student’s respect and reverence for teachers, likings for the school and studies which all he felt stimulated the teachers to do their best. Effectiveness in teaching according to him was determined in terms of how much the teacher was involved in the curriculum making process and how satisfying were the job conditions for him.

P.N. Dave (1985), reviewed the Indian Studies on effectiveness in teaching, based on analysis of 167 studies of which 56 were at doctoral level and the rest were dissertations.

The summary of the finding were as follows:

(1) Male teachers seem to be more successful with science achievement while females are more successful with subjects like English and French as foreign language.

(2) Teacher credentials and certification are clearly related to effectiveness in teaching.

A number of studies have focused on various aspects of the teaching profession (**R.F.Lusch and M.O’Brien, J.J., Shesta k,** 1998) identifying the functions of a teacher (**P.Munoz,M. R. Carmen, E. Pacheco, R.Fernandez and Baltasar**,2000) and focused on the effective ways of teaching (**F.Analoul**, 1995). Effectiveness of secondary school teachers may be determined by several factors. Among these factors, gender is of interest to the general populace especially now that females are gradually taking over and dominating the teaching profession at secondary levels of education. Teachers need to have a complex set of skills, insight, intelligence, knowledge, management, competence, dynamism, and diligence, to meet the challenges of the classroom. While both men and women teachers appear to possess these traits yet they meet the challenges differently. Relationship between gender and teaching has been one of the most interesting

aspects for research in the recent past. Male and female teachers may behave differently in the classroom (**Thomas F.Nelson Laird**, 2013), and students may react differently to their teachers' behaviour (**Whitworth, J.E., B.A. Price, and C.H. Randall**, 2002).

It is quite possible that what appear to be gender differences might, instead, be different teaching styles. Gendered influence of teachers might be related to differences in teaching styles. Females teachers were reported to be more supportive, expressive (**Nasser Rashid, Sahar Naderi**, 2012), spend significantly greater proportion of time encouraging and allowing student participation (**A. Statham, L.Richardson, and J.A. Cook**, 1991) involve students in peer collaboration (**Y.M.Chen**,2000), believed in flexible teaching methods (**C.H. Lacey, A.Saleh, and R.Gorman**,1998), asked more referential questions, gave more compliments and used less directive forms (**Nasser Rashidi, Sahar Naderi,** 2012) shared authority and maintained control in the classroom in a way that keeps their relationships with students intact (**A.Statham, L.Richardson, and J.A. Cook**, 1991). Male teachers tended to be dominating and exercised greater control (**Tracy Darrin Wood**, 2012), emphasized more to the group work and structured activities, asked more display questions that made the exchanges between teacher and students shorter (**M.Chavez**,2000), used their authority at the cost of involvement by students with an authoritarian and task oriented teaching style (**A.Chudgar and V.Sankar**,2008).

Researchers also found the male teachers typically lecture for each class while female faculty member are more likely to engage students with active and collaborative learning approaches, which are classified as learner-centered instructional practices (**G.H. Starbuck**,2003). This may be due to the fact that there are fundamental differences between men's and women's ways of communicating, where man's would focuses on competition, status. and independence, a woman's focuses on intimacy consensus, and interdependence.

The teaching effectiveness has been defined as having good academic and professional knowledge with a clear concept of the subject matter, good preparation of the lesson with clear objectives, organized and systematic presentation of the concepts with proper learning materials, ability to communicate his/her knowledge to the students successfully, classroom management, positive attitude towards students and colleagues, result feedback accountability and ability to understand and motivate students.

1.5 Objectives:

1. To study the effectiveness in teaching of teachers of urban and rural higher secondary schools.
2. To study effectiveness in teaching of male and female teachers of higher secondary schools.
3. To study the correlationship between effectiveness in teaching and student's achievement.

1.6 Hypothesis:

1. To find out the significance of difference between mean scores of effectiveness in teaching of teachers of urban and rural higher secondary schools.
2. To find out the significance of difference between mean scores of effectiveness in teaching of male and female teachers higher secondary schools.
3. To find out the correlation between effectiveness in teaching and student's achievement.

1.7 Methodology :

Survey method was used to study the effectiveness in teaching of the higher secondary school teacher's.

1.8 Sample :

The sample of 100 teachers was drawn randomly from 20 urban and rural higher secondary schools 50 male teachers and 50 female teachers were selected for the study and 100 students of urban and rural higher secondary schools were selected randomly for their achievement.

1.9 Sampling :

The simple random sampling technique was used for selecting teachers and students of urban and rural higher secondary schools.

1.10 Tool Used:

The investigator used Teaching Effectiveness Scale developed by **Dr. Kumar Pramod and Dr. D.N. Mutha D.N.**(1976).

Characteristic Features of the Teaching Effectiveness Scale:-

The teaching effectiveness scale consists of 69 items each to be rated on a five point scale. The items of teaching effectiveness scale belonged to the following nine teaching behaviour categories:

1. Information source,
2. Motivator,
3. Advisor and Guide,
4. Relationship with pupils, fellow teachers, and parents,
5. Teaching skills,
6. Co-curricular activities,
7. Professional knowledge,
8. General appearance and habits in relation to class room,
9. Classroom management and personality characteristics.

1.11 Delimitation :

1. The study was restricted to Kota District.
2. The study was carried out in higher secondary schools affiliated to RBSE course.
3. Teacher's teaching higher secondary classes were considered.
4. **Achievement**-Students marks of annual examination were considered.

1.12 Statistical Analysis :

The date was collected personally from the one hundred teachers selected randomly from 20 higher secondary schools spread in Kota District by distributing individual copies of Teaching Effectiveness scale and asking them to respond to the statements. The responses obtained were scored, tabulated, organised and statistical techniques-mean, SD, t-test, correlation were applied.

1.12.1 Objective-1 :

To study the effectiveness in teaching of teachers of urban and rural higher secondary schools.

Hypothesis-1 :

To find out the significance of difference between mean scores of effectiveness in teaching of teachers of urban and rural higher secondary schools.

Table : 1.1

Effectiveness in teaching of teachers of urban and rural higher secondary schools.

Group	Sample N	Mean M	Standard Deviation SD	t value	Significance
Teachers of Urban school	50	322-20	14-28	2-69	Not significant
Teachers of Rural school	50	315-01	13-27		

At 0.05 level of significance t value is = 1.96

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

Anlaysis and Interpretation**:**

1. It has been found that urban school teachers are more effective than rural school teachers.
2. The reason for this could be the fact that urban teachers are better equipped with the subject knowledge and hence prove to be more effective teachers as compared to rural school teachers.

Conclusion :

There is no significant difference between mean scores of effectiveness in teaching of teachers of urban and rural higher secondary schools. hence hypothesis-1 is selected.

1.12.2 Objective-2:

To study effectiveness in teaching of male and female teachers of hgher secondary schools.

Hypothesis-2 :

To find out the significance of difference between mean scores of effectiveness in teaching of male and female teachers of higher secondary schools.

Table : 1.2

Effectiveness in teaching of male and female teachers of higher secondary schools.

Group	Sample N	Mean M	Standard Deviation SD	t value	Significance
Female teachers	50	318.60	14.25	3.07	Not significant
Male teachers	50	310.60	12.20		

At 0.05 level of significance t value is = 1.96

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

Anlaysis and Interpretation**:**

1. It has been found that female teachers are more effective than male teachers.
2. The reason for this could be the fact that male teachers are not focussed.

Conclusion :

There is no significant difference between mean scores of effectiveness in teaching of male and female teachers of higher secondary schoolshence hypothesis-2 is selected.

1.12.3 **Objective-3:**

To study the correlation between effectiveness in teaching of teachers of urban school and student's achievement.

Hypothesis-3 :

To find out the correlation between effectiveness in teaching of teachers of urban school and students achievement.

Table : 1.3

Correlation between effectiveness in teaching of teachers of urban school and students achievement.

Area	**Group**	**r-value**	**Significance**
Effectiveness in teaching	Teachers of Urban school	+0.118	Positive correlation
Students achievement	Students of Urban school		

At 0.05 level of significance r value is = 0.195

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

Conclusion :

There is a small significant positive correlation between effectiveness in teaching of urban school teachers and student's achievement.

1.12.4 **Objective-4:**

To study the correlation between effectiveness in teaching of teachers of Rural Schools and students achievement (Rural).

Hypothesis-4:

To find out the correlation between effectiveness in teaching of teachers of rural school and students achievement.

Table 1.4

Correlation between effectiveness in teaching of rural school teachers and students achievement.

Area	**Group**	**r-value**	**Significance**
Effectiveness in teaching	Teachers of Rural school	+0.035	Positive correlation
Students achievement	Students of Rural school		

At 0.05 level of significance r value is = 0.195

$df=N_1+N_2-2=50+50-2=98$

Conclusion :

There is a tiny significant positive correlations between effectiveness in teaching of Rural school teachers and student's achievement of Rural Schools.

1.12.5 **Objective-5:**

To study the correlation between effectiveness in teaching of male teachers and students achievement.

Hypothesis-5 :

To find out the correlation between effectiveness in teaching of male teachers and students achievement.

Table 1.5

Correlation between effectiveness in teaching of male teachers and students achievement.

Area	Group	r-value	Significance
Effectiveness in teaching	Male teachers	-0.195	Negative correlations
Students achievement	Students		

At 0.05 level of significance r value is = 0.195

df=N_1+N_2-2=50+50-2=98

Conclusion:

There is a significant negative correlations between effectiveness in teaching of male teachers and student's achievement.

1.12.6 **Objective-6:**

To study the correlation between effectiveness in teaching of female teachers and students achievement

Hypothesis-6 :

To find out the correlation between effectiveness in teaching of female teachers and students achievement.

Table 1.6

Correlation between effectiveness in teaching of female teachers and students achievement

Area	Group	r-value	Significance
Effectiveness in teaching	Female teachers	+0.383	Positive correlation
Students achievement	Students		

At 0.05 level of significance r value is = 0.195

$df = N_1 + N_2 - 2 = 50 + 50 - 2 = 98$

Conclusion:

There is a large significant positive correlations between effectiveness in teaching of female teachers and student's achievement.

1.13 Conclusions :

According to **Gerald Cortis (1977)**, Effective teaching is a matter of teacher finding the right "niche" i.e. the appropriate situation in which to operate. So, if there is a mismatch between the personal factors and the situation effective, happy teaching relations are unlikely to prosper.

1. It has been found that urban school teachers are more effective than rural school teachers.
2. The reason for this could be the fact that urban teachers are better equipped with the subject knowledge and hence prove to be more effective teachers as compared to rural school teachers.

3. It has been found that female teachers are more effective than male teachers

4. There is a small significant positive correlation between effectiveness in teaching of urban school teachers and student's achievement.

5. There is a significant negative correlations between effectiveness in teaching of male teachers and student's achievement.

6. There is a large significant positive correlations between effectiveness in teaching of female teachers and student's achievement.

1.14 **Implications** :

Teacher to be effective in teaching should employ following strategy in teaching learning process - (1) instructional strategies, (2) class room management, (3) temperament and tendencies, (4) evaluation and feed back (5) interpersonal relations, (6) initiative and enthusiasm, (7) professional values and (8) innovativeness in teaching learning process.

1.15 **Recommendations :**

Institutions should recruit effective teachers with following characterstics- intelligence, personality, educational qualifications, adjustment, attitude towards teaching profession, teaching efficiency, self acceptance, professional qualities, personal dispositions, personal attributes, teaching experience, level of aspiration, creative thinking, class room behaviour, strength of imagination, organization of teaching learning process, for effectiveness in teaching.

1.16 Bibliography :

- Arora, K.A. (1978): Study of characteristic differences between effective and ineffective Higher Secondary School Teachers : New Delhi: S. Chand
- Anand, S.P. (1983): Teaching effectiveness in schools: Journal of Indian Education, 3-11
- Aiken, L.R.(1991): The effect of experience on mathematics performance of students, Journal of Educational Psychology, 5(11)19.
- Akpan, A.A. (1996): Teaching effectiveness as a determinant of students' performance in mathematics: A theoretical review. Journal of research Information in Education. 1(1) 89-99.
- Avalos & Haddad (2009): A Review of the international literature and its relevance for improving education in Latin America: Journal of the American Academy on Education, 34, 251-257.
- Best J.W. & J.V. Kahn: Research in Education: New Delhi, Prentice Hall of India Pvt. Ltd.
- Brain, A.Jacob (2007): The challenges of staffing schools with effective teachers, Vol 17 No.8(2007) pp 17-23.
- Buch, M.B. (1972-1978) "Second Survey of Research in Education", Society for Educational Research and Development, Baroda
- Buch, M.B. "Third Survey of Education Research, NCERT, (1983-1988), New Delhi
- Buch, M.B. "Forth Survey of Education Research, NCERT, Vol.I, II (1988-92), New Delhi
- Darling Hammond, L.(2000): Teacher quality and student achievement: A review of state policy evidence Educational Policy Analysis Archives, 8(1) 1-44.

- Dr. B.U. Onyekum (2013): Teaching effectiveness of secondary school teachers in Emohua Local Govt. Area of River State. Vol.9 No.28. pp 112-127.
- Dave, P.N.(1985): Research on assessing teacher effectiveness in developing countries: Perspectives in Education, 1 (3), 195-204.
- Fattu, N.A.(1962): Effectiveness an elusive quality: Education Digest, 27,pp.24-60.
- Good C.V. (1959): Dictionary of Education. New York, McGraw Hill & Co.
- Gupta, Y.K. and Shamshery, K.(1982): Prediction of teaching efficiency through teachers attitudes towards professional training: Educational Review,88(3),43-45.
- Howsam, R.B. (1960): Who's a good teacher-problem and progress in teacher evaluation: California.
- Kumar, P. and Mutha, D.N. (1983): Certain psychological correlates of teacher effectiveness: Journal of Education and Psychology, 41(3), 106-111.
- Malhotra, S.P.(1976): Teacher class room behaviours in relation to presage variables of teacher attitude and adjustment and perceived behaviour by peers, principals and self. Ph.D. Education. M.S. University, Baroda.
- Nair, S.R. (1974): Impact of certain sociological factors on teaching Ability in the class Room: Government Training College, Trichur.
- Pal S.K. and Bhagoliwal, S.(1987): Personality characteristics associated with Teaching effectiveness as seen through the Rorschach Technique: Indian Educational Review 22, (3), P17-30, NCERT, New Delhi. .
- IOSR Journal of Humanities and Social Sciences (IOSR-JHSS) Vol.15 Issue 4 (Sept-Oct 2013) pp.28-31

- IOSR Journal of Research & Method in Education (IOSRJRME) Volume 2, Issue 2 (Jul-Aug,2013)pp. 07-16.
- International Journal of Teacher Educational Research (IJTER) Vol.2, No.2 Feb. 2013 pp. 65-71.
- MIER Journal of Educational Studies, Trends & Practices. May 2014, Vol 4 No.1 pp 51-65.

Website :

- http://www.freedictionary.com
- http://www.shodhganga.inflibnet.ac.in
- http://www.knowledgecommission.gov.in